कन्ज़ुल इ़रफान

मअ़ ह़ाशिया इफ़्हामुल क़ुरआन

(Hindi Lipyantar)

अज़ : शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर अबू सालेह़ मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम क़ादरी अ़त्तारी

पेशकश : ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी)

सूरतुल फ़ातिहा

सूरए फ़ातिहा मक्के में नाज़िल हुई है
इस में 7 आयतें और 1 रुकूअ़ हैं

١ سُوۡرَةُ الۡفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ ٥ — اٰیاتها: ٧ رکوعها: ١

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ	अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रेह़मत वाला है।
اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾	1:1 सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है ○
الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾	1:2 बहुत मेहरबान रेह़मत वाला ○
مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾	1:3 जज़ा के दिन का मालिक ○
اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾	1:4 हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं ① ○
اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾	1:5 हमें सीधे रास्ते पर चला ② ○
صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ	1:6 उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने एह़सान किया ○
غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ٪﴿۷﴾	1:7 ना कि उन का रास्ता जिन पर ग़ज़ब हुवा और ना बेहके हुवों का ③ ○

اَلْمَنْزِلُ الْاَوَّلُ ﴿1﴾ ع

उनवान

- अल्लाह पाक की ह़म्द और उस की सिफ़ात
- सिर्फ़ अल्लाह पाक की इबादत और उसी से ह़क़ीक़ी इस्तेआ़नत (मदद)
- सिराते़ मुस्तक़ीम पर चलने की दुआ़
- सीधा रास्ता वोही है जो नेक लोगों का हो

हा़शिया

①...ह़क़ीक़ी मददगार अल्लाह पाक ही है क्यूंकि वोह ज़ाती तौ़र पर क़ादिर, मुस्तक़िल मालिक और ग़नी ए बे नियाज़ है जबकि अल्लाह पाक के मक़्बूल बन्दे उस की अ़ता से मददगार हैं। मजी़द तफ़्सील तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, स. 49 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

②...सिराते़ मुस्तक़ीम से मुराद "अ़क़ाइद का सीधा रास्ता" है, जिस पर तमाम अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام चले या इस से मुराद "इस्लाम का सीधा रास्ता" है जिस पर सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, बुज़ुर्गाने दीन और औलिया ए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ الله चले।

③...जिन पर अल्लाह पाक का ग़ज़ब हुवा उन से मुराद यहूदी या बद अ़मल और बेहके हुवों से मुराद ईसाई या बद अ़क़ीदा लोग हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान, रेह़मत वाला है।

الٓمّٓ ۚ ①

2:1 ○ [1] الٓمّٓ

ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۛ فِيۡهِ ۛ هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ۙ ②

2:2 वोह बुलन्द रुत्बा किताब जिस में किसी शक की गुन्जाइश नहीं। इस में डरने वालों के लिए हिदायत है ○

الَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ۙ ③

2:3 वोह लोग जो बग़ैर देखे ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और हमारे दिए हुवे रिज़्क़ में से कुछ (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं [2] ○

وَالَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِمَآ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمَآ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ وَبِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ يُوۡقِنُوۡنَ ؕ ④

2:4 और वोह ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया और जो तुम से पेहले नाज़िल किया गया [3] और वोह आख़ेरत पर यक़ीन रखते हैं ○

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنۡ رَّبِّهِمۡ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ⑤

2:5 येही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और येही लोग कामयाबी ह़ासिल करने वाले हैं ○

उनवान

- क़ुरआन शको शुबा से पाक हिदायत की किताब है
- मुत्तक़ीन के अवसाफ़
- मुत्तक़ी लोगों का सिला, दुन्या में हिदायत और आख़ेरत में कामयाबी

हाशिया

①...येह हुरूफ़ अल्लाह पाक के राज़ हैं और मुतशाबेहात में से हैं, इन की मुराद अल्लाह पाक और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم जानते हैं और हम इन के ह़क़ होने पर ईमान लाते हैं।

②...इस से मालूम हुवा कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने में ऐसा नहीं होना चाहिए कि इतना ज़ियादा माल ख़र्च कर दिया जाए कि ख़र्च करने के बाद आदमी पछताए और ना ही ख़र्च करने में कन्जूसी से काम लिया जाए बल्कि इस में एतेदाल होना चाहिए।

③...अल्लाह पाक की नाज़िल कर्दा किताबों पर ईमान लाने और क़ुरआने मजीद से पेहली किताबों के अह़काम पर अ़मल करने की तफ़्सील तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़ह़ा 68 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٦

2:6 बेशक वोह लोग जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है इन के लिए बराबर है कि आप इन्हें डराएं या ना डराएं, येह ईमान नहीं लाएंगे ○

خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝٧ ع

2:7 अल्लाह ने इन के दिलों पर और इन के कानों पर मोहर लगा दी है और इन की आंखों पर पर्दा पड़ा हुवा है ① और इन के लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है ○

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝٨ وقف لازم

2:8 और कुछ लोग केहते हैं कि हम अल्लाह पर और आख़ेरत के दिन पर ईमान ले आए हैं ह़ालांकि वोह ईमान वाले नहीं हैं ○

يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝٩

2:9 येह लोग अल्लाह को और ईमान वालों को फ़रेब देना चाहते हैं ② ह़ालांकि येह सिर्फ़ अपने आप को फ़रेब दे रहे हैं और इन्हें शुऊ़र नहीं ○

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ ۖ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۢ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝١٠

2:10 इन के दिलों में बीमारी है ③ तो अल्लाह ने इन की बीमारी में और इज़ाफ़ा कर दिया और इन के लिए इन के झूट बोलने की वज्ह से दर्दनाक अ़ज़ाब है ○

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ ۙ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝١١

2:11 और जब इन से कहा जाए कि ज़मीन में फ़साद ना करो तो केहते हैं : हम तो सिर्फ़ इस्लाह़ करने वाले हैं ○

उ़नवान

- कुछ ख़ास काफ़िरों का ह़ाल और उन का अन्जाम
- ईमान लाने में मुनाफ़िक़ों का ह़ाल और उन का अन्जाम
- मुनाफ़िक़ों का इस्लाह़ के नाम पर फ़साद

ह़ाशिया

①...काफ़िरों के दिलों और कानों पर मोहर लगना और आंखों पर पर्दा पड़ जाना उन के कुफ़्रो इ़नाद, सरकशी और अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की अ़दावत के अन्जाम के तौ़र पर था वरना उन पर हिदायत की राहें शुरूअ़ से बन्द ना थीं।

②...अल्लाह पाक इस से पाक है कि कोई उसे धोका दे सके, यहां अल्लाह पाक को फ़रेब देने से मुराद उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को धोका देने की कोशिश करना है।

③...यहां क़ल्बी मरज़ से मुराद मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़ेक़त और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से बुग़्ज़ की बीमारी है। मालूम हुवा कि बद अ़क़ीदगी रूह़ानी ज़िन्दगी के लिए तबाह कुन है नीज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान से जलने वाला दिल का बीमार है।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾

2:12 सुन लो ! बेशक येही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं ① मगर इन्हें (इस का) शुऊ़र नहीं ○

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

2:13 और जब इन से कहा जाए कि तुम उसी त़रह़ ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए ② तो केहते हैं : क्या हम बे वुक़ूफ़ों की त़रह़ ईमान लाएं ? सुन लो ! बेशक येही लोग बे वुक़ूफ़ हैं ③ मगर येह जानते नहीं ○

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾

2:14 और जब येह ईमान वालों से मिलते हैं तो केहते हैं : हम ईमान ला चुके हैं और जब अपने शैत़ानों के पास तन्हाई में जाते हैं तो केहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ हंसी मज़ाक़ करते हैं ○

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

2:15 अल्लाह इन की हंसी मज़ाक़ का इन्हें बदला देगा ④ और (अभी) वोह इन्हें मोहलत दे रहा है कि येह अपनी सरकशी में भटकते रहें ○

उ़नवान

- सह़ाबा पर एतेराज़ और इस का जवाब
- मुनाफ़िक़ों का दोग़ला पन और मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाना
- मुनाफ़िक़ों की सज़ा

ह़ाशिया

①...मुनाफ़िक़ों के त़र्ज़े अ़मल से वाज़ेह़ हुवा कि आ़म फ़सादियों से बड़े फ़सादी वोह हैं जो फ़साद फैलाएं और इसे इस्लाह़ का नाम दें। हमारे मुआ़शरे में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो इस्लाह़ के नाम पर फ़साद फैलाते और बदतरीन कामों को अच्छे नामों से ताबीर करते हैं।

②...इस आयत में बुज़ुर्गाने दीन की त़रह़ ईमान लाने के ह़ुक्म से मालूम हुवा कि उन की पैरवी करने वाले नजात वाले जबकि उन के रास्ते से हटने वाले मुनाफ़िक़ीन के रास्ते पर हैं और येह भी मालूम हुवा कि उन बुज़ुर्गों पर त़ानो तशनीअ़ करने वाले बहुत पेहले से चलते आ रहे हैं।

③...मालूम हुवा कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अल्लाह पाक की बारगाह के ऐसे मक़्बूल बन्दे हैं कि उन की गुस्ताख़ी करने वालों को अल्लाह पाक ने ख़ुद जवाब दिया है।

④...अल्लाह पाक इस्तेहज़ा यानी हंसी मज़ाक़ से पाक है, अ़रबी ज़बान में बाज़ अवक़ात किसी अ़मल का बदला देने को इसी लफ़्ज़ से ताबीर कर दिया जाता है और यहां येही मुराद है कि अल्लाह पाक मुनाफ़िक़ों को उन के इस्तेहज़ा का बदला देगा।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾

2:16 येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली तो इन की तिजारत ने कोई नफ़्अ़ ना दिया और येह लोग राह जानते ही नहीं थे ○

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾

2:17 इन की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने आग रौशन की फिर जब उस आग ने उस के आस पास को रौशन कर दिया तो अल्लाह इन का नूर ले गया और इन्हें तारीकियों में छोड़ दिया, इन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा ○

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

2:18 बेहरे, गूंगे, अन्धे हैं [1] पस येह लौट कर नहीं आएंगे ○

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

2:19 या (इन की मिसाल) आस्मान से उतरने वाली बारिश की त़रह़ है जिस में तारीकियां और गरज और चमक है। येह ज़ोरदार कड़क की वज्ह से मौत के डर से अपने कानों में उंगलियां ठूंस रहे हैं ह़ालांकि अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुवे है ○

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١٣ ٢

2:20 बिजली यूं मालूम होती है कि उन की निगाहें उचक कर ले जाएगी। (ह़ालत येह कि) जब कुछ रौशनी हुई तो उस में चलने लगे और जब उन पर अंधेरा छा गया तो खड़े रेह गए और अगर अल्लाह चाहता तो उन के कान और आंखें सल्ब कर लेता। बेशक अल्लाह हर शै पर क़ादिर है [2] ○

उ़नवान

- मुनाफ़िक़ों की ह़ालत का दो मिसालों के ज़रीए़ बयान : पेहली मिसाल
- मुनाफ़िक़ों की ह़ालत की : दूसरी मिसाल

ह़ाशिया

①...मुनाफ़िक़ों को अल्लाह पाक ने हिदायत पर कुदरत बख़्शी लेकिन उन्हों ने इस से फ़ाएदा ना उठाया और जब वोह ह़क़ को सुनने, मानने, केहने और देखने से मेह़रूम हो गए तो कान, ज़बान, आंख सब बेकार हैं।

②...हर मुमकिन चीज़ शै में दाख़िल है और हर शै अल्लाह पाक की कुदरत में है और जो चीज़ मुह़ाल है उस में येह सलाह़िय्यत नहीं कि अल्लाह पाक की कुदरत के तह़त आ सके।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿٢١﴾

2:21 ऐ लोगो ! अपने रब की इबादत करो [1] जिस ने तुम्हें और तुम से पेहले लोगों को पैदा किया। येह उम्मीद करते हुवे (इबादत करो) कि तुम्हें परहेज़गारी मिल जाए ○

اَلَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

2:22 जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना और आस्मान को छत बनाया और उस ने आस्मान से पानी उतारा फिर उस पानी के ज़रीए तुम्हारे खाने के लिए कई फल पैदा किए तो तुम जान बूझ कर के शरीक ना बनाओ ○

وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

2:23 और अगर तुम्हें इस किताब के बारे में कोई शक हो जो हम ने अपने ख़ास बन्दे पर नाज़िल की है तो तुम इस जैसी एक सूरत बना लाओ और अल्लाह के इलावा अपने सब मददगारों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो [2] ○

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

2:24 फिर अगर तुम येह ना कर सको और तुम हरगिज़ ना कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं। वोह काफ़िरों के लिए [3] तैयार की गई है [4] ○

उनवान

- इबादते इलाही का हुक्म और उस के मुस्तहिक़े इबादत होने के अस्बाब
- हक़्क़ानिय्यते कुरआन पर मुन्किरों को चेलेन्ज और ग़ैब की ख़बर कि कुफ़्फ़ार इस चेलेन्ज को पूरा नहीं कर पाएंगे

हाशिया

①...इबादत उस इन्तेहाई ताज़ीम का नाम है जो बन्दा अपनी अ़ब्दियत यानी बन्दा होने और माबूद की उलूहिय्यत यानी माबूद होने के एतेक़ाद और एतेराफ़ के साथ बजा लाए। यहां इबादत तौहीद और इस के इलावा अपनी तमाम क़िस्मों को शामिल है।

②...येह चेलेन्ज क़ियामत तक तमाम इन्सानों के लिए है, आज भी कुरआन को मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्नीफ़ केहने वाले कुफ़्फ़ार तो बहुत हैं मगर कुरआन की मिस्ल एक आयत बनाने वाला आज तक कोई सामने नहीं आया और जिस ने इस का दावा किया उस का पोल ख़ुद ही चन्द दिनों में खुल गया।

③..."काफ़िरों के लिए" फ़रमाने में येह भी इशारा है कि मोमिनीन अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम से जहन्नम में हमेशा के दाख़ले से महफ़ूज़ रहेंगे क्यूंकि जहन्नम बतौरे ख़ास काफ़िरों के लिए पैदा की गई है।

④...इस से मालूम हुवा कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है क्यूंकि यहां माज़ी के अल्फ़ाज़ हैं।

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ
رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ
مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّهُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵﴾

2:25 और उन लोगों को खुश ख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए कि उन के लिए ऐसे बाग़ात हैं जिन के नीचे नेहरें बेह रही हैं। जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे : येह तो वोही रिज़्क़ है जो हमें पेहले दिया गया था हालांकि उन्हें मिलता जुलता फल (पेहले) दिया गया था और उन (जन्नतियों) के लिए उन बाग़ों में पाकीज़ा बीवियां होंगी और वोह उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे ○

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا
فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ
بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا
يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ۙ﴿۲۶﴾

وقف لازم

2:26 बेशक अल्लाह इस से ह़या नहीं फ़रमाता [1] कि मिसाल समझाने के लिए कैसी ही चीज़ का ज़िक्र फ़रमाए, मच्छर हो या इस से बढ़ कर। बहर हाल ईमान वाले तो जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है और रहे काफ़िर तो वोह केहते हैं : इस मिसाल से अल्लाह की मुराद क्या है ? अल्लाह बहुत से लोगों को इस के ज़रीए गुमराह करता है [2] और बहुत से लोगों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाता है और वोह इस के ज़रीए सिर्फ़ ना फ़रमानों ही को गुमराह करता है ○

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ
مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۲۷﴾

2:27 वोह लोग जो अल्लाह के वादे को पुख़्ता होने के बाद तोड़ डालते हैं और उस चीज़ को काटते हैं जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं तो येही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं ○

उनवान

- बा अ़मल मुसलमानों को जन्नत की बिशारत और जन्नती नेमतों का बयान
- कुरआने मजीद में बयान की गई मिसालों का मक़्सद और इन्हें सुन कर मुसलमानों और काफ़िरों के त़र्ज़े अ़मल में फ़र्क़
- फ़ासिक़ों की तीन अ़लामात : अ़ह्द शिकनी, क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी और फ़साद फैलाना

हाशिया

①...ह़या का माना है : "बदनामी और बुराई के ख़ौफ़ से दिल में किसी काम से रुकावट पैदा होना" अल्लाह पाक इस से पाक है और यहां इस से मुराद "मिसालें बयान करने को ना छोड़ना" है।

②...नुज़ूले कुरआन का अस्ल मक़्सद हिदायत देना है लेकिन बहुत से लोग इस का इन्कार कर के या मज़ाक़ उड़ा कर या ग़लत़ माना मुराद ले कर गुमराह हो जाते हैं, इस एतेबार से यहां कुरआन के ज़रीए गुमराह करने का फ़रमाया गया है।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

2:28 तुम कैसे अल्लाह के मुन्किर हो सकते हो हालांकि तुम मुर्दा थे तो उस ने तुम्हें पैदा किया ① फिर वोह तुम्हें मौत देगा फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा फिर उसी की तरफ़ तुम्हें लौटाया जाएगा ○

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤی اِلَی السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَ هُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿٢٩﴾ ع

2:29 वोही है जिस ने जो कुछ ज़मीन में है सब तुम्हारे लिए बनाया ② फिर उस ने आस्मान के बनाने का क़स्द फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वोह हर शै का खूब इल्म रखता है ○

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

2:30 और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया :③ मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : क्या तू ज़मीन में उसे नाइब बनाएगा जो उस में फ़साद फैलाएगा और ख़ून बहाएगा हालांकि हम तेरी हम्द करते हुवे तेरी तस्बीह़ करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं । फ़रमाया : बेशक मैं वोह जानता हूं जो तुम नहीं जानते ○

وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَی الْمَلٰٓىِٕكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٣١﴾

2:31 और अल्लाह पाक ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखा दिए फिर उन सब अश्या को फ़रिश्तों के सामने पेश कर के फ़रमाया : अगर तुम सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ ④○

उनवान

- कुदरते इलाही की निशानियां : इन्सान की तख़्लीक़, उसे मौत देना और ज़मीनो आस्मान की पैदाइश
- हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ का वाक़िआ़, उन्हें ख़लीफ़ा बनाना और इल्म अ़ता फ़रमाना
- हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इल्मुल अस्मा सिखाया जाना और फ़रिश्तों पर फ़ज़ीलत

हाशिया

①...इस आयत में ग़ौर करें तो हम मुसलमानों के लिए भी नसीहत है कि हम भी कुछ ना थे लेकिन अल्लाह पाक ने हमें ज़िन्दगी अ़ता की और ज़िन्दगी गुज़ारने के लवाज़िमात और नेमतों से नवाज़ा तो उस की अ़ताओं से फ़ाएदा उठा कर उस की याद से ग़ाफ़िल होना और नाशुक्री और ग़फ़्लत की ज़िन्दगी गुज़ारना किसी त़रह़ हमारे शायाने शान नहीं है।

②...इस से मालूम हुवा कि जिस चीज़ से अल्लाह पाक ने मन्अ़ नहीं फ़रमाया वोह हमारे लिए मुबाह़ व ह़लाल है।

③...फ़रिश्तों को ख़लीफ़ा बनाने की ख़बर ज़ाहिरी तौ़र पर मश्वरे के अन्दाज़ में दी गई वरना अल्लाह पाक इस से पाक है कि उसे किसी से मश्वरे की ह़ाजत हो।

④...इस आयत में अल्लाह पाक ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रिश्तों पर अफ़्ज़ल होने का सबब ''इल्म'' ज़ाहिर फ़रमाया, इस से मालूम हुवा कि इल्म ख़ल्वतों और तन्हाइयों की इबादत से अफ़्ज़ल है।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٢﴾

2:32 (फ़रिश्तों ने) अ़र्ज़ की : (ऐ अल्लाह !) तू पाक है हमें तो सिर्फ़ इतना इल्म है जितना तू ने हमें सिखा दिया,[1] बेशक तू ही इल्म वाला, हिक्मत वाला है ○

قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٣﴾

2:33 (फिर अल्लाह ने) फ़रमाया : ऐ आदम ! तुम इन्हें उन अश्या के नाम बता दो । तो जब आदम ने उन्हें उन अश्या के नाम बता दिए तो (अल्लाह ने) फ़रमाया : (ऐ फ़रिश्तो !) क्या मैं ने तुम्हें ना कहा था कि मैं आस्मानों और ज़मीन की तमाम छुपी चीज़ें जानता हूं और मैं जानता हूं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो ○

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٤﴾

2:34 और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के इलावा सब ने सज्दा किया ।[2] उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया[3] और काफ़िर हो गया ○

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

2:35 और हम ने फ़रमाया : ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और बग़ैर रोक टोक के जहां तुम्हारा जी चाहे खाओ अलबत्ता उस दरख़्त के क़रीब ना जाना वरना ह़द से बढ़ने वालों में शामिल हो जाओगे[4] ○

उ़नवान

- हुक्मे इलाही पर फ़रिश्तों का आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सज्दा करना जबकि इब्लीस का इन्कार व तकब्बुर
- ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की जन्नत में तशरीफ़ आवरी और शैत़ान का वाक़िआ़

ह़ाशिया

①...इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इ़ल्म की फ़ज़ीलत साबित होती है और येह भी कि अल्लाह पाक की त़रफ़ तालीम की निस्बत करना सह़ीह़ है अगर्चे उस को मुअ़ल्लिम ना कहा जाएगा क्यूंकि मुअ़ल्लिम पेशावर तालीम देने वाले को केहते हैं।

②...फ़रिश्तों ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को ताज़ीमी सज्दा किया था और वोह बाक़ाइ़दा पेशानी ज़मीन पर रखने की सूरत में था, सिर्फ़ सर झुकाना ना था।

③...इस वाक़िए़ से मालूम हुवा कि तकब्बुर ऐसा ख़त़रनाक अ़मल है कि येह बाज़ अवक़ात बन्दे को कुफ़्र तक पहुंचा देता है, इस लिए हर मुसलमान को चाहिए कि वोह तकब्बुर करने से बचे।

④...अल्लाह पाक मालिक है, वोह अपने मक़्बूल बन्दों को जो चाहे फ़रमाए, किसी दूसरे को येह ह़क़ ह़ासिल नहीं कि इसे बुन्याद बना कर अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के बारे में ख़िलाफ़े अदब कलिमात कहे।

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾

2:36 तो शैतान ने उन दोनों को जन्नत से लग़्ज़िश दी [1] पस उन्हें वहां से निकलवा दिया जहां वोह रेहते थे और हम ने फ़रमाया : तुम नीचे उतर जाओ । तुम एक दूसरे के दुश्मन बनोगे और तुम्हारे लिए एक ख़ास वक़्त तक ज़मीन में ठिकाना और (ज़िन्दगी गुज़ारने का) सामान है ○

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾

2:37 फिर आदम ने अपने रब से कुछ कलिमात सीख लिए तो अल्लाह ने उस की तौबा क़बूल की ।[2] बेशक वोही बहुत तौबा क़बूल करने वाला बड़ा मेहरबान है ○

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾

2:38 हम ने फ़रमाया : तुम सब जन्नत से उतर जाओ [3] फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उन्हें ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वोह ग़मगीन होंगे ○

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع

2:39 और वोह जो कुफ़्र करेंगे और मेरी आयतों को झुटलाएंगे वोह दोज़ख़ वाले होंगे, वोह हमेशा उस में रहेंगे ○

ع ٤

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ

2:40 ऐ याक़ूब की औलाद ![4] याद करो [5] मेरा वोह एहसान जो मैं ने तुम पर किया

उ़नवान

- ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का ज़मीन पर उतरना और अह़कामे इलाहिय्या
- बनी इसराईल को नेमतों की याद देहानी और चन्द अह़काम : अ़ह्द पूरा करना, ह़क़ व बातिल को ना मिलाना, नमाज़ व ज़कात की पाबन्दी वग़ैरहा

ह़ाशिया

①...तिलावते कुरआन के इ़लावा अपनी त़रफ़ से ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ ना फ़रमानी व गुनाह की निस्बत करना ह़राम बल्कि उ़लमा ए किराम की एक जमाअ़त ने तो इसे कुफ़्र बताया है।

②...जब तौबा की निस्बत अल्लाह पाक की त़रफ़ हो तो इस से मुराद "तौबा क़बूल करना" या "अल्लाह पाक का अपनी रेह़मत के साथ बन्दे पर रुजूअ़ फ़रमाना" होता है।

③...यहां जम्अ़ के सीग़े के साथ सब को उतरने का फ़रमाया, इस में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا के साथ उन की औलाद भी मुराद है जो अभी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पुश्त में थी।

④...इस आयत में नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने के यहूदियों को मुख़ातब कर के कलाम फ़रमाया गया है।

⑤...यहां याद करने से मुराद सिर्फ़ ज़बान से तज़किरा करना नहीं है बल्कि इस से मुराद येह है कि वोह अल्लाह पाक की इ़ताअ़त व बन्दगी कर के उन नेमतों का शुक्र बजा लाएं क्यूंकि किसी नेमत का शुक्र ना करना उस को भुला देने के मुतरादिफ़ है।

وَ اَوْفُوْا بِعَهْدِیْۤ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْۚ وَ اِیَّایَ فَارْهَبُوْنِ ﴿۴۰﴾

और मेरा अ़हद पूरा करो मैं तुम्हारा अ़हद पूरा करूंगा और सिर्फ़ मुझ से डरो ○

وَ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَ لَا تَكُوْنُوْۤا اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ۪ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ۫ وَّ اِیَّایَ فَاتَّقُوْنِ ﴿۴۱﴾

2:41 और ईमान लाओ उस (किताब) पर जो मैं ने उतारी है वोह तुम्हारे पास मौजूद किताब की तस्दीक़ करने वाली है और सब से पेहले उस का इन्कार करने वाले ना बनो और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत ना वुसूल करो और मुझ ही से डरो ○

وَ لَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوا الْحَقَّ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۲﴾

2:42 और ह़क़ को बात़िल के साथ ना मिलाओ और जान बूझ कर ह़क़ ना छुपाओ [1] ○

وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ ارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِیْنَ ﴿۴۳﴾

2:43 और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात अदा करो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो ○

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾

2:44 क्या तुम लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपने आप को भूलते हो ह़ालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं [2] ○

وَ اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ وَ اِنَّهَا لَكَبِیْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِیْنَ ﴿۴۵﴾ۙ

2:45 और सब्र और नमाज़ से मदद ह़ासिल करो [3] और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं ○

الَّذِیْنَ یَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ اَنَّهُمْ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۴۶﴾ع

2:46 जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उन्हें उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है ○

ع ٥

उ़नवान

- बनी इसराईल का दूसरों को नेकी का हुक्म देना और अपने आप को भुला देना
- सब्र और नमाज़ से मदद ह़ासिल करने का हुक्म

ह़ाशिया

①...इस आयत से मालूम हुवा कि हर एक को चाहिए कि वोह ह़क़ को बात़िल से ना मिलाए और ना ही ह़क़ को छुपाए क्यूंकि इस में फ़साद और नुक़्सान है और येह भी मालूम हुवा कि ह़क़ बात जानने वाले पर इसे ज़ाहिर करना वाजिब है और ह़क़ बात को छुपाना उस पर ह़राम है।

②...इस आयत का शाने नुज़ूल ख़ास होने के बा वुजूद हुक्मे आ़म है और हर नेकी का हुक्म देने वाले के लिए इस में ताज़ियानए इ़ब्रत है।

③...सब्र की वज्ह से क़ल्बी क़ुव्वत में इज़ाफ़ा और नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक से तअ़ल्लुक़ मज़बूत़ होता है और येह दोनों चीज़ें परेशानियों को बरदाश्त करने और उन्हें दूर करने में सब से बड़ी मुआ़विन (मददगार) हैं।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَ اَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

2:47 ऐ याक़ूब की औलाद ! याद करो मेरा वोह एहसान जो मैं ने तुम पर किया और येह कि मैं ने तुम्हें इस सारे ज़माने पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई [1] ○

وَ اتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّ لَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

2:48 और उस दिन से डरो जिस दिन कोई जान किसी दूसरे की त़रफ़ से बदला ना देगी और ना कोई सिफ़ारिश मानी जाएगी और ना उस से कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा और ना उन की मदद की जाएगी [2] ○

وَ اِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾

2:49 और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरऔ़नियों से नजात दी जो तुम्हें बहुत बुरा अ़ज़ाब देते थे, तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते थे और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देते और इस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से बड़ी आज़माइश थी ○

وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

2:50 और (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिए दरिया को फाड़ दिया तो हम ने तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔ़नियों को तुम्हारी आंखों के सामने ग़र्क़ कर दिया ○

وَ اِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

2:51 और याद करो जब हम ने मूसा से चालीस रातों का वादा फ़रमाया [3] फिर उस के पीछे तुम ने बछड़े की पूजा शुरूअ़ कर दी और तुम वाक़ेई ज़ालिम थे ○

उ़नवान

- यहूदियों को नेमतों की तफ़्सीली याद देहानी
- यहूदियों को फ़िक्रे आख़ेरत का हुक्म
- फ़िरऔ़न के बनी इसराईल पर मज़ालिम और अल्लाह पाक का मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के वसीले से उन्हें नजात देना
- बनी इसराईल के लिए दरिया में रास्ता बनना और फ़िरऔ़नियों का ग़र्क़ होना
- तौरात अ़ता किए जाने का वादा, बनी इसराईल की बछड़ा परस्ती और इस से तौबा व मुआ़फ़ी

ह़ाशिया

①...इस से मुराद येह है कि बनी इसराईल को उन के ज़माने में तमाम लोगों पर फ़ज़ीलत अ़ता की गई, और जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की आमद हुई तो येह फ़ज़ीलत आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मत की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गई।

②...इस से मालूम हुवा कि क़ियामत के दिन काफ़िर को ना कोई काफ़िर नफ़्अ़ पहुंचा सकेगा और ना कोई मुसलमान, उस दिन शफ़ाअ़त सिर्फ़ मुसलमान के लिए होगी।

③...फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों की हलाकत के बाद जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बनी इसराईल को ले कर मिस्र की त़रफ़ लौटे तो उन की दरख़्वास्त पर अल्लाह पाक ने तौरात अ़ता फ़रमाने का वादा फ़रमाया और इस के लिए तीस दिन और फिर दस दिन का इज़ाफ़ा कर के चालीस दिन की मुद्दत मुक़र्रर हुई।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾

2:52 फिर इस के बाद हम ने तुम्हें मुआ़फ़ी अ़ता फ़रमाई ताकि तुम शुक्र अदा करो ○

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾

2:53 और याद करो जब हम ने मूसा को किताब अ़ता की और हक़ व बातिल में फ़र्क़ करना ताकि तुम हिदायत पा जाओ ○

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾

2:54 और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम ! तुम ने बछड़े (को माबूद) बना कर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया लेहाज़ा (अब) अपने पैदा करने वाले की बारगाह में तौबा करो (यूं) कि तुम अपने लोगों को क़त्ल करो।[1] येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिए बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वोही बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है ○

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

2:55 और याद करो जब तुम ने कहा : ऐ मूसा ! हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन ना करेंगे जब तक अ़लानिया ख़ुदा को ना देख लें तो तुम्हारे देखते ही देखते तुम्हें कड़क ने पकड़ लिया [2] ○

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾

2:56 फिर तुम्हारी मौत के बाद हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया ताकि तुम शुक्र अदा करो ○

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ

2:57 और हम ने तुम्हारे ऊपर बादल को साया बना दिया और तुम्हारे ऊपर मन्न और सल्वा उतारा [3]

उ़नवान

- बनी इसराईल की हिदायत के लिए तौरात अ़ता किया जाना
- बनी इसराईल की बछड़ा परस्ती से तौबा
- बनी इसराईल का अ़लानिया दीदारे इलाही का मुत़ालबा करना और इस का नतीजा
- बनी इसराईल पर बादल का साया और मन्न व सल्वा का नुज़ूल

ह़ाशिया

①...इस आयत से मालूम हुवा कि शिर्क करने से मुसलमान मुर्तद हो जाता है और मुर्तद की सज़ा क़त्ल है क्यूंकि येह अल्लाह पाक से बग़ावत कर रहा है और जो अल्लाह पाक का बाग़ी हो उसे क़त्ल कर देना ही हिक्मत और मस्लेह़त के ऐ़न मुत़ाबिक़ है।

②...इस वाक़िए़ से शाने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام भी ज़ाहिर हुई कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से "हम आप का यक़ीन नहीं करेंगे" केहने की शामत में बनी इसराईल हलाक किए गए।

③..."मन्न" के बारे में सह़ीह़ क़ौल येह है कि येह तुरन्जबीन (एक क़िस्म की क़ुदरती शकर) की त़रह़ एक मीठी चीज़ थी और "सल्वा" के बारे में सह़ीह़ क़ौल येह है कि येह एक छोटा परिन्दा था।

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾

(कि) हमारी दी हुई पाकीज़ा चीज़ें खाओ और उन्हों ने हमारा कुछ ना बिगाड़ा बल्कि अपनी जानों पर ही ज़ुल्म करते रहे ○

وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ
رَغَدًا وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطٰيٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾

2:58 और जब हम ने उन्हें कहा कि उस शेहर में दाख़िल हो जाओ फिर उस में जहां चाहो बे रोकटोक खाओ और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल होना और केहते रेहना : हमारे गुनाह मुआफ़ हों । हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और अ़न क़रीब हम नेकी करने वालों को और ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे ○

ع ۱۳ ٦ ٦

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا
عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع

2:59 फिर उन ज़ालिमों ने जो उन से कहा गया था उसे एक दूसरी बात से बदल दिया ① तो हम ने आस्मान से उन ज़ालिमों पर अ़ज़ाब नाज़िल कर दिया क्यूंकि येह ना फ़रमानी करते रहे थे ○

وَ اِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ
فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَ لَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۶۰﴾

2:60 और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी त़लब किया ② तो हम ने फ़रमाया कि पथ्थर पर अपना अ़सा मारो, तो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बेह निकले ③ (और) हर गिरोह ने अपने पानी पीने की जगह को पेहचान लिया (और हम ने फ़रमाया कि) अल्लाह का रिज़्क़ खाओ और पियो और ज़मीन में फ़साद ना फैलाते फिरो ○

उनवान

- बनी इसराईल को मिस्र या किसी ख़ास शेहर में दाख़िल होने का हुक्म लेकिन उन का ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना और सज़ा पाना
- मैदाने तियह में बनी इसराईल का पानी त़लब करना और मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के वसीले और मोजिज़े से उन्हें पानी अ़ता किया जाना

हाशिया

①...बनी इसराईल को हुक्म येह था कि दरवाज़े में सज्दा करते और ज़बान से "حِطَّةٌ" केहते हुवे दाख़िल हों, उन्हों ने दोनों हुक्मों की मुख़ालेफ़त की और सज्दा करते हुवे दाख़िल होने की बजाए सुरीनों के बल घिसटते हुवे दाख़िल हुवे और तौबा ओ इस्तिग़फ़ार का कलिमा पढ़ने की बजाए मज़ाक़ के त़ौर पर "حَبَّةٌ فِيْ شَعْرَةٍ" केहने लगे जिस का माना था : बाल में दाना।

②...इस आयत में लोगों का अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की बारगाह में इस्तिआ़नत करने और अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के उन की मुश्किल कुशाई फ़रमाने का सुबूत भी है।

③...पथ्थर से चश्मा जारी करना हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़ज़ीम मोजिज़ा था जबकि हमारे आक़ा, हुज़ूर सैयदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी फ़रमाए और येह उस से भी बढ़ कर मोजिज़ा था।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع ٧

2:61 और जब तुम ने कहा : ऐ मूसा ! हम एक खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते ।[1] लेहाज़ा आप अपने रब से दुआ कीजिए कि हमारे लिए वोह चीज़ें निकाले जो ज़मीन उगाती है जैसे साग और ककड़ी और गन्दुम और मसूर की दाल और प्याज़ । फ़रमाया : क्या तुम बेहतर चीज़ के बदले में घटिया चीज़ें मांगते हो । (अच्छा फिर) मुल्के मिस्र या किसी शेहर में क़ियाम करो, वहां तुम्हें वोह सब कुछ मिलेगा जो तुम ने मांगा है और उन पर ज़िल्लत और ग़ुरबत मुसल्लत कर दी गई [2] और वोह ख़ुदा के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए । येह ज़िल्लत व ग़ुरबत इस वज्ह से थी कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और अम्बिया को नाहक़ शहीद करते थे। (और) येह इस वज्ह से थी कि उन्हों ने ना फ़रमानी की और वोह मुसल्सल सरकशी कर रहे थे ○

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـُٔوْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

2:62 बेशक ईमान वालों नीज़ यहूदियों और ईसाइयों और सितारों की पूजा करने वालों में से जो भी सच्चे दिल से अल्लाह पर और आख़ेरत के दिन पर ईमान ले आएं और नेक काम करें तो उन का सवाब उन के रब के पास है और उन पर ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वोह ग़मगीन होंगे ○

उनवान

- बनी इसराईल का मन्न व सल्वा की बजाए ज़मीनी अजनास का मुतालबा
- बनी इसराईल पर ज़िल्लत का मुसल्लत किया जाना और इस के अस्बाब
- बारगाहे इलाही में अज्रो सवाब का अस्ली हक़दार कौन है ?

हाशिया

①...बनी इसराईल ने साग ककड़ी वग़ैरा जो चीज़ें मांगीं उन का मुतालबा गुनाह ना था लेकिन "मन्न व सल्वा" जैसी नेमत बे मेहनत छोड़ कर उन की तरफ़ माइल होना पस्त ख़याली है। जब बड़ों से निस्बत हो तो दिलो दिमाग़ और सोच भी बड़ी बनानी चाहिए।

②...बनी इसराईल बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ होने के बाद जिन वुजूहात की बिना पर ज़िल्लत व ग़ुर्बत की गेहरी खाई में गिरे काश इन वुजूहात को सामने रखते हुवे इब्रत और नसीहत के लिए एक मरतबा मुसलमान भी अपने आमाल व अफ़्आल का जाइज़ा ले लें और अपने माज़ी व हाल का मुशाहदा करें।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

2:63 और याद करो जब हम ने तुम से अ़हद लिया और तुम्हारे सरों पर तूर पहाड़ को मुअ़ल्लक़ कर दिया (और कहा कि) मज़बूती से थामो इस (किताब) को जो हम ने तुम्हें अ़ता की है [1] और जो कुछ इस में बयान किया गया है उसे याद करो इस उम्मीद पर कि तुम परहेज़गार बन जाओ ○

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

2:64 इस के बाद फिर तुम ने रूगर्दानी इख़्तियार की तो अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रेह़मत ना होती तो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाते ○

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ

2:65 और यक़ीनन तुम्हें मालूम है वोह लोग जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन में सरकशी की। तो हम ने उन से कहा कि धुत्कारे हुवे बन्दर बन जाओ ○

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾

2:66 तो हम ने येह वाक़िआ़ उस वक़्त के लोगों और उन के बाद वालों के लिए इ़ब्रत और परहेज़गारों के लिए नसीह़त बना दिया [2] ○

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ

2:67 और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़ब्ह करो तो उन्हों ने कहा कि क्या आप हमारे साथ मज़ाक़ करते हैं ? मूसा ने फ़रमाया : मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि

उ़नवान

- तौरात के अह़काम क़बूल ना करने की वज्ह से बनी इसराईल पर सख़्ती और उन का तर्ज़े अ़मल
- बनी इसराईल का मुमानेअ़त के बा वुजूद ह़ीले से हफ़्ते के दिन मछलियां पकड़ना और इस पर उन्हें निशाने इ़ब्रत बना दिया जाना
- एक मक़्तूल के मुआ़मले में बनी इसराईल को गाय ज़ब्ह करने का हुक्म और उन की बेजा बह़स

ह़ाशिया

①...इस में सूरतन अ़ह्द पूरा करने पर मजबूर करना पाया जा रहा है, इस ह़वाले से याद रहे कि दीन क़बूल करने पर जब्र नहीं किया जा सकता अलबत्ता दीन क़बूल करने के बाद इस के अह़काम पर अ़मल करने पर मजबूर किया जाएगा। इस की मिसाल यूं समझें कि किसी को अपने मुल्क में आने पर हुकूमत मजबूर नहीं करती लेकिन जब कोई मुल्क में आ जाए तो हुकूमत उसे क़ानून पर अ़मल करने पर ज़रूर मजबूर करेगी।

②...इस से मालूम हुवा कि क़ुरआने पाक में अ़ज़ाब के वाक़ेआ़त हमारी इ़ब्रत व नसीह़त के लिए बयान किए गए हैं लेहाज़ा क़ुरआने पाक के हुक़ूक़ में से है कि इस त़रह़ के वाक़ेआ़त व आयात पढ़ कर अपनी इस्लाह़ की त़रफ़ भी तवज्जोह की जाए।

أَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾

मैं जाहिलों में से हो जाऊं [1] ○

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾

2:68 उन्हों ने कहा कि आप अपने रब से दुआ कीजिए कि वोह हमें बता दे कि वोह गाय कैसी है ? फ़रमाया : अल्लाह फ़रमाता है कि वोह एक ऐसी गाय है जो ना तो बूढ़ी है और ना बिल्कुल कम उम्र बल्कि इन दोनों के दरमियान दरमियान हो। तो वोह करो जिस का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है [2] ○

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

2:69 उन्हों ने कहा : आप अपने रब से दुआ कीजिए कि वोह हमें बता दे, उस गाय का रंग क्या है ? फ़रमाया कि अल्लाह फ़रमाता है कि वोह पीले रंग की गाय है जिस का रंग बहुत गेहरा है। वोह गाय देखने वालों को ख़ुशी देती है ○

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

2:70 उन्हों ने कहा : आप अपने रब से दुआ कीजिए कि हमारे लिए वाज़ेह तौर पर बयान कर दे कि वोह गाय कैसी है ? क्यूंकि बेशक गाय हम पर मुश्तबेह हो गई है और अगर अल्लाह चाहेगा तो यक़ीनन हम राह पा लेंगे ○

قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ ع ٨

2:71 (मूसा ने) फ़रमाया : अल्लाह फ़रमाता है कि वोह एक ऐसी गाय है जिस से येह ख़िदमत नहीं ली जाती कि वोह ज़मीन में हल चलाए और ना वोह खेती को पानी देती है। बिल्कुल बे ऐब है, उस में कोई दाग़ नहीं। [3] (येह सुन कर) उन्हों ने कहा : अब आप बिल्कुल सहीह बात लाए हैं। फिर उन्हों ने उस गाय को ज़ब्ह किया हालांकि वोह ज़ब्ह करते मालूम ना होते थे ○

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ ج

2:72 और याद करो जब तुम ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया फिर उस का इल्ज़ाम किसी दूसरे पर डालने लगे हालांकि अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था उस को जिसे तुम छुपा रहे थे ○

हाशिया

①...पैग़म्बर झूट, दिल्लगी और किसी का मज़ाक़ उड़ाना वग़ैरा ऐबों से पाक हैं अलबत्ता ख़ुश तबई एक मेहमूद सिफ़त है येह उन में पाई जा सकती है।

②...नबी के फ़रमान पर बग़ैर हिचकिचाहट अमल करना चाहिए और अमल करने की बजाए अक़्ली ढकोसले बनाना बे अदबों का काम है।

③...इस से मालूम हुवा कि शरई अहकामात से मुतअल्लिक़ बेजा बहस मशक़्क़त का सबब है।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾

2:73 तो हम ने फ़रमाया (कि) उस मक़्तूल को इस गाय का एक टुकड़ा मारो। इसी त़रह़ अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। और वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझ जाओ ○

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَ اِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَ مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾

2:74 फिर इस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए [1] तो वोह पथ्थरों की त़रह़ हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा सख़्त हैं और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बेह निकलती हैं और कुछ वोह हैं कि जब फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं और अल्लाह तुम्हारे आमाल से हरगिज़ बे ख़बर नहीं ○

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَ قَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

2:75 तो ऐ मुसलमानो ! क्या तुम येह उम्मीद रखते हो कि येह तुम्हारी वज्ह से ईमान ले आएंगे ह़ालांकि इन में एक गिरोह वोह था कि वोह अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसे समझ लेने के बाद जान बूझ कर बदल देते थे [2] ○

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَ اِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ

2:76 और जब येह मुसलमानों से मिलते हैं तो केहते हैं कि हम ईमान ला चुके हैं और जब आपस में अकेले होते हैं तो केहते हैं : क्या इन के सामने वोह इल्म बयान करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर खोला है ?

उ़नवान

- मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ुदरते इलाही की एक दलील
- यहूदियों की सख़्त दिली का ह़ाल
- यहूदियों का ह़क़ छुपाने का अन्दाज़
- यहूदियों की मुनाफ़ेक़त

ह़ाशिया

①...इस से मालूम हुवा कि दिल की सख़्ती बहुत ख़त़रनाक है।

②...इस से मालूम हुवा कि आ़लिम का बिगड़ना अ़वाम के बिगड़ने से ज़ियादा तबाह कुन है क्यूंकि अ़वाम उ़लमा को अपना हादी और रेहनुमा समझते हैं, वोह उ़लमा के अक़्वाल पर अ़मल करते और उन के अफ़्आ़ल को दलील बनाते हैं और जब उ़लमा ही के अ़क़ाइदो आमाल में बिगाड़ पैदा हो जाए तो अ़वाम राहे हिदायत पर किस त़रह़ चल सकती है !

بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

ताकि इस के ज़रीए येह तुम्हारे रब की बारगाह में तुम्हारे ऊपर हुज्जत क़ाइम करें। क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं ?[1] ○

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

2:77 क्या येह इतनी बात नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं ○

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾

2:78 और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना या कुछ अपनी मन घड़त और येह सिर्फ़ ख़याल व गुमान में पड़े हुवे हैं ○

النصف

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾

2:79 तो बरबादी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं फिर केहते हैं : येह ख़ुदा की त़रफ़ से है कि इस के बदले में थोड़ी सी क़ीमत ह़ासिल कर लें तो उन लोगों के लिए उन के हाथों के लिखे हुवे की वज्ह से हलाकत है और उन के लिए उन की कमाई की वज्ह से तबाही ओ बरबादी है ○

وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗۤ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾

2:80 और बोले : हमें तो आग हरगिज़ ना छूएगी मगर गिनती के चन्द दिन। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो : क्या तुम ने ख़ुदा से कोई वादा लिया हुवा है ? (अगर ऐसा है, फिर) तो अल्लाह हरगिज़ वादा ख़िलाफ़ी नहीं करेगा बल्कि तुम अल्लाह पर वोह बात केह रहे हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं ○

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ

2:81 क्यूं नहीं, जिस ने गुनाह कमाया[2] और उस की

उ़नवान

- यहूदियों को तम्बीह कि अल्लाह पाक ज़ाहिरो बात़िन सब जानता है
- यहूदियों के एक अनपढ़ गिरोह का ह़ाल
- यहूदी उ़लमा की तेह़रीफ़ात और इन पर वईद
- अ़ज़ाबे जहन्नम से मुतअ़ल्लिक़ यहूदियों का मन घड़त नज़रिया
- जज़ा ओ सज़ा का ख़ुदाई क़ानून

ह़ाशिया

①...इस से मालूम हुवा कि ह़क़ पोशी और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ को छुपाना और उन के कमालात का इन्कार करना यहूदियों का त़रीक़ा है।

②...इस आयत में गुनाह से शिर्क व कुफ़्र मुराद है।

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

ख़ता ने उस का घेराव कर लिया[1] तो वोही लोग जहन्नमी हैं, वोह हमेशा उस में रहेंगे ○

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع

2:82 और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए वोह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा उस में रेहना ○

ع ١ ٩

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

2:83 और याद करो जब हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत ना करो और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ (अच्छा सुलूक करो) और लोगों से अच्छी बात कहो[2] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो (लेकिन) फिर तुम में से चन्द आदमियों के इलावा सब फिर गए और तुम (वैसे ही अल्लाह के अह़काम से) मुंह मोड़ने वाले हो[3] ○

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾

2:84 और याद करो जब हम ने तुम से अ़ह्द लिया कि आपस में किसी का ख़ून ना बहाना और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से ना निकालना फिर तुम ने इक़रार भी कर लिया और तुम (ख़ुद इस के) गवाह हो ○

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ

2:85 फिर येह तुम ही हो जो अपने लोगों को क़त्ल (भी) करने लगे और अपने में से एक गिरोह को उन के वत़न से

उ़नवान

- बनी इसराईल को अ़ह्द व मीसाक़ में दिए गए अह़काम
- बनी इसराईल की इन अह़काम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की तफ़्सील

हाशिया

①...इह़ाता करने से येह मुराद है कि नजात की तमाम राहें बन्द हो जाएं और कुफ़्रो शिर्क ही पर इस को मौत आए।

②...अच्छी बात से मुराद नेकी की दावत देना और बुराइयों से रोकना है। नेकी की दावत में इस के तमाम त़रीक़े दाख़िल हैं। जैसे बयान करना, दर्स देना, वाज़ो नसीह़त करना वग़ैरा।

③...इस से मालूम हुवा कि बनी इसराईल की आ़दत ही अल्लाह पाक के अह़काम से एराज़ करना और उस के अ़ह्द से फिर जाना है।

مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ؕ وَ
اِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ
اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ
بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ
الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾

(भी) निकालने लगे, तुम उन के ख़िलाफ़ गुनाह और ज़ियादती के कामों में मदद (भी) करते हो और अगर वोही क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो तुम मुआवज़ा दे कर उन्हें छुड़ा लेते हो ह़ालांकि तुम्हारे ऊपर तो उन का निकालना ही ह़राम है । तो क्या तुम अल्लाह के बाज़ अह़कामात को मानते हो और बाज़ से इन्कार करते हो ?[1] तो जो तुम में ऐसा करे उस का बदला दुन्यवी ज़िन्दगी में ज़िल्लतो रुस्वाई के सिवा और क्या है[2] और क़ियामत के दिन उन्हें शदीद तरीन अ़ज़ाब की त़रफ़ लौटाया जाएगा और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बे ख़बर नहीं ○

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۖ
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾ ع ١٠

2:86 येही वोह लोग हैं जिन्हों ने आख़ेरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी ख़रीद ली तो उन से ना तो अ़ज़ाब हलका किया जाएगा और ना ही उन की मदद की जाएगी ○

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۖ وَ
اٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ
اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ
فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۖ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾

2:87 और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़त़ा की और इस के बाद पै दर पै रसूल भेजे और हम ने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां अ़त़ा फ़रमाईं और पाक रूह़ के ज़रीए़ उन की मदद की[3] तो (ऐ बनी इसराईल !) क्या (तुम्हारा येह मामूल नहीं है ? कि) जब कभी तुम्हारे पास कोई रसूल ऐसे अह़काम ले कर तशरीफ़ लाया जिन्हें तुम्हारे दिल पसन्द नहीं करते थे तो तुम तकब्बुर करते थे फिर उन (अम्बिया में से) एक गिरोह को तुम झुटलाते थे और एक गिरोह को शहीद कर देते थे ○

उ़नवान

- बनी इसराईल में अम्बिया का मुसलसल तशरीफ़ लाना और यहूदियों का उन्हें शहीद करना

ह़ाशिया

①...इस आयत से मालूम हुवा कि शरीअ़त के तमाम अह़काम पर ईमान रखना ज़रूरी है और तमाम ज़रूरी अह़काम पर अ़मल करना भी ज़रूरी है। कोई शख़्स किसी वक़्त भी शरीअ़त की पाबन्दी से आज़ाद नहीं हो सकता और ख़ुद को त़रीक़त का नाम ले कर या किसी भी त़रीक़े से शरीअ़त से आज़ाद केहने वाले काफ़िर हैं।

②...इस से मालूम हुवा कि किसी की त़रफ़दारी में दीन की मुख़ालेफ़त करना उख़रवी अ़ज़ाब के इ़लावा दुन्या में भी ज़िल्लतो रुस्वाई का बाइ़स होता है।

③...अल्लाह पाक ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मदद ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए़ फ़रमाई। मालूम हुवा कि अल्लाह के प्यारे मदद कर सकते हैं।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

2:88 और यहूदियों ने कहा : हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुवे हैं बल्कि अल्लाह ने उन के कुफ़्र की वज्ह से उन पर लानत कर दी है तो उन में से थोड़े लोग ही ईमान लाते हैं ○

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

2:89 और जब उन के पास अल्लाह की वोह किताब आई जो उन के पास (मौजूद) किताब की तस्दीक़ करने वाली है और इस से पेहले येह उसी नबी के वसीले से काफ़िरों के ख़िलाफ़ फ़त्ह मांगते थे तो जब उन के पास वोह जाना पेहचाना नबी तशरीफ़ ले आया तो उस के मुन्किर हो गए तो अल्लाह की लानत हो इन्कार करने वालों पर ○

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾

2:90 उन्हों ने अपनी जानों का कितना बुरा सौदा किया कि अल्लाह ने जो नाज़िल फ़रमाया है उस का इन्कार कर रहे हैं① इस ह़सद की वज्ह से② कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहता है वही नाज़िल फ़रमाता है तो येह लोग ग़ज़ब पर ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हो गए और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है ○

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ يَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ

2:91 और जब उन से कहा जाए कि उस पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है तो केहते हैं : हम उसी पर ईमान लाते हैं जो हमारे ऊपर नाज़िल किया गया और वोह तौरात के इलावा दीगर का इन्कार करते हैं ह़ालांकि (वोह क़ुरआन) भी ह़क़ है उन के पास मौजूद (किताब) की तस्दीक़ करने वाला है। ऐ मेह़बूब ! तुम फ़रमा दो कि

उ़नवान

- नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पेहले और बाद में यहूदियों का ह़ाल
- यहूदियों का ह़सद की वज्ह से इस्लाम क़बूल ना करना
- यहूदियों का तौरात पर ईमान का दावा भी झूटा है

ह़ाशिया

①...इस से हर आदमी नसीह़त ह़ासिल करे कि ईमान की जगह कुफ़्र, नेकियों की जगह गुनाह, इत़ाअ़त की जगह ना फ़रमानी, रिज़ा ए इलाही की जगह अल्लाह पाक के ग़ज़ब का सौदा बहुत ख़सारे का सौदा है।

②...इस से मालूम हुवा कि मन्सब व मर्तबे की त़लब इन्सान के दिल में ह़सद पैदा होने का एक सबब है और येह भी मालूम हुवा कि ह़सद ऐसा ख़बीस मरज़ है जो इन्सान को कुफ़्र तक भी ले जा सकता है।

كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾

(ऐ यहूदियो !) अगर तुम ईमान वाले थे तो फिर पेहले तुम अल्लाह के नबियों को क्यूं शहीद करते थे ?[1] ○

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾

2:92 और बेशक तुम्हारे पास मूसा रौशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए फिर तुम ने इस के बाद बछड़े को माबूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे ○

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

2:93 और (याद करो) जब हम ने तुम से अ़हद लिया और कोहे तूर को तुम्हारे सरों पर बुलन्द कर दिया (और फ़रमाया) मज़बूती से थाम लो उस को जो हम ने तुम्हें अ़ता की है और सुनो।[2] उन्हों ने कहा : हम ने सुना और ना माना और उन के कुफ़्र की वज्ह से उन के दिलों में तो बछड़ा रचा हुवा था। ऐ मेह़बूब ! तुम फ़रमा दो : अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम्हारा ईमान तुम्हें कितना बुरा हुक्म देता है ○

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

2:94 ऐ मेह़बूब ! तुम फ़रमा दो : अगर दूसरे लोगों को छोड़ कर आख़ेरत का घर अल्लाह के नज़्दीक ख़ालिस तुम्हारे ही लिए है तो अगर तुम सच्चे हो तो मौत की तमन्ना तो करो[3] ○

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾

2:95 और अपनी बद आमालियों की वज्ह से येह हरगिज़ कभी मौत की तमन्ना ना करेंगे और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है ○

उ़नवान

- बनी इसराईल की बछड़ा परस्ती का ज़िक्र कर के यहूदियों के ख़िलाफ़ हुज्जत (दलील) क़ाइम करना
- यहूदियों के उस दावे का रद कि जन्नत सिर्फ़ उन के लिए है

ह़ाशिया

①...हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने के बनी इसराईल ने अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को शहीद ना किया था मगर चूंकि वोह क़ातिलों की इस ह़रकत से राज़ी थे और उन को अपना बड़ा मानते थे और उन्हें अ़ज़मत से याद करते थे इस लिए उन्हें भी क़ातिलों में शामिल किया गया।

②...इस आयत से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक की किताब पर ईमान लाने का मत़लब येह है कि उस के तमाम अह़काम और सब तक़ाज़ों पर अ़मल किया जाए और इन की ख़िलाफ़ वर्ज़ी ना की जाए।

③...मौत की मह़ब्बत और अल्लाह पाक की मुलाक़ात का शौक़ मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है अलबत्ता दुन्यवी परेशानियों से तंग आ कर मौत की दुआ़ करना सब्रो रिज़ा व तस्लीम व तवक्कुल के ख़िलाफ़ है और नाजाइज़ है।

معانقة ٢

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ ع

2:96 और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुशरिकों में से एक (गिरोह) तमन्ना करता है कि काश उसे हज़ार साल की ज़िन्दगी दे दी जाए ① हालांकि इतनी उम्र का दिया जाना भी उसे अज़ाब से दूर ना कर सकेगा और अल्लाह उन के तमाम आमाल को खूब देख रहा है ○

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾

2:97 ऐ मेहबूब ! तुम फ़रमा दो : जो कोई जिब्रईल का दुश्मन हो (तो हो) पस बेशक उस ने तो तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से येह उतारा है, जो अपने से पेहले मौजूद किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला है और ईमान वालों के लिए हिदायत और बिशारत है ○

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

2:98 जो कोई अल्लाह और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों और जिब्राईल और मीकाईल का दुश्मन हो तो अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है ② ○

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾

2:99 और बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें नाज़िल कीं और इन का इन्कार सिर्फ़ ना फ़रमान ही करते हैं ○

اَوَ كُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾

2:100 और जब कभी उन्हों ने कोई अ़हद किया तो उन में से एक गिरोह ने उस अ़हद को फेंक दिया बल्कि उन में से अक्सर मानते ही नहीं ○

उनवान

- यहूदियों और मुशरिकों की ज़िन्दा रेहने की हिर्स व हवस
- यहूदियों की हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से दुश्मनी
- अल्लाह पाक के मुक़र्रब बन्दों से दुश्मनी अल्लाह पाक से दुश्मनी है
- यहूदियों का हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने का अ़हद तोड़ देना

हाशिया

①...कुफ़्फ़ार दुन्यावी ज़िन्दगी पर हरीस होते हैं और मौत से बहुत भागते हैं जबकि मोमिन की शान येह है कि वोह अगर ज़िन्दगी चाहता है तो सिर्फ़ इस लिए कि ज़ियादा नेकियां करे, आख़ेरत का तोशा जम्अ़ करे।

②...इस से मालूम हुवा कि अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और फ़रिश्तों से दुश्मनी कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का सबब है और मेहबूबाने हक़ से दुश्मनी खुदा ए पाक से दुश्मनी करना है।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۗ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

2:101 और जब उन के पास अल्लाह की त़रफ़ से एक रसूल तशरीफ़ लाया जो उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला है तो एहले किताब में से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब को पीठ पीछे यूं फेंक दिया गोया वोह कुछ जानते ही नहीं हैं [1]○

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ

2:102 और येह सुलैमान के अ़हदे हुकूमत में उस जादू के पीछे पड़ गए जो शयात़ीन पढ़ा करते थे और सुलैमान ने कुफ़्र ना किया [2] बल्कि शैत़ान काफ़िर हुवे जो लोगों को जादू सिखाते थे और (येह तो उस जादू के पीछे भी पड़ गए थे) जो बाबिल शेहर में दो फ़रिश्तों हारूत व मारूत [3] पर उतारा गया था और वोह दोनों किसी को कुछ ना सिखाते जब तक येह ना केह लेते कि हम तो सिर्फ़ (लोगों का) इम्तिहान हैं तो (ऐ लोगो !) तुम अपना ईमान ज़ाएअ़ ना करो। वोह लोग उन फ़रिश्तों से ऐसा जादू सीखते जिस के ज़रीए मर्द और उस की बीवी में जुदाई डाल दें हालांकि वोह उस के ज़रीए किसी को अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते थे [4] और येह ऐसी चीज़ सीखते थे जो इन्हें नुक़्सान दे। [5] और इन्हें नफ़्अ़ ना दे

उ़नवान

- ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर जादू की तोहमत की तरदीद, यहूदियों का जादू सीखना और हारूत व मारूत عَلَيْهِمَا السَّلَام का वाक़िआ़

ह़ाशिया

①...यहूदी तौरैत की बहुत ताज़ीम करते थे मगर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान ना लाए तो उस पर अ़मल ना किया गया यूं गोया उसे पसे पुश्त डाल दिया।

②...लोगों ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर जादू की तोहमत लगाई थी यहां इस का रद किया गया है।

③...हारूत और मारूत दो फ़रिश्ते हैं और फ़रिश्ते गुनाहों से मासूम होते हैं, इन के बारे में मश्हूर क़िस्से यहूदियों के घड़े हुवे हैं जो कि ग़लत़ और बात़िल हैं।

④...मोअस्सिरे ह़क़ीक़ी अल्लाह पाक है और अस्बाब की तासीर अल्लाह पाक की मशिय्यत यानी चाहने के तह़त है। यानी अल्लाह पाक चाहे तो ही कोई शै असर कर सकती है, अगर अल्लाह पाक ना चाहे तो आग जला ना सके, पानी प्यास ना बुझा सके और दवा शिफ़ा ना दे सके।

⑤...जब जादू में नुक़्सान की तासीर है तो क़ुरआनी आयात में ज़रूर शिफ़ा की तासीर है। यूंही जब कुफ़्फ़ार जादू से नुक़्सान पहुंचा सकते हैं तो ख़ुदा के बन्दे भी करामत के ज़रीए नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं।

عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﳝ وَلَبِئْسَ
مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

और यक़ीनन इन्हें मालूम है कि जिस ने येह सौदा लिया है आख़ेरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और इन्हों ने अपनी जानों का कितना बुरा सौदा किया है, क्या ही अच्छा होता अगर येह जानते ○

ع ١٢ ١٢

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ ع

2:103 और अगर वोह ईमान लाते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो अल्लाह के यहां का सवाब बहुत अच्छा है, अगर येह जानते ○

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا
وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾

2:104 ऐ ईमान वालो ! राइना ना कहो और यूं अर्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें ① और पेहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है ○

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ
اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ
بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۰۵﴾

2:105 (ऐ मुसलमानो !) ना तो एहले किताब के काफ़िर चाहते हैं और ना ही मुशरिक कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई उतारी जाए हालांकि अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रेहमत के साथ ख़ास फ़रमा लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है ○

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَاۤ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ
تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۶﴾

2:106 जब हम कोई आयत मन्सूख़ करते हैं ② या लोगों को भुला देते हैं तो उस से बेहतर या उस जैसी और आयत ले आते हैं । (ऐ मुख़ातब !) क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह हर शै पर क़ादिर है ○

उनवान

- ईमान और तक़्वे की फ़ज़ीलत
- नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज़ करने का बा अदब तरीक़ा
- यहूदियों की मुसलमानों से दोस्ती और ख़ैर ख़्वाही झूटी है
- शरई अह्काम मन्सूख़ होने का सुबूत

हाशिया

①...इस आयत से मालूम हुवा कि अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ताज़ीमो तौक़ीर और उन की जनाब (बारगाह) में अदब का लेहाज़ करना फ़र्ज़ है और जिस कलिमे में तर्के अदब का मामूली सा भी अन्देशा हो वोह ज़बान पर लाना ममनूअ़ है। नीज़ येह भी मालूम हुवा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बारगाह का अदब रब्बुल आलमीन ख़ुद सिखाता है और ताज़ीम के मुतअ़ल्लिक़ अह्काम को ख़ुद जारी फ़रमाता है।

②...नस्ख़ का माना है : साबेक़ा हुक्म को किसी बाद वाली दलीले शरई से उठा देना और येह हक़ीक़त में साबेक़ा हुक्म की मुद्दत की इन्तेहा का बयान होता है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿۱۰۷﴾

2:107 क्या तुझे मालूम नहीं कि आस्मानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा ना कोई हिमायती है और ना ही मददगार ① ○

اَمْ تُرِیْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىِٕلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ یَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِیْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿۱۰۸﴾

2:108 क्या तुम येह चाहते हो कि तुम अपने रसूल से वैसे ही सवाल करो जैसे इस से पेहले मूसा से किए गए और जो ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार करे तो वोह सीधे रास्ते से भटक गया ○

وَدَّ كَثِیْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ یَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِیْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَیَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى یَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۰۹﴾

2:109 एहले किताब में से बहुत से लोगों ने इस के बाद कि उन पर हक़ ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है अपने दिली हसद की वज्ह से ② येह चाहा कि काश वोह तुम्हें ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ फेर दें । तो तुम (उन्हें) छोड़ दो और (उन से) दर गुज़र करते रहो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ○

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَیْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۱۱۰﴾

2:110 और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अपनी जानों के लिए जो भलाई तुम आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां पाओगे बेशक अल्लाह तुम्हारे सब काम देख रहा है ○

وَقَالُوْا لَنْ یَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ

2:111 और एहले किताब ने कहा : हरगिज़ जन्नत में दाख़िल ना होगा मगर वोही जो यहूदी हो या ईसाई ।

उनवान

- नबी ए अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से लायानी (फ़ुज़ूल-फ़ालतू) सवालात करने पर यहूदियों को तम्बीह
- इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत जानने के बाद यहूदियों का मुसलमानों के काफ़िर व मुर्तद होने की तमन्ना करना
- नमाज़ व ज़कात और मुहासबए आमाल का हुक्म
- यहूदो नसारा की जन्नत के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुश फ़ेहमियां और जन्नती होने के बारे में क़ानूने इलाही

हाशिया

①...अल्लाह पाक के मुक़ाबले में कोई किसी की मदद नहीं कर सकता। हां, अल्लाह पाक की इजाज़त और इख़्तियार देने से मदद हो सकती है, क़ुरआनो हदीस में इस की कई मिसालें मौजूद हैं और बुज़ुर्गाने दीन का मदद करना लाखों लोगों के तजरिबात और तवातुर से साबित है।

②...इस से मालूम हुवा कि हसद बहुत बड़ा ऐब है और इस की वज्ह से इन्सान ना सिर्फ़ ख़ुद भलाई से रुक जाता है बल्कि दूसरों को भी भलाई से रोकने की कोशिश में मसरूफ़ हो जाता है।

تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۱﴾

येह उन की मन घड़त तमन्नाएं हैं। तुम फ़रमा दो : अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ ○

بَلٰى مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

2:112 हां, क्यूं नहीं ? जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया और वोह नेकी करने वाला भी हो तो उस का अज्र उस के रब के पास है [1] और उन पर ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वोह ग़मगीन होंगे ○

ع ۱۳

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَىْءٍ ۖ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَىْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

2:113 और यहूदियों ने कहा : ईसाई किसी शै पर नहीं और ईसाइयों ने कहा : यहूदी किसी शै पर नहीं हालांकि येह किताब पढ़ते हैं इसी त़रह़ जाहिलों ने उन (पेहलों) जैसी बात कही तो अल्लाह क़ियामत के दिन इन में इस बात का फ़ैसला कर देगा जिस में येह झगड़ रहे हैं ○

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِىْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ

2:114 और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को इस बात से रोके कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए [2] और उन को वीरान करने की कोशिश करे।[3] उन्हें मस्जिदों में दाख़िल होना मुनासिब ना था मगर डरते हुवे।

उ़नवान

- यहूदो नसारा की एक दूसरे के बारे में राए
- मस्जिदों में नमाज़ से रोकना और उन की वीरानी की कोशिश करना बड़ा ज़ुल्म है

हाशिया

①...जन्नत में दाख़ले का ह़क़ीक़ी मेयार ईमाने सह़ीह़ और अ़मले सालेह़ है और किसी भी ज़माने और किसी भी नस्ल व क़ौम का आदमी अगर सह़ीह़ ईमान व अ़मल रखता है तो वोह जन्नत में जाएगा। अलबत्ता येह याद रहे कि नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के एलाने नबुव्वत के बाद आप की नबुव्वत ना मानने वाले का ईमान क़त़्अ़न सह़ीह़ नहीं हो सकता और कोई भी अ़मल ईमान के बग़ैर सालेह़ नहीं हो सकता।

②...ज़िक्रुल्लाह को मन्अ़ करना हर जगह ही बुरा है लेकिन मस्जिदों में ख़ुसूसन ज़ियादा बुरा है कि वोह तो इसी काम के लिए बनाई जाती हैं।

③...मस्जिद को किसी भी त़रह़ वीरान करने वाला ज़ालिम है। इस से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सील जानने के लिए तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़ह़ा 194 पर मज़कूर कलाम मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾

उन के लिए दुन्या में रुस्वाई है और उन के लिए आख़ेरत में बड़ा अ़ज़ाब है ○

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

2:115 और मशरिक़ो मग़रिब सब अल्लाह ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर ही अल्लाह की रेहमत [1] तुम्हारी त़रफ़ मुतज्जेह है । बेशक अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है ○

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾

2:116 और मुशरिकों ने कहा : अल्लाह ने अपने लिए औलाद बना रखी है, वोह पाक ज़ात है बल्कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब उसी की मिल्कियत में है। सब उस के हुज़ूर गरदन झुकाए हुवे हैं ○

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

2:117 (वोह) बग़ैर किसी साबेक़ा मिसाल के आस्मानों और ज़मीन को नया पैदा करने वाला है [2] और जब वोह किसी काम (को वुजूद में लाने) का फ़ैसला फ़रमाता है तो उस से सिर्फ़ येह फ़रमाता है कि "हो जा" तो वोह फ़ौरन हो जाता है [3] ○

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ

2:118 और जाहिलों ने कहा : अल्लाह हम से क्यूं नहीं कलाम करता या हमारे पास कोई निशानी क्यूं नहीं आ जाती । इन से पेहले लोगों ने भी ऐसी ही बात कही थी

उ़नवान

- क़िब्ला किसी भी त़रफ़ हो, इबादत सिर्फ़ अल्लाह ही की है
- अल्लाह पाक की त़रफ़ औलाद की निस्बत का रद
- अल्लाह पाक का इरादा क़त़ई त़ौर पर नाफ़िज़ है
- यहूदियों के अल्लाह पाक से हम कलामी के मुत़ालबे का रद

ह़ाशिया

①...वज्हुल्लाह का लुग़वी तर्जमा "अल्लाह का चेहरा" है अल्लाह पाक मख़्लूक़ जैसे चेहरे से पाक है लेहाज़ा येह मुतशाबेहात में से है, इस की मुराद अल्लाह पाक ही बेहतर जानता है।

②...बदीअ़ का माना है किसी चीज़ को बग़ैर किसी साबेक़ा मिसाल के नए त़ौर पर बनाने वाला। अल्लाह पाक के आस्मानों और ज़मीन को पैदा करने से पेहले ना कोई आस्मान था और ना ज़मीन तो अल्लाह पाक नए त़ौर पर उसे अ़दम से वुजूद में लाया।

③...याद रहे कि अल्लाह पाक किसी भी काम में किसी का मोह़ताज नहीं और अल्लाह पाक का मुख़्तलिफ़ कामों के लिए फ़रिश्तों को मुक़र्रर करना ह़िक्मत है, ह़ाजत नहीं।

تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

तो इन के दिल आपस में एक जैसे हो गए।[1] बेशक हम ने यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां खोल कर बयान कर दीं ○

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۹﴾

2:119 ऐ ह़बीब ! बेशक हम ने तुम्हें ह़क़ के साथ ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर की ख़बरें देने वाला बना कर भेजा और आप से जहन्नमियों के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा ○

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾

2:120 और यहूदी और ईसाई हरगिज़ आप से राज़ी ना होंगे जब तक आप उन के दीन की पैरवी ना कर लें।[2] तुम फ़रमा दो : अल्लाह की हिदायत ही ह़क़ीक़ी हिदायत है और (ऐ मुख़ातब !) अगर तेरे पास इल्म आ जाने के बाद भी तू उन की ख़्वाहिशात की पैरवी करेगा[3] तो तुझे अल्लाह से कोई बचाने वाला ना होगा और ना कोई मददगार होगा ○

وقف لازم

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ

2:121 वोह लोग जिन्हें हम ने किताब दी है तो वोह इस की तिलावत करते हैं जैसा तिलावत करने का ह़क़ है[4]

उ़नवान

- तब्लीग़ के बा वुजूद लोगों के ईमान ना लाने पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को तसल्ली
- यहूदियों और ईसाइयों की पैरवी की सूरत में अ़ज़ाबे इलाही की वईद
- किताबुल्लाह की तिलावत कमा ह़क़्क़ुहू करने वाले

ह़ाशिया

①...कुफ़्फ़ार से मुआ़शरत, लिबास और वज़्अ़ क़त़्अ़ में भी मुशाबेहत करना मन्अ़ है कि ज़ाहिर बात़िन की अ़लामत होता है और ज़ाहिर का बात़िन पर असर होता है। लेहाज़ा कुफ़्फ़ार के त़ौर त़रीक़े से बिल्कुल दूरी इख़्तियार की जाए ताकि उन का ज़ाहिर मुसलमान के बात़िन को मुतास्सिर ना करे।

②...इस आयत से येह भी समझ आता है कि कुफ़्फ़ार ब हैसियते मजमूई मुसलमानों से कभी राज़ी नहीं हो सकते अगर्चे ज़ाहिरी त़ौर पर कभी ह़ालात मुख़्तलिफ़ हो जाएं। अफ़्सोस कि हज़ारों तजरिबात के बाद भी मुसलमान सबक़ नहीं सीखते।

③...यहां ख़ित़ाब नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से नहीं बल्कि इस आयत को सुनने वाले हर मुख़ातब से है या फिर ब ज़ाहिर ख़ित़ाब नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से है और मुराद आप की उम्मत है क्यूंकि आप एहले किताब की ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं कर सकते।

④...इस से येह भी मालूम हुवा कि किताबुल्लाह के बहुत से हुक़ूक़ भी हैं। क़ुरआन का ह़क़ येह है कि इस की ताज़ीम की जाए, इस से महब्बत की जाए, इस की तिलावत की जाए, इसे समझा जाए, इस पर ईमान रखा जाए, इस पर अ़मल किया जाए और इसे दूसरों तक पहुंचाया जाए।

أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾ ع	येही लोग इस पर ईमान रखते हैं और जो इस का इन्कार करें तो वोही नुक़्सान उठाने वाले हैं ○
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾	2:122 ऐ याक़ूब की औलाद ! मेरा एह्सान याद करो ① जो मैं ने तुम पर किया और वोह जो मैं ने इस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई ○
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔـا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾	2:123 और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी दूसरी जान की त़रफ़ से कोई बदला ना देगी और ना उस से कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा और ना काफ़िर को सिफ़ारिश नफ़्अ़ देगी और ना ही उन की मदद की जाएगी ○
وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ۭ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ۭ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۭ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾	2:124 और याद करो जब इब्राहीम को उस के रब ने चन्द बातों के ज़रीए़ आज़्माया तो उस ने उन्हें पूरा कर दिया (अल्लाह ने) फ़रमाया : मैं तुम्हें लोगों का पेश्वा बनाने वाला हूं। ② (इब्राहीम ने) अ़र्ज़ की : और मेरी औलाद में से भी। फ़रमाया : मेरा अ़ह्द ज़ालिमों को नहीं पहुंचता ○
وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ۭ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ۭ	2:125 और (याद करो) जब हम ने इस घर को लोगों के लिए मर्जअ़ और अमान बनाया और (ऐ मुसलमानो !) तुम इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम

उनवान

- यहूदियों को नेमतों की याद देहानी और उन्हें फ़िक्रे आख़ेरत का हुक्म
- ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का इम्तेह़ान, कामयाबी और सिला
- मस्जिदे ह़राम की ख़ुसूसिय्यात और इसे पाक साफ़ रखने का हुक्म

ह़ाशिया

①...अल्लाह पाक की नेमतों का चर्चा करना, ज़िक्र करना शुक्र की एक क़िस्म है। लेहाज़ा हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादते मुबारका का तज़्किरा करना या इस की मेह़फ़िल करना इसी क़िस्म में दाख़िल है।

②...इस से मालूम हुवा कि शरई अह़काम और तकालीफ़ अल्लाह पाक की त़रफ़ से आज़्माइश होती हैं और जो इन आज़्माइशों में पूरा उतरता है वोह दुन्या ओ आख़ेरत के इन्आ़मात का मुस्तह़िक़ क़रार पाता है।

وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾

बनाओ [1] और हम ने इब्राहीम व इस्माईल को ताकीद फ़रमाई कि मेरा घर त़वाफ़ करने वालों और एतेकाफ़ करने वालों और रुकूअ़ ओ सुजूद करने वालों के लिए ख़ूब पाक साफ़ रखो [2] ○

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

2:126 और याद करो जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब इस शेहर को अम्न वाला बना दे और इस में रेहने वाले जो अल्लाह और आख़ेरत के दिन पर ईमान रखते हों उन्हें मुख़्तलिफ़ फलों का रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा। [3] (अल्लाह ने) फ़रमाया : और जो काफ़िर हो तो मैं उसे भी थोड़ी सी मुद्दत के लिए नफ़्अ़ उठाने दूंगा फिर उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब की त़रफ़ मजबूर कर दूंगा और वोह पलटने की बहुत बुरी जगह है ○

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾

2:127 और जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर की बुन्यादें बुलन्द कर रहे थे [4] (येह दुआ़ करते हुवे) ऐ हमारे रब ! हम से क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही सुनने वाला जानने वाला है ○

उ़नवान

- मक्कए मुकर्रमा के लिए दुआ़ ए इब्राहीमी
- तामीरे काबा और ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام की दुआ़एं

ह़ाशिया

①...इस से मालूम हुवा कि जिस पथ्थर को नबी की क़दम बोसी ह़ासिल हो जाए वोह अ़ज़मत वाला हो जाता है। येह भी मालूम हुवा कि नबी عَلَيْهِ السَّلَام की ताज़ीम तौह़ीद के मुनाफ़ी नहीं क्यूंकि मक़ामे इब्राहीम का एह़तेराम तो ऐन नमाज़ में होता है।

②...इस से मालूम हुवा कि ख़ानए काबा और मस्जिदे ह़राम शरीफ़ को ह़ाजियों, उ़मरह करने वालों, त़वाफ़ करने वालों, एतेकाफ़ करने वालों और नमाज़ियों के लिए पाको साफ़ रखा जाए, येही हुक्म मस्जिदों को पाको साफ़ रखने का है।

③...ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ानए काबा के लिए रिज़्क़ की फ़रावानी की दुआ़ मांगी थी, इस दुआ़ की क़बूलिय्यत हर शख़्स अपनी आंखों से देख सकता है कि दुन्या भर के फल और खाने यहां ब कसरत मिलते हैं।

④...इस आयत से मालूम हुवा कि मस्जिदों की तामीर निहायत आला इ़बादत और अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत है।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

2:128 ऐ हमारे रब ! और हम दोनों को अपना फ़रमां बरदार रख और हमारी औलाद में से एक ऐसी उम्मत बना जो तेरी फ़रमां बरदार हो और हमें हमारी इबादत के तरीक़े दिखा दे ① और हम पर अपनी रेहमत के साथ रुजूअ़ फ़रमा बेशक तू ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है ○

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ ع ١٥

2:129 ऐ हमारे रब ! और इन के दरमियान इन्हीं में से एक रसूल भेज जो इन पर तेरी आयतों की तिलावत फ़रमाए और इन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए ② और इन्हें ख़ूब पाकीज़ा फ़रमा दे । बेशक तू ही ग़ालिब हिक्मत वाला है ○

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾

2:130 और इब्राहीम के दीन से वोही मुंह फेरेगा जिस ने ख़ुद को अह़मक़ बना रखा हो और बेशक हम ने उसे दुन्या में चुन लिया और बेशक वोह आख़ेरत में हमारा ख़ास क़ुर्ब पाने वालों में से है ③ ○

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾

2:131 याद करो जब उस के रब ने उसे फ़रमाया : फ़रमां बरदारी कर, तो उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने फ़रमां बरदारी की उस की जो तमाम जहानों का पालने वाला है ○

उ़नवान

- हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के मुतअ़ल्लिक़ दुआ ए इब्राहीमी
- मिल्लते इब्राहीमी और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की अ़ज़मत

ह़ाशिया

①...मालूम हुवा कि इबादत के तरीक़े सीखना ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है। इस के लिए दुआ भी करनी चाहिए और कोशिश भी।

②...इस आयत से सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की भी शान मालूम हुई कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जिन को किताब व हिक्मत सिखाई और जिन्हें पाको साफ़ किया उन के अव्वलीन मिस्दाक़ सह़ाबा ही तो थे। नीज़ येह भी मालूम हुवा कि पूरा क़ुरआन आसान नहीं वरना इस की तालीम के लिए हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ना भेजे जाते। जो कहे कि क़ुरआन समझना बहुत आसान है उसे किसी बड़े आ़लिम के पास ले जाएं, पन्दरह मिनट में ह़ाल ज़ाहिर हो जाएगा। येह भी मालूम हुवा कि क़ुरआन के साथ ह़दीस की भी ज़रूरत है।

③...मालूम हुवा कि सच्चे दीन की पेहचान येह है कि वोह सलफ़ सालेह़ीन का दीन हो, येह ह़ज़रात हिदायत की दलील हैं, अल्लाह पाक ने ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम की दलील यहां दी कि वोह मिल्लते इब्राहीमी है।

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

2:132 और इब्राहीम और याक़ूब ने अपने बेटों को इसी दीन की वसिय्यत की, कि ऐ मेरे बेटो ! बेशक अल्लाह ने येह दीन तुम्हारे लिए चुन लिया है तो तुम हरगिज़ ना मरना मगर इस ह़ाल में कि तुम मुसलमान हो ① ○

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾

2:133 (ऐ यहूदियो !) क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब याक़ूब के विसाल का वक़्त आया, जब उन्हों ने अपने बेटों से फ़रमाया : (ऐ बेटो !) मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे ? तो उन्हों ने कहा : हम आप के माबूद और आप के आबाओ अज्दाद इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ के माबूद की इबादत करेंगे जो एक माबूद है और हम उस के फ़रमां बरदार हैं ○

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾

2:134 वोह एक उम्मत है जो गुज़र चुकी है । उन के आमाल उन के लिए हैं और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं ② और तुम से उन के कामों के बारे में नहीं पूछा जाएगा ○

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۳۵﴾

2:135 और एहले किताब ने कहा : यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा जाओगे । तुम फ़रमाओ : (हरगिज़ नहीं) बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन इख़्तियार करते हैं जो हर बात़िल से जुदा थे और वोह मुशरिकों में से ना थे ③ ○

उ़नवान

- ह़ज़रते इब्राहीम और याक़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام की अपने बेटों को दीने ह़क़ पर साबित क़दमी की वसिय्यत
- ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की वसिय्यत की तफ़्सील
- क़ानूने अ़द्ल के मुत़ाबिक़ हर एक अपने आमाल की जज़ा ओ सज़ा पाएगा
- मिल्लते इब्राहीमी की पैरवी करने की ताकीद

ह़ाशिया

①...इस से मालूम हुवा कि वालिदैन को सिर्फ़ माल के मुतअ़ल्लिक़ ही वसिय्यत नहीं करनी चाहिए बल्कि औलाद को अ़क़ाइदे सह़ीह़ा, आमाले सालेह़ा, दीन की अ़ज़मत, दीन पर इस्तेक़ामत, नेकियों पर मुदावमत और गुनाहों से दूर रेहने की वसिय्यत भी करनी चाहिए।

②...इस से मालूम हुवा कि आख़ेरत में अपने आमाल काम आएंगे और अगर अ़क़ीदा ख़राब हो तो किसी को दूसरे के अ़मल से फ़ाएदा ना होगा।

③...इस से मालूम हुवा कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को रब्बे करीम ने वोह मक़्बूलिय्यते आ़म्मा बख़्शी है कि हर दीन वाला उन की निस्बत पर फ़ख़्र करता है। और येह भी मालूम हुवा कि सिर्फ़ बड़ों की औलाद होना काफ़ी नहीं जब तक बड़ों के जैसे काम ना करे।

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ
اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَ
عِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

2:136 (ऐ मुसलमानो !) तुम कहो : हम अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाए और उस पर जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और इन की औलाद की तरफ़ नाज़िल किया गया और मूसा और ईसा को दिया गया और जो बाक़ी अम्बिया को उन के रब की तरफ़ से अ़ता किया गया। हम ईमान लाने में इन में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते [1] और हम अल्लाह के हुज़ूर गरदन रखे हुवे हैं ○

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

2:137 फिर अगर वोह भी यूंही ईमान ले आएं जैसा तुम ईमान लाए हो जब तो वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह सिर्फ़ मुख़ालेफ़त में पड़े हुवे हैं। तो ऐ ह़बीब ! अ़न क़रीब अल्लाह उन की तरफ़ से तुम्हें काफ़ी होगा और वोही सुनने वाला जानने वाला है ○

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۖ وَّنَحْنُ لَهٗ
عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾

2:138 हम ने अल्लाह का रंग [2] अपने ऊपर चढ़ा लिया और अल्लाह के रंग से बेहतर किस का रंग है ? और हम उसी की इ़बादत करने वाले हैं ○

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾

2:139 तुम फ़रमाओ : क्या तुम अल्लाह के बारे में हम से झगड़ते हो ह़ालांकि वोह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी और हमारे आमाल हमारे लिए हैं और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं और हम ख़ालिस उसी के हैं ○

उ़नवान

- नबियों का दीन ही सच्चा दीन है
- सह़ाबा ए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم का ईमान मोतबर और मिसाली है
- अल्लाह पाक का दीन ही सब से बेहतर है
- नबुव्वते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के बारे में झगड़ने वाले यहूदियों को जवाब

ह़ाशिया

[1]...अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के दरजों में फ़र्क़ है जैसा कि तीसरे पारे के शुरूअ़ में है मगर उन की नबुव्वत में फ़र्क़ नहीं।

[2]...अल्लाह के रंग से मुराद उस के दीन के सच्चे अ़क़ाइद हैं।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ
الْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ
اللّٰهُ ؕ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَ مَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾

2:140 (ऐ एहले किताब !) क्या तुम येह केहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और इन की औलाद यहूदी या नसरानी थे। तुम फ़रमाओ : क्या तुम ज़ियादा जानते हो या अल्लाह ? और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस के पास अल्लाह की तरफ़ से कोई गवाही हो और वोह उसे छुपाए और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बे ख़बर नहीं ○

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَ
ع ١٦ ١٢ ١٦ لَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع

2:141 वोह एक उम्मत है जो गुज़र चुकी है। उन के आमाल उन के लिए हैं और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं और तुम से उन के कामों के बारे में नहीं पूछा जाएगा[1] ○

उनवान

- हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام की तरफ़ यहूदिय्यत और ईसाइय्यत की निस्बत का रद
- क़ानूने अद्ल के मुताबिक़ हर एक अपने आमाल की जज़ा ओ सज़ा पाएगा।

हाशिया

①...इस में उन मुसलमानों के लिए भी नसीहत है जो अपने मां बाप या पीरो मुर्शिद वग़ैरा के नेक आमाल पर भरोसा कर के खुद नेकियों से दूर और गुनाहों में मसरूफ़ हैं।

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾

2:142 अब बेवुक़ूफ़ लोग कहेंगे :[1] इन मुसलमानों को इन के उस क़िब्ले से किस ने फेर दिया जिस पर येह पेहले थे ? तुम फ़रमा दो : मशरिक़ो मग़रिब सब अल्लाह ही का है, वोह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की त़रफ़ हिदायत देता है ○

وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾

2:143 और इसी त़रह़ हम ने तुम्हें बेहतरीन उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और येह रसूल तुम्हारे निगेहबान व गवाह हों और ऐ ह़बीब ! तुम पेहले जिस क़िब्ले पर थे हम ने वोह इसी लिए मुक़र्रर किया था कि देखें[2] कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है और बेशक वोह लोग जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी थी उन के इ़लावा (लोगों) पर येह बहुत भारी थी[3] और अल्लाह की येह शान नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाएअ़ कर दे बेशक अल्लाह लोगों पर बहुत मेहरबान, रेह़ूम वाला है ○

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً

2:144 हम तुम्हारे चेहरे का आस्मान की त़रफ़ बार बार उठना देख रहे हैं तो ज़रूर हम तुम्हें उस क़िब्ले की त़रफ़ फेर देंगे

उ़नवान

- तब्दीली ए क़िब्ला पर यहूदियों के एतेराज़ की ग़ैबी ख़बर और एतेराज़ का जवाब
- उम्मते मुस्त़फ़ा का बेहतरीन उम्मत होना और क़ियामत में लोगों पर गवाह होना
- तब्दीली ए क़िब्ला की एक ह़िक्मत कि मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ ज़ाहिर करना
- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा व खुशी के लिए काबे को क़िब्ला बनाने का ह़ुक्म

ह़ाशिया

①...इस आयत में बैतुल मुक़द्दस के बाद ख़ानए काबा को क़िब्ला बनाए जाने पर एतेराज़ करने वालों को बेवुक़ूफ़ कहा गया, इस से मालूम हुवा कि जो शख़्स दीनी मसाइल की ह़िक्मतें ना समझे बल्कि इन पर बेजा एतेराज़ करे वोह अह़मक़ और बेवुक़ूफ़ है अगर्चे दुन्या के कामों में वोह कितना ही चालाक हो।

②...इ़ल्म के माना "जानना" है, लेकिन जहां आयत में मुस्तक़बिल के ह़वाले से अल्लाह पाक के लिए येह अल्फ़ाज़ हों वहां इस का माना "अल्लाह पाक का लोगों के सामने उस की जांच-परख फ़रमाना" या "उन के सामने मुमताज़ व नुमायां और फ़र्क़ ज़ाहिर कर देना" होता है।

③...इस से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक का ह़ुक्म मालूम होने के बाद क़बूल करने से दिल में तंगी मेह़सूस करना मुनाफ़ेक़त की अ़लामत (निशानी) है।

تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ
مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾

जिस में तुम्हारी ख़ुशी है [1] तो अभी अपना चेहरा मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ फेर दो और ऐ मुसलमानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसी की त़रफ़ कर लो और बेशक वोह लोग जिन्हें किताब अ़त़ा की गई है वोह ज़रूर जानते हैं कि येह तब्दीली उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है [2] और अल्लाह उन के आमाल से बे ख़बर नहीं ○

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ
بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

وقف لازم

2:145 और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी ले आओ तो भी वोह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी ना करेंगे [3] और ना तुम उन के क़िब्ले की पैरवी करो और वोह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ले के ताबेअ़ नहीं हैं और (ऐ सुनने वाले !)[4] अगर तेरे पास इ़ल्म आ जाने के बाद तू उन की ख़्वाहिशों पर चला तो उस वक़्त तू ज़रूर ज़ियादती करने वाला होगा ○

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

وقف ممنوع

2:146 वोह लोग जिन्हें हम ने किताब अ़त़ा फ़रमाई है वोह इस नबी को ऐसा पेहचानते हैं जैसे वोह अपने बेटों को पेहचानते हैं और बेशक उन में एक गिरोह जान बूझ कर ह़क़ छुपाते हैं ○

उ़नवान

- क़िब्ले की तब्दीली मानने से मुतअ़ल्लिक़ एहले किताब के एक ख़ास गिरोह का ह़ाल और एहले किताब का अपने क़िब्ले में बाहमी इख़्तेलाफ़
- नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पेहचानने में एहले किताब का ह़ाल और उन के एक गिरोह का जान बूझ कर ह़क़ छुपाना

ह़ाशिया

①...इस आयत से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक को अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा बहुत पसन्द है और अल्लाह पाक उन की रिज़ा को पूरा फ़रमाता है।

②...एहले किताब जानते थे कि क़िब्ले की येह तब्दीली अल्लाह पाक की त़रफ़ से ह़क़ है क्यूंकि उन की किताबों में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह वस्फ़ भी मज़्कूर था और उन के अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने आप की येह निशानी भी बताई थी कि आप बैतुल मुक़द्दस से काबे की त़रफ़ फिरेंगे।

③...दलाइल के बा वुजूद एहले किताब का मुसलमानों के क़िब्ले की पैरवी ना करने की वज्ह उन का ह़सद था कि बनी इसराईल से नबुव्वत मुन्तक़िल हो गई, मालूम हुवा कि ह़सद बहुत बुरी सिफ़त है कि आदमी को ह़क़ क़बूल करने से रोक देती है।

④...यहां ख़ित़ाब नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नहीं बल्कि इस आयत को सुनने वाले हर मुख़ात़ब से है या फिर बज़ाहिर ख़ित़ाब नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है और मुराद आप की उम्मत है क्यूंकि आप एहले किताब की ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं कर सकते।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

2:147 (ऐ सुनने वाले !)[1] हक़ वोही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो। पस तू हरगिज़ शक करने वालों में से ना होना ○

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾

2:148 और हर एक के लिए तवज्जोह की एक सम्त है जिस की तरफ़ वोह मुंह करता है तो तुम नेकियों में आगे निकल जाओ।[2] तुम जहां कहीं भी होगे अल्लाह तुम सब को इकठ्ठा कर लाएगा। बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है ○

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾

2:149 और (ऐ हबीब !) तुम जहां से आओ अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और बेशक येह यक़ीनन तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है और अल्लाह तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं ○

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۗ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ

2:150 और ऐ हबीब ! तुम जहां से आओ अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और ऐ मुसलमानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसी की तरफ़ करो ताकि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत ना रहे मगर जो उन में से ना इन्साफ़ी करें तो उन से ना डरो

उन्वान

- क़िब्ले की तब्दीली और अहकामे इलाही में शक करने की मुमानेअत
- तब्दीली ए क़िब्ला की दूसरी हिक्मत कि हर उम्मत के लिए क़िब्ले का तक़र्रुर है नीज़ भलाई के कामों में मुक़ाबला करने का हुक्म
- सफ़र व हज़र हर जगह नमाज़ में ख़ानए काबा की तरफ़ मुंह करने का हुक्म

हाशिया

①...यहां ख़िताब नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नहीं बल्कि इस आयत को सुनने वाले हर मुख़ातब से है या यहां भी बज़ाहिर ख़िताब नबी ए अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है लेकिन मुराद आप की उम्मत है क्यूंकि आप हुक्मे इलाही में शक नहीं कर सकते।

②...यहां आयत में येह बात समझाई गई है कि मालो दौलत, ओहदा व मन्सब, शोहरत व मक़्बूलिय्यत और दुन्यादारी ऐसी चीज़ नहीं कि इस में एक दूसरे से मुक़ाबला किया जाए क्यूंकि येह सब फ़ानी हैं, जबकि बाक़ी रेहने वाली और मुक़ाबले के क़ाबिल चीज़ें तो नेकी, इबादत और भलाई के काम हैं।

وَاخْشَوْنِيْ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾	और मुझ से डरो [1] और ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर मुकम्मल कर दूं और ताकि तुम हिदायत पाओ ○
كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۵۱﴾	2:151 जैसा कि हम ने तुम्हारे दरमियान तुम में से एक रसूल भेजा जो तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता और तुम्हें किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है और तुम्हें वोह तालीम फ़रमाता है जो तुम्हें मालूम नहीं था [2] ○
فَاذْكُرُوْنِيْۤ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾	2:152 तो तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा और मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री ना करो [3] ○
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾	2:153 ऐ ईमान वालो ! सब्र और नमाज़ से मदद मांगो, [4] बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है ○
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ	2:154 और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा ना कहो

معانقة ٣

ع ١٨ ٥ ٢

उन्वान

- नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद का मक़्सद
- अल्लाह पाक का ज़िक्र और उस की नेमतों पर शुक्र करने और नाशुक्री से बचने का हुक्म
- सब्र और नमाज़ से मदद चाहने का हुक्म और सब्र वालों की फ़ज़ीलत
- शहीद की अज़्मत कि उसे मुर्दा केहना मन्अ़ है और वोह ज़िन्दा होता है

हाशिया

①...अल्लाह पाक का ख़ौफ़ हर दूसरे ख़ौफ़ पर ग़ालिब होना चाहिए और उस की रिज़ा तलबी मख़्लूक़ की खुशनूदी पर ग़ालिब होनी चाहिए।

②...हक़ीक़त येह है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ ज़ाहिरी मज़ामीने कुरआन और अल्लाह पाक के अहकाम ही नहीं बल्कि रुश्दो हिदायत, सलाहो फ़लाह और इल्मो हिक्मत की बेशुमार बातें सिखाते हैं क्यूंकि आप अव्वलीनो आख़रीन के उ़लूम के जामेअ़ हैं।

③...जब कुफ़्र का लफ़्ज़ शुक्र के मुक़ाबले में आए तो उस का माना नाशुक्री और जब इस्लाम या ईमान के मुक़ाबिल हो तो उस का माना बे ईमानी होता है। यहां आयत में कुफ़्र से मुराद नाशुक्री है।

④...ग़ैरे खुदा से मदद तलब करना शिर्क नहीं है। इस मौज़ूअ़ की मज़ीद तफ़्सील तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़्हा 247 पर मुलाहज़ा फ़रमाएं।

بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾

बल्कि वोह ज़िन्दा हैं लेकिन तुम्हें इस का शुऊ़र नहीं [1] ○

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ۙ

2:155 और हम ज़रूर तुम्हें कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से आज़माएंगे और सब्र करने वालों को ख़ुश ख़बरी सुना दो ○

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾ؕ

2:156 वोह लोग कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं: हम अल्लाह ही के हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं ○

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿١٥٧﴾

2:157 येह वोह लोग हैं जिन पर इन के रब की तरफ़ से दुरूद हैं और रेहमत और येही लोग हिदायत याफ़्ता हैं ○

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٥٨﴾

2:158 बेशक सफ़ा और मरवह अल्लाह की निशानियों में से हैं [2] तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के चक्कर लगाए और जो कोई अपनी तरफ़ से भलाई करे तो बेशक अल्लाह नेकी का बदला देने वाला, ख़बरदार है ○

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ

2:159 बेशक वोह लोग जो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और

उ़नवान

- मुसीबतों के ज़रीए आज़माइश की जाती है और सब्र करने वालों के लिए बिशारत
- सफ़ा और मरवह पहाड़ों की अ़ज़मत और उन से मुतअ़ल्लिक़ मुसलमानों के एक शुबे का इत्मीनान बख़्श जवाब
- ह़क़ छुपाने वालों के लिए लानत की वईद और सच्ची तौबा करने वालों के लिए मुआ़फ़ी का वादा

ह़ाशिया

①...शहीद क़त्ई तौ़र पर ज़िन्दा हैं लेकिन उन की ह़यात कैसी है इस का हमें शुऊ़र नहीं, इसी लिए दुन्यवी मुआ़मलात के एतेबार से उन पर आ़म मैयत की तरह़ शरई अह़काम जारी होते हैं।

②...सफ़ा और मरवह पहाड़ को येह अ़ज़मत ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से निस्बत की बरकत से ह़ासिल हुई, इस से मालूम हुवा कि सालेह़ीन से निस्बत रखने वाली चीज़ अ़ज़मत वाली हो जाती है।

بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ
يَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ ۙ

हिदायत को छुपाते हैं [①] हालांकि हम ने इसे लोगों के लिए किताब में वाज़ेह फ़रमा दिया है तो उन पर अल्लाह लानत फ़रमाता है और लानत करने वाले उन पर लानत करते हैं ○

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ بَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ
عَلَيْهِمْ ۚ وَ اَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۰﴾

2:160 मगर वोह लोग जो तौबा करें और इस्लाह़ कर लें और (छुपी हुई बातों को) ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल फ़रमाऊंगा और मैं ही बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान हूं ○

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَ هُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةُ اللّٰهِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۶۱﴾ ۙ

2:161 बेशक वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और काफ़िर [②] ही मरे उन पर अल्लाह और फ़रिश्तों और इन्सानों की, सब की लानत है [③] ○

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ لَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ﴿۱۶۲﴾

2:162 वोह हमेशा उस में रहेंगे, उन पर से अ़ज़ाब हलका ना किया जाएगा और ना उन्हें मोहलत दी जाएगी ○

ع ١٩ ٣ وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ ع

2:163 और तुम्हारा माबूद एक माबूद है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, बड़ी रेह़मत वाला, मेहरबान है ○

उनवान

- हालते कुफ़्र में मरने वालों के लिए वईदें
- अल्लाह पाक ही अकेला माबूद है

हाशिया

①...दीनी मसाइल को छुपाना गुनाह है इस त़रह़ कि ज़रूरत के वक़्त बताए ना जाएं या इस त़रह़ कि ग़लत़ बताए जाएं बल्कि ग़लत़ बताने पर तो बहुत सख़्त वईदें हैं। फ़ी ज़माना ग़लत़ मसाइल बयान करने वालों और क़ुरआनो ह़दीस की ग़लत़ तशरीह़ात व तौज़ीह़ात करने वालों की कमी नहीं और येह सब मज़्कूरा आयत की वईद में दाख़िल हैं।

②...अ़रबी लफ़्ज़ "कुफ़्फ़ार" काफ़िर की जम्अ़ है।

③...मरते वक़्त ईमान की दौलत से मेह़रूम रेह जाना सब से बड़ी बदबख़्ती है और उस वक़्त ईमान का सलामत रेह जाना बहुत बड़ी सआ़दत है, लेहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए कि वोह अगर्चे कितना ही नेक व पारसा, इबादत गुज़ार और परहेज़गार क्यूं ना हो अपने बुरे ख़ातमे से डरता रहे।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَّتَصْرِيفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾

2:164 बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की तब्दीली में और कश्ती में जो दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और उस पानी में जो अल्लाह ने आस्मान से उतारा फिर इस के साथ मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दगी बख़्शी और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल जो आस्मान और ज़मीन के दरमियान हुक्म के पाबन्द हैं [1] इन सब में यक़ीनन अ़क़्ल मन्दों के लिए निशानियां हैं [2]○

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ أَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ۖ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّأَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

2:165 और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और माबूद बना लेते हैं उन्हें अल्लाह की त़रह़ मेह़बूब रखते हैं और ईमान वाले सब से ज़ियादा अल्लाह से मह़ब्बत करते हैं और अगर ज़ालिम देखते जब वोह अ़ज़ाब को आंखों से देखेंगे क्यूंकि तमाम कुव्वत अल्लाह ही की है और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है ○

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾

2:166 जब पेश्वा अपने पैरवी करने वालों से बेज़ार होंगे और अ़ज़ाब देखेंगे और उन के सब रिश्ते नाते कट जाएंगे [3] ○

उ़नवान

- अल्लाह पाक की क़ुदरत और रेह़मत की निशानियां नीज़ इन निशानियों में तफ़क्कुर का हुक्म
- मुशरिकीन की बात़िल माबूदों से मह़ब्बत का ह़ाल
- मोमिनों की अल्लाह पाक से मह़ब्बत
- मुशरिकों के लिए वईद

ह़ाशिया

①...इस आयत में बयान की गई चीज़ों में हर एक पर जुदागाना ग़ौरो फ़िक्र करें तो अल्लाह पाक की क़ुदरत के ऐसे ह़ैरत अंगेज़ करिश्मे नज़र आते हैं कि अ़क़्ल दंग रेह जाती है।

②...साइन्सी उ़लूम भी मारेफ़ते इलाही का ज़रीआ़ बनते हैं। जितना साइन्सी इ़ल्म ज़ियादा होगा उतना ही अल्लाह पाक की अ़ज़मत व क़ुदरत की पेहचान ज़ियादा होगी, लेहाज़ा अगर कोई दीने इस्लाम की ख़िदमत और अल्लाह पाक की मारेफ़त की निय्यत से साइन्सी उ़लूम सीखता है तो येह भी अ़ज़ीम इ़बादत होगी नीज़ अल्लाह पाक ने जो काइनात में ग़ौरो फ़िक्र का हुक्म दिया है येह उस हुक्म की तामील भी क़रार पाएगी।

③...याद रहे कि क़ियामत के दिन कुफ़्फ़ार के रिश्ते तो टूट जाएंगे लेकिन औलिया व मुत्तक़ीन और सालेह़ीन के साथ मुसलमानों का दोस्ती का रिश्ता बाक़ी रहेगा।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾

2:167 और पैरव कार कहेंगे अगर हमें एक मरतबा लौट कर जाना मिल जाए तो हम इन पेश्वाओं से ऐसे ही बेज़ार हो जाते जैसे येह हम से बेज़ार हुवे हैं। ① अल्लाह इसी त़रह़ उन्हें उन के आमाल उन पर ह़सरत बना कर दिखाएगा और वोह दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं ○

ع ۲۰

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾

2:168 ऐ लोगो ! जो कुछ ज़मीन में ह़लाल ② पाकीज़ा है ③ उस में से खाओ और शैत़ान के रास्तों पर ना चलो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है ○

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

2:169 वोह तुम्हें सिर्फ़ बुराई और बे ह़याई का हुक्म देगा और येह (हुक्म देगा) कि तुम अल्लाह के बारे में वोह कुछ कहो जो ख़ुद तुम्हें मालूम नहीं ○

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا

2:170 और जब उन से कहा जाए कि उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो केहते हैं : बल्कि हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है।

उ़नवान

- क़ियामत में मुशरिकों का अपने पेश्वाओं से बेज़ार होना
- ह़लाल और पाकीज़ा चीज़ें खाने का हुक्म और शैत़ान के त़रीक़ों पर चलने से मुमानेअ़त
- शैत़ान का काम बुराई, बे ह़याई और अल्लाह पाक पर झूट बांधने का हुक्म देना
- मुशरिकों का अपने आबा ओ अजदाद की अन्धी पैरवी करना और उस की मज़म्मत

ह़ाशिया

①...याद रहे कि ईमान और आमाले सालेह़ा की अस्ल ह़सरत तो काफ़िर ही को होगी लेकिन मुसलमानों को भी नेकियों की कमी और गुनाहों में मुलव्वस होने पर ह़सरत होगी।

②...दीने इस्लाम में ह़लाल खाने और ह़राम से बचने की बहुत ज़ियादा ताकीद है, ह़राम रोज़ी कमा कर और खा कर कोई शख़्स हरगिज़ मुत्तक़ी नहीं हो सकता। रिश्वत, सूद, चोरी, डकेती, माल दबा लेना सब इसी जुमरे में दाख़िल हैं।

③...ह़लाल व त़य्यिब से मुराद वोह चीज़ है जो बज़ाते ख़ुद भी ह़लाल है जैसे बकरे का गोश्त, सबज़ी, दाल वग़ैरा और हमें ह़ासिल भी जाइज़ ज़रीए से हो यानी चोरी, रिश्वत, डकेती वग़ैरा के ज़रीए ना हो।

وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾

क्या अगर्चे उन के बाप दादा ना कुछ अ़क़्ल रखते हों ना वोह हिदायत याफ़्ता हों ?[1] ○

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾

2:171 और काफ़िरों की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो किसी ऐसे को पुकारे जो ख़ाली चीख़ो पुकार के सिवा कुछ नहीं सुनता। (येह कुफ़्फ़ार) बेहरे, गूंगे, अन्धे हैं तो येह समझते नहीं[2] ○

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾

2:172 ऐ ईमान वालो ! हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की इ़बादत करते हो ○

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾

2:173 उस ने तुम पर सिर्फ़ मुर्दार और ख़ून और सुवर का गोश्त और वोह जानवर ह़राम किए हैं जिस के ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम बुलन्द किया गया[3] तो जो मजबूर हो जाए ह़ालांकि वोह ना ख़्वाहिश रखने वाला हो और ना ज़रूरत से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ○

उ़नवान

- ह़क़ क़बूल ना करने में काफ़िरों की ह़ालत की एक मिसाल
- ह़लाल रिज़्क़ खाने और अल्लाह पाक का शुक्र अदा करने का हुक्म
- खाने की ह़राम चीज़ों का बयान और शरई मजबूरी के वक़्त उन्हें खाने की रुख़्सत का बयान

ह़ाशिया

①...शरीअ़त के मुक़ाबले में बाप दादा की पैरवी करना ह़राम है। यूंही गुनाह के कामों में बाप दादा की पैरवी नाजाइज़ है कि ब हुक्मे ह़दीस अल्लाह पाक की ना फ़रमानी के काम में किसी की इ़त़ाअ़त नहीं की जा सकती। हमारे यहां शादी मैयत और दीगर कई मवाक़ेअ़ पर शरीअ़त पर चलने का कहा जाए तो लोग आगे से येही बाप दादा, ख़ानदान और बिरादरी के रस्मो रवाज का उ़ज़्र पेश करते हैं, येह उ़ज़्र निहायत ग़लत़ है।

②...कान, ज़बान और आंख का पूरा फ़ाएदा येह है कि इन से ह़क़ सुना, बोला और देखा जाए और कुफ़्फ़ार चूंकि अपने इन आज़ा से येह फ़ाएदा नहीं उठाते इस एतेबार से येह बेहरे गूंगे और अन्धे हैं।

③...ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़ब्ह़ करने से मुराद येह है कि ज़ब्ह़ के वक़्त छुरी फेरते हुवे अल्लाह पाक के इ़लावा किसी और के नाम पर ज़ब्ह़ किया जाए, ऐसा जानवर ह़राम व मुर्दार है। ज़िन्दगी में किसी की त़रफ़ मन्सूब कर देने से इस आयत का तअ़ल्लुक़ नहीं है। मज़ीद तफ़्सील तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान, जिल्द 1, सफ़ह़ा 274 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾

2:174 बेशक वोह लोग जो अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब को छुपाते हैं ① और इस के बदले ज़लील क़ीमत लेते हैं वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं और अल्लाह क़ियामत के दिन उन से ना कलाम फ़रमाएगा ② और ना उन्हें पाक करेगा और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है ○

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

2:175 येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब ख़रीद लिया तो येह कितना आग को बरदाश्त करने वाले हैं ③ ○

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾ ع ٢١ ٥

2:176 येह (सज़ा) इस लिए है कि अल्लाह ने ह़क़ के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई और बेशक किताब में इख़्तेलाफ़ करने वाले ④ दूर की मुख़ालेफ़त व ज़िद में हैं ○

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ ۚ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ

2:177 अस्ल नेकी येह नहीं कि तुम अपने मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ कर लो बल्कि अस्ली नेकी वोह है जो अल्लाह और क़ियामत और फ़रिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और अल्लाह की महब्बत में अ़ज़ीज़ माल

उ़नवान

- दीन फ़रोशी की इ़ब्रतनाक सज़ाएं और इन की वज्ह
- ह़क़ीक़ी नेकियों की तफ़्सील जैसे ईमान लाना, रिश्तेदारों और यतीमों की मदद करना, नमाज़ क़ाइम करना और ज़कात देना वग़ैरह।

ह़ाशिया

①...याद रहे कि छुपाना येह भी है कि किताब के मज़मून पर किसी को मुत्तलअ़ ना होने दिया जाए, ना वोह किसी को पढ़ कर सुनाया जाए और ना दिखाया जाए और येह भी छुपाना है कि ग़लत़ तावीलें कर के माना बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल माना पर पर्दा डाला जाए। यहूदी येह सब काम करते थे और आज भी बहुत से लोग येही करते हैं।

②...यहां कलाम ना फ़रमाने से मुराद येह है कि रेह़मत के साथ कलाम नहीं फ़रमाएगा।

③...आयत में लफ़्ज़ "मा" लोगों के मुह़ावरे के एतेबार से तअ़ज्जुब के माना में है और येह इस्तिफ़्हामिया (सवालिया) भी हो सकता है।

④...किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है या तौरात शरीफ़, पेहली सूरत में इख़्तेलाफ़ से मुराद होगा "ना मानना" और दूसरी सूरत में इस से मुराद होगा "सह़ीह़ त़ौर पर ना मानना" क्यूंकि यहूदी क़ुरआन को तो बिलकुल ना मानते थे और तौरात को मानने के दावेदार थे, मगर सह़ीह़ त़ौर पर ना मानते थे।

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي
الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ
اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ
الْبَاْسِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝۱۷۷

रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों ① और साइलों को और (गुलाम लौंडियों की) गरदनें आज़ाद कराने में ख़र्च करे और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और वोह लोग जो अ़ह्द कर के अपना अ़ह्द पूरा करने वाले हैं और मुसीबत और सख़्ती में और जेहाद के वक़्त सब्र करने वाले हैं येही लोग सच्चे हैं ② और येही परहेज़गार हैं ○

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي
الْقَتْلَى ۭ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى
بِالْاُنْثٰى ۭ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ
وَاَدَاۗءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ۭ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ
رَحْمَةٌ ۭ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱۷۸ۚ

2:178 ऐ ईमान वालो ! तुम पर मक़्तूलों ③ के ख़ून का बदला लेना फ़र्ज़ कर दिया गया, आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औ़रत के बदले औ़रत, तो जिस के लिए उस के भाई की त़रफ़ से कुछ मुआ़फ़ी दे दी जाए तो अच्छे त़रीक़े से मुत़ालबा हो और वारिस को अच्छे त़रीक़े से अदाएगी हो। ④ येह तुम्हारे रब की त़रफ़ से आसानी और रेह़मत है। तो इस के बाद जो ज़ियादती करे उस के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है ○

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ۝۱۷۹

2:179 और ऐ अ़क़्ल मन्दो ! ख़ून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ताकि तुम बचो ⑤ ○

उ़नवान

- क़िसास की फ़र्ज़िय्यत और दियत के चन्द अह़काम
- क़िसास का हुक्म देने का एक अ़ज़ीम फ़ाएदा

ह़ाशिया

①...आयत में मज़कूर "اِبْنَ السَّبِيْلِ" लफ़्ज़ का लफ़्ज़ी तर्जमा है रास्ते का बेटा और इस से मुराद मुसाफ़िर होता है।

②...यानी सह़ीह़ अ़क़ाइद रखने वाले और नमाज़ी, ज़कात व सदक़ात देने वाले, सब्र के आ़दी, वादे के पाबन्द और नेक आमाल करने वाले ही अपने दावए ईमान में कामिल त़ौर पर सच्चे हैं। अल्लाह पाक हमें ऐसा ही बनाए।

③...अ़रबी लफ़्ज़ क़तला क़तील की जम्अ़ है।

④...मक़्तूल के वारिस माल के बदले मुआ़फ़ करने पर राज़ी हों तो उन्हें मुत़ालबा करने में और दूसरी त़रफ़ क़ातिल को ख़ून बहा अदा करने में अच्छा त़रीक़ा इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया है।

⑤...क़िसास में ज़िन्दगी यूं है कि क़िसास में क़त्ल होने के डर से आदमी दूसरे को क़त्ल करने से रुकेगा नीज़ अगर क़ातिल को येह सज़ा दी जाए तो दूसरे लोगों को भी भरपूर इ़ब्रत मिलेगी और येह चीज़ लोगों की ज़िन्दगियों के तह़फ़्फ़ुज़ का ज़रीआ़ बनेगी।

2:180 तुम पर फ़र्ज़ किया गया है [1] कि जब तुम में से किसी को मौत आए (तो) अगर वोह कुछ माल छोड़े तो अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिए अच्छे तरीक़े से वसिय्यत कर जाए। येह परहेज़गारों पर वाजिब है ○	كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾
2:181 फिर जो वसिय्यत को सुनने के बाद इसे तब्दील कर दे तो इस का गुनाह उन बदलने वालों पर ही है, [2] बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है ○	فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾
2:182 फिर जिस को वसिय्यत करने वाले की तरफ़ से जानिब दारी या गुनाह का अन्देशा हो तो वोह उन के दरमियान सुल्ह करा दे तो उस पर कुछ गुनाह नहीं। [3] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ○	فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾ ع ٢٢

उनवान

- वसिय्यत करने का हुक्म और इस से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम

ह़ाशिया

①...अह़कामे मीरास के नुज़ूल से पेहले मरने वाले पर अपने माल के बारे में वसिय्यत करना वाजिब था क्यूंकि उस वक़्त सिर्फ़ वसिय्यत के मुत़ाबिक़ माल तक़्सीम होता था और जब मीरास के अह़काम आ गए तो वसिय्यत का हुक्मे वुजूब मन्सूख़ हो गया, अलबत्ता जवाज़ अब भी बाक़ी है।

②...वसिय्यत करने के बाद ज़िन्दगी में वसिय्यत करने वाले को वसिय्यत तब्दील करने का इख़्तियार होता है लेकिन फ़ौत होने के बाद किसी दूसरे शख़्स को वसिय्यत में तब्दीली की शरअ़न इजाज़त नहीं।

③...अगर किसी आ़लिम, ह़ाकिम, वसी या रिश्तेदार वग़ैरा को मालूम हो कि मरने वाला वसिय्यत में किसी पर ज़ियादती कर रहा है या शरई अह़काम की पाबन्दी नहीं कर रहा और येह मरने वाले को समझा कर वसिय्यत दुरुस्त करा दे तो येह शख़्स गुनहगार नहीं बल्कि अपने नेक अ़मल की वज्ह से सवाब का मुस्तह़िक़ होगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾

2:183 ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए ① जैसे तुम से पेहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ ○

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٤﴾

2:184 गिनती के चन्द दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में रखे ② और जिन्हें इस की ताक़त ना हो उन पर एक मिस्कीन का खाना फ़िदया है फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह उस के लिए बेहतर है और अगर तुम जानो तो रोज़ा रखना तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है ○

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ

2:185 रमज़ान का महीना है ③ जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया जो लोगों के लिए हिदायत और रेहनुमाई है और फ़ैसले की रौशन बातों (पर मुश्तमिल है।) तो तुम में जो कोई येह महीना पाए तो ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो इतने रोज़े और दिनों में रखे। अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और (येह आसानियां इस लिए हैं) ताकि तुम (रोज़ों की) तादाद पूरी कर लो और ताकि

उनवान

- रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत और मरीज़ व मुसाफ़िर के लिए रुख़्सत का बयान
- माहे रमज़ान की फ़ज़ीलत, रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत और मरीज़ व मुसाफ़िर से मुतअ़ल्लिक़ अह़काम

ह़ाशिया

①...इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है। शरीअ़त में रोज़ा येह है कि सुब्हे सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक रोज़े की निय्यत से खाने पीने और हम बिस्तरी से बचा जाए।

②...मरीज़ को फ़िलहाल रोज़ा ना रखने की रुख़्सत उस सूरत में है कि जब उसे रोज़ा रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक होने का अन्देशा हो और मुसाफ़िर को रुख़्सत (इजाज़त) इस सूरत में है जब कि वोह 92 किलो मीटर या इस से ज़ाइद मसाफ़त के सफ़र पर हो।

③...रमज़ान वोह वाहिद महीना है कि जिस का नाम क़ुरआने पाक में आया और क़ुरआने मजीद से निस्बत की वज्ह से माहे रमज़ान को अ़ज़मत व शराफ़त मिली। इस से मालूम हुवा कि जिस वक़्त को किसी शरफ़ व अ़ज़मत वाली चीज़ से निस्बत हो जाए वोह वक़्त क़ियामत तक शरफ़ वाला है। इसी लिए जिस दिन और घड़ी को हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत और मेराज से निस्बत है वोह अ़ज़मत व शराफ़त वाले हो गए।

الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾

तुम इस बात पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि उस ने तुम्हें हिदायत दी और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ [1] ○

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَ لْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾

2:186 और ऐ ह़बीब ! जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में सवाल करें तो बेशक मैं नज़दीक हूं, मैं दुआ करने वाले की दुआ क़बूल करता हूं जब वोह मुझ से दुआ करे [2] तो उन्हें चाहिए कि मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि हिदायत पाएं ○

اُحِلَّ لَكُمْ لَیْلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآىِٕكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَ اَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَیْكُمْ وَ عَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَ ابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۪ وَ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا حَتّٰى یَتَبَیَّنَ لَكُمُ الْخَیْطُ الْاَبْیَضُ مِنَ الْخَیْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ

2:187 तुम्हारे लिए रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना ह़लाल कर दिया गया, [3] वोह तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उन के लिए लिबास हो। अल्लाह को मालूम है कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआफ़ फ़रमा दिया तो अब उन से हम बिस्तरी कर लो और जो अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में लिखा हुवा है उसे त़लब करो [4] और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिए फ़ज्र से सफ़ेदी (सुब्ह़) का डोरा सियाही (रात) के डोरे से मुमताज़ हो जाए फिर रात आने तक रोज़ों को पूरा करो

उ़नवान

- क़बूलिय्यते दुआ का बयान और इत़ाअ़ते अह़काम की तरग़ीब
- रमज़ान और ह़ालते एतेकाफ़ में इज़दिवाजी तअ़ल्लुक़ात और सेह़री से मुतअ़ल्लिक़ शरई अह़काम

ह़ाशिया

①...गिनती पूरी करने से मुराद रमज़ान के उन्तीस या तीस दिन पूरे करना है और तकबीर केहने से मुराद येह है कि अल्लाह पाक ने तुम्हें अपने दीन के त़रीक़े सिखाए तो तुम इस पर अल्लाह पाक की बड़ाई बयान करो और उन चीज़ों पर अल्लाह पाक का शुक्र अदा करो।

②...दुआ का माना है अपनी ह़ाजत पेश करना और इजाबत यानी क़बूलिय्यत का माना येह है कि परवरदगार अपने बन्दे की दुआ पर "लब्बैक अ़ब्दी" फ़रमाता है अलबत्ता जो मांगा जाए उसी का ह़ासिल हो जाना दूसरी चीज़ है।

③...अ़रबी लफ़्ज़ اَلرَّفَثُ का लुग़वी माना है : मर्द व औ़रत की बाहमी पर्दे वाली ऐसी बातें करना जो सब के सामने ना की जा सकें और यहां इस से मुराद जिमाअ़ करना है।

④...अल्लाह पाक के लिखे हुवे को त़लब करने से एक मुराद येह भी है कि औ़रतों से हम बिस्तरी औलाद ह़ासिल करने की निय्यत से होनी चाहिए जिस से मुसलमानों की अफ़रादी कुव्वत में इज़ाफ़ा हो और दीन क़वी (मज़बूत़) हो।

الۡفَجۡرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيۡلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوۡهُنَّ وَاَنۡتُمۡ
عٰكِفُوۡنَ ۙ فِى الۡمَسٰجِدِ ؕ تِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ فَلَا تَقۡرَبُوۡهَا ؕ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَتَّقُوۡنَ ﴿١٨٧﴾

और औरतों से हम बिस्तरी ना करो जब कि तुम मस्जिदों में एतेकाफ़ से हो। ① येह अल्लाह की हदें हैं तो उन के पास ना जाओ। अल्लाह यूंही लोगों के लिए अपनी आयात खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि वोह परहेज़गार हो जाएं ○

وَلَا تَاۡكُلُوۡۤا اَمۡوَالَكُمۡ بَيۡنَكُمۡ بِالۡبَاطِلِ وَتُدۡلُوۡا بِهَاۤ اِلَى
الۡحُكَّامِ لِتَاۡكُلُوۡا فَرِيۡقًا مِّنۡ اَمۡوَالِ النَّاسِ بِالۡاِثۡمِ وَاَنۡتُمۡ
تَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٨٨﴾ ع ٢٣ ٦ ٧

2:188 और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ ना खाओ और ना हाकिमों के पास इन का मुक़द्दमा इस लिए पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाजाइज़ तौर पर जान बूझ कर खा लो ② ○

يَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ الۡاَهِلَّةِ ؕ قُلۡ هِىَ مَوَاقِيۡتُ لِلنَّاسِ وَالۡحَجِّ ؕ
وَلَيۡسَ الۡبِرُّ بِاَنۡ تَاۡتُوا الۡبُيُوۡتَ مِنۡ ظُهُوۡرِهَا وَلٰكِنَّ الۡبِرَّ
مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاۡتُوا الۡبُيُوۡتَ مِنۡ اَبۡوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

2:189 तुम से नए चांद के बारे में सवाल करते हैं। ③ तुम फ़रमा दो : येह लोगों और हज के लिए वक़्त की अ़लामतें हैं और येह कोई नेकी नहीं कि तुम घरों में पिछली दीवार तोड़ कर आओ। हां, अस्ल नेक तो परहेज़गार होता है ④ और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो

उनवान

- लोगों का माल नाहक़ खाना और इस मक़्सद के लिए कोर्ट कचेहरी में घसीटना ह़राम है
- चांद के छोटा बड़ा होने की ह़िक्मत
- अस्ल नेकी परहेज़गारी है

ह़ाशिया

①...इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ेदार के लिए बीवी से हम बिस्तरी ह़लाल है जबकि वोह मोतकिफ़ ना हो लेकिन एतेकाफ़ में औ़रतों से मियां बीवी वाले तअ़ल्लुक़ात ह़राम हैं।

②...नाजाइज़ फ़ाएदे के लिए किसी पर मुक़द्दमा बनाना और उस को हुक्काम तक ले जाना नाजाइज़ व ह़राम है। इसी त़रह़ अपने फ़ाएदे की ख़ात़िर दूसरे को ज़रर (नुक़्सान) पहुंचाने के लिए हुक्काम पर असर डालना, रिश्वतें देना ह़राम है। हुक्काम तक रसाई रखने वाले लोग इस आयत के हुक्म को पेशे नज़र रखें।

③...अ़रबी लफ़्ज़ اَهِلَّة हिलाल की जम्अ़ है और नए माह की पेहली दूसरी रात के चांद को हिलाल केहते हैं।

④...येह आयत ज़मानए जाहिलिय्यत की एक रस्म से मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई, इस से मालूम हुवा कि किसी चीज़ को मुमानेअ़त के बग़ैर नाजाइज़ समझना जाहिलों का काम है। अपनी त़रफ़ से ग़लत़ क़िस्म की रस्में बना लेना और पाबन्दियां लगा लेना जाइज़ नहीं। बहुत से काम वैसे जाइज़ होते हैं लेकिन अपनी त़रफ़ से शरअ़न ज़रूरी समझ लेने से वोह ख़िलाफ़े शरीअ़त हो जाते हैं।

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾

इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ ○

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾

2:190 और अल्लाह की राह में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ह़द से ना बढ़ो, बेशक अल्लाह ह़द से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता ○

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ
اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ
قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾

2:191 और (दौराने जेहाद) काफ़िरों को जहां पाओ क़त्ल करो [1] और उन्हें वहां से निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था और फ़ितना क़त्ल से ज़ियादा शदीद होता है और मस्जिदे ह़राम के पास उन से ना लड़ो जब तक वोह तुम से वहां ना लड़ें और अगर वोह तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो। काफ़िरों की येही सज़ा है [2] ○

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾

2:192 फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है ○

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ
انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

2:193 और उन से लड़ते रहो यहां तक कि कोई फ़ितना ना रहे [3] और इ़बादत अल्लाह के लिए हो जाए फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो सिर्फ़ ज़ालिमों र सख़्ती की सज़ा बाक़ी रेह जाती है ○

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ

2:194 अदब वाले महीने के बदले अदब वाला महीना है और तमाम अदब वाली चीज़ों का बदला है।

उ़नवान

- जेहाद का हुक्म और ज़ियादती से मुमानेअ़त
- दौराने जेहाद काफ़िरों को क़त्ल करने का हुक्म और हुदूदे ह़रम में लड़ाई की इब्तेदा करने से मुमानेअ़त
- शिर्क का फ़ितना ख़त्म होने तक अ़रब के काफ़िरों से जेहाद का हुक्म
- हुरमत वाले महीने में जंग करने से मुतअ़ल्लिक़ मुसलमानों को तसल्ली

ह़ाशिया

①...यहां दौराने जेहाद काफ़िरों को क़त्ल करने की बात हो रही है, येह हुक्म नहीं कि अम्न हो या जंग, सुल्ह़ हो या लड़ाई हर ह़ाल में उन्हें क़त्ल करो।

②...ह़रम की हुदूद में मुसलमानों को लड़ने से मन्अ़ कर दिया गया क्यूंकि येह ह़रम की हुरमत के ख़िलाफ़ है लेकिन अगर कुफ़्फ़ार ही वहां मुसलमानों से जंग की इब्तेदा करें तो उन्हें जवाब देने के लिए वहां पर भी उन से लड़ने और उन्हें क़त्ल करने की इजाज़त है।

③...यहां फ़ितने से "शिर्क" मुराद है।

فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

तो जो तुम पर ज़ियादती करे उस पर उतनी ही ज़ियादती करो जितनी उस ने तुम पर ज़ियादती की हो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है [1] ○

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾

2:195 और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों ख़ुद को हलाकत में ना डालो और नेकी करो बेशक अल्लाह नेकी करने वालों से महब्बत फ़रमाता है ○

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ

2:196 और हज और उ़मरह अल्लाह के लिए पूरा करो फिर अगर तुम्हें (मक्के से) रोक दिया जाए [2] तो (हरम में) कुरबानी का जानवर भेजो जो मुयस्सर आए और अपने सर ना मुंडाओ जब तक कुरबानी अपने ठिकाने पर ना पहुंच जाए फिर जो तुम में बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ है तो रोज़े या ख़ैरात या कुरबानी का फ़िदया दे [3]

مع

उ़नवान

- राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म और ख़ुद को हलाकत में डालने की मुमानेअ़त
- ह़ज और उ़मरह से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम और आदाब
- एह़सार यानी ह़ज से रोके जाने के अह़काम

ह़ाशिया

①...दीने इस्लाम के आला अख़्लाक़, पाकीज़ा किरदार और ज़ुल्म से बाज़ रेहने का दर्स देने की बुलन्दी देखिए कि मचलते जज़्बात, जज़्बए इन्तेक़ाम के जोश और दुश्मन पर क़ब्ज़ा ह़ासिल होते वक़्त बदला लेने में मुसलमानों को तक़्वा और अ़दलो इन्साफ़ का दर्स दिया जा रहा और ज़ियादती करने से मन्अ़ किया जा रहा है।

②...ह़ज या उ़मरह का एह़राम बांधने के बाद किसी वज्ह से, जैसे दुश्मन या दरिन्दे के ख़ौफ़ या सफ़र की वज्ह से मरज़ ज़ियादा होने के ग़ालिब गुमान की बिना पर ह़ज व उ़मरह पूरा ना कर सकने को एह़सार केहते हैं।

③...एह़राम की ह़ालत में जिस पाबन्दी की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने पर दम यानी कुरबानी करना लाज़िम होता है, वोह ख़िलाफ़ वर्ज़ी अगर बीमारी या सर में ज़ख़्म, फुन्सी फोड़े या जूओं वग़ैरा की सख़्त ईज़ा के बाइ़स होगी तो इस में कुरबानी के बदले 6 मिस्कीनों को एक एक सदक़ा देने या दोनों वक़्त पेट भर खिलाने या तीन रोज़े रख लेने या कुरबानी ही कर लेने का इख़्तियार होगा।

فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۫ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي
الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ
لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۧ ﴿۱۹۶﴾

फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जो हज से उमरह मिलाने का फ़ाएदा उठाए उस पर कुरबानी लाज़िम है जैसी मुयस्सर हो फिर जो (कुरबानी की कुदरत) ना पाए तो तीन रोज़े हज के दिनों में रखे और सात रोज़े (उस वक़्त रखो) जब तुम अपने घर लौट कर जाओ, येह मुकम्मल दस हैं। ① येह हुक्म उस के लिए है जो मक्के का रेहने वाला ना हो ② और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह शदीद अ़ज़ाब देने वाला है ○

ع ۲۴ ۸

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ
يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَ
اتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

2:197 हज चन्द मालूम महीने हैं तो जो इन में हज की निय्यत करे तो हज में ना औ़रतों के सामने सोहबत का तज़्किरा हो और ना कोई गुनाह हो और ना किसी से झगड़ा हो और तुम जो भलाई करो अल्लाह उसे जानता है और ज़ादे राह साथ ले लो पस सब से बेहतर ज़ादे राह यक़ीनन परहेज़गारी है और ऐ अ़क़्ल वालो ! मुझ से डरते रहो ③ ○

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

2:198 तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो,

उनवान

- हज्जे तमत्तोअ़ व क़िरान यानी एक ही सफ़र में उ़मरह और हज इकट्ठे करने का बयान
- हज्जे तमत्तोअ़ व क़िरान की इजाज़त किसे है ?
- हज में कुछ ममनूआ़ चीज़ें
- तक़्वा बेहतरीन तोशए सफ़र
- दौराने हज कारोबार की इजाज़त और ज़िक्रे इलाही की कसरत का हुक्म

हाशिया

①...जो शख़्स एक ही सफ़र में हज व उ़मरह की सआ़दत हासिल करे तो उस पर बतौ़रे शुक्राना कुरबानी लाज़िम है, अगर कुरबानी की कुदरत ना हो तो वोह दस रोज़े रखे, तीन रोज़े एहराम बांधने के बाद 1 शव्वाल से 9 ज़िल हज तक रखे और 7 रोज़े 13 ज़िल हज के बाद रखे।

②...हज्जे तमत्तोअ़ या हज्जे क़िरान का जाइज़ होना सिर्फ़ आफ़ाक़ी यानी मीक़ात से बाहर वालों के लिए है। हुदूदे मीक़ात में और उस से अन्दर रेहने वालों के लिए ना तमत्तोअ़ की इजाज़त है और ना क़िरान की, वोह सिर्फ़ हज्जे इफ़राद कर सकते हैं।

③...अ़क़्ल वाले केह कर इस लिए मुख़ातब किया ताकि लोगों को समझ आ जाए कि अ़क़्ल का तक़ाज़ा ख़ौफ़े इलाही है। जो अल्लाह पाक से ना डरे वोह बे अ़क़्लों की तरह है। अ़क़्ल वोही है जो अल्लाह पाक से ख़ौफ़ पैदा करे और जिस अ़क़्ल से आदमी बे दीन हो वोह अ़क़्ल नहीं बल्कि बे अ़क़्ली है।

فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَ اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَ اِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾

तो जब तुम अ़रफ़ात से वापस लौटो तो मश्अ़रे ह़राम के पास अल्लाह को याद करो और उस का ज़िक्र करो क्यूंकि उस ने तुम्हें हिदायत दी है अगर्चे इस से पेहले तुम यक़ीनन भटके हुवे थे ○

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَ اسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾

2:199 फिर (ऐ क़ुरैशियो !) तुम भी वहीं से पलटो जहां से दूसरे लोग पलटते हैं [1] और अल्लाह से मग़्फ़ेरत त़लब करो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ○

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾

2:200 फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर लो तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि इस से ज़ियादा (ज़िक्र करो) [2] और कोई आदमी यूं केहता है कि ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में दे दे [3] और आख़ेरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं ○

وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

2:201 और कोई यूं केहता है कि ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें आख़ेरत में (भी) भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ○

النصف

उ़नवान

- त़ालिबे दुन्या और त़ालिबे आख़ेरत की दुआ़ में फ़र्क़

ह़ाशिया

①...क़बीलए क़ुरैश वाले दीगर लोगों के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करने के बजाए मुज़्दलिफ़ा में ठेहरे रेहते और जब लोग अ़रफ़ात से पलटते तो येह मुज़्दलिफ़ा से पलटते और इस में अपनी बड़ाई समझते थे। इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि वोह भी सब के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करें और एक साथ वापस लौटें। इस से मालूम हुवा कि इस्लामी अह़काम बिरादरियों के एतेबार से नहीं बदलते और ना ही किसी के रुत्बे और मक़ाम की वज्ह से इन में तब्दीली होती है बल्कि अमीरो ग़रीब, गोरे काले, अ़रबी अ़जमी सब के लिए इस्लाम के अह़काम बराबर हैं।

②... ज़माना ए जाहिलिय्यत में एहले अ़रब ह़ज के बाद काबा के क़रीब अपने बाप दादा के फ़ज़ाइल बयान किया करते थे। इस्लाम में बताया गया कि येह शोहरत व ख़ुद नुमाई की बेकार बातें हैं, इस की बजाए ज़ौक़ो शौक़ के साथ ज़िक्रे इलाही करो।

③...याद रहे कि मोमिन अगर दुन्या की बेहतरी त़लब करता है तो वोह भी जाइज़ है और येह त़लबे दुन्या अगर दीन की ताईदो तक़्वियत के लिए हो तो येह दुआ़ भी उमूरे दीन से शुमार होगी। लेकिन येह याद रहे कि आख़ेरत को असलन फ़रामोश कर के सिर्फ़ दुन्या मांगना बहर ह़ाल मुसलमान के शायाने शान नहीं।

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٢٠٢

2:202 उन लोगों के लिए उन के कमाए हुवे आमाल से हिस्सा है और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है ○

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٢٠٣

2:203 और गिनती के दिनों में अल्लाह का ज़िक्र करो [1] तो जो जल्दी कर के दो दिन में (मिना से) चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं [2] और जो पीछे रेह जाए तो उस पर (भी) कोई गुनाह नहीं । (येह बिशारत) परहेज़गार के लिए है और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम उसी की तरफ़ उठाए जाओगे ○

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰي مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝٢٠٤

2:204 और लोगों में से कोई वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुम्हें बहुत अच्छी लगती है और वोह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है हालांकि वोह सब से ज़ियादा झगड़ा करने वाला है ○

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝٢٠٥

2:205 और जब पीठ फेर कर जाता है तो कोशिश करता है कि ज़मीन में फ़साद फैलाए और खेत और मवेशी हलाक करे और अल्लाह फ़साद को पसन्द नहीं करता [3] ○

उनवान

- मिना में क़ियाम के अहकाम
- एक ख़ास मुनाफ़िक़ की छे ख़राबियां

हाशिया

①...गिनती के दिनों से मुराद अय्यामे तशरीक़ हैं और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बाद और जमरात की रमी के वक़्त तकबीर केहना मुराद है और आयत से मुराद येह है कि मिना में क़ियाम के दौरान अल्लाह पाक के ज़िक्र में मशग़ूल रहो।

②...यहां दो दिनों में रमी कर के चले जाने से मुराद दस ज़ुल हिज्जा के बाद दो दिन हैं, लेहाज़ा अगर कोई शख़्स बारह तारीख़ की रमी कर के मिना से वापस आ जाए तो उस पर कोई गुनाह नहीं अगर्चे तेरह को रमी कर के वापस आना अफ़्ज़ल है।

③...यहां आयात में अगर्चे एक ख़ास मुनाफ़िक़ का तज़किरा है लेकिन येह आयत बहुत से लोगों को समझाने के लिए काफ़ी है। हमारे मुआशरे में भी बहुत से लोग ऐसे हैं जिन की ज़बान बड़ी मीठी होती, गुफ़्तगू बड़ी नर्मी से करते और बड़ी आजिज़ी का इज़हार करते हैं लेकिन दर पर्दा दीन के मसाइल में, लोगों में या ख़ानदानों में फ़साद बर्पा करते और हलाकत व बरबादी का ज़रीआ बनते हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾

2:206 और जब उस से कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे ज़िद मज़ीद गुनाह पर उभारती है तो ऐसे को जहन्नम काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा ठिकाना है [1] ○

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾

2:207 और लोगों में से कोई वोह है जो अल्लाह की रिज़ा तलाश करने के लिए अपनी जान बेच देता है और अल्लाह बन्दों पर बड़ा मेहरबान है ○

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾

2:208 ऐ ईमान वालो ! इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दमों पर ना चलो बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है ○

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۰۹﴾

2:209 और अगर तुम अपने पास रौशन दलाइल आ जाने के बाद भी लग़ज़िश खाओ तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है [2] ○

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۲۱۰﴾ ع ۲۵ ۱۴ ۹

2:210 लोग तो इसी चीज़ का इन्तेज़ार कर रहे हैं कि बादलों के सायों में उन के पास अल्लाह का अ़ज़ाब और फ़रिश्ते आ जाएं और फ़ैसला कर दिया जाए और अल्लाह ही की त़रफ़ सब काम लौटाए जाते हैं ○

उ़नवान

- रिज़ा ए इलाही के लिए जां फ़रोशी नफ़्अ़ बख़्श तिजारत है
- इस्लामी अह़काम की मुकम्मल पैरवी करने का हुक्म
- वाज़ेह़ दलीलों के बा वुजूद राहे इस्लाम के ख़िलाफ़ रविश इख़्तियार करना सख़्त जुर्म है
- दीने इस्लाम छोड़ने वाले अ़ज़ाबे इलाही के मुन्तज़िर हैं

ह़ाशिया

①...मुनाफ़िक़ आदमी की एक अ़लामत येह होती है कि अगर उसे समझाया जाए तो अपनी बात पर अड़ जाता, दूसरे की बात मानना अपने लिए तौहीन समझता और नसीह़त किए जाने को अपनी इ़ज़्ज़त का मस्अला बना लेता है। अफ़्सोस कि हमारे मुआ़शरे में भी ऐसे लोगों की भरमार है।

②...इस से मुराद येह है कि अगर तुम लोग वाज़ेह़ दलीलों के बा वुजूद इस्लाम में मुकम्मल दाख़िल होने से दूर रहे और इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रविश इख़्तियार करो तो येह तुम्हारा सख़्त जुर्म होगा।

سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

2:211 बनी इसराईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी रौशन निशानियां दीं ① और जो अल्लाह की नेमत को अपने पास आने के बाद बदल दे तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है ② ○

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

وقف لازم

2:212 काफ़िरों की निगाह में ③ दुन्या की ज़िन्दगी को ख़ुशनुमा बना दिया गया और वोह मुसलमानों पर हंसते हैं और (अल्लाह से) डरने वाले क़ियामत के दिन उन काफ़िरों से ऊपर होंगे ④ और अल्लाह जिसे चाहता है बे हिसाब रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है ○

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۟ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ

2:213 तमाम लोग एक दीन पर थे तो अल्लाह ने अम्बिया भेजे ख़ुश ख़बरी देते हुवे और डर सुनाते हुवे और उन के साथ सच्ची किताब उतारी ताकि वोह लोगों के दरमियान उन के इख़्तेलाफ़ात में फ़ैसला कर दे

उ़नवान

- बनी इसराईल से रौशन निशानियों के बारे में सवाल
- नेमते इलाही तब्दील करने वालों को तम्बीह
- काफ़िरों के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी को ख़ुशनुमा बनाया जाना और बरोज़े क़ियामत मुसलमानों का काफ़िरों से बुलन्दो बाला होना
- अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की हिदायत आ जाने के बाद लोगों का इख़्तेलाफ़, इस की वज्ह और मुसलमानों को हक़ बात की हिदायत

हाशिया

①...याद रहे कि बनी इसराईल से रौशन निशानियों के बारे में पूछना ह़क़ीक़त में उन्हें समझाने के लिए और उन की अपनी ना फ़रमानियों के बा वुजूद अल्लाह पाक की मेहरबानियों का उन से इक़रार कराने के लिए है।

②...अल्लाह पाक की नेमत से आयाते इलाहिय्या मुराद हैं जो हिदायत का सबब हैं और इन की बदौलत गुमराही से नजात ह़ासिल होती है, इन्हीं में से वोह आयात हैं जिन में नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नातो सिफ़त और आप की नबुव्वत व रिसालत का बयान है और यहूदो नसारा का अपनी किताबों में तेह़रीफ़ करना इस नेमत को तब्दील करना है।

③...काफ़िरों के लिए दुन्या की ज़िन्दगी आरास्ता कर दिए जाने से मुराद येह है कि उन्हें येही ज़िन्दगी पसन्द है, वोह इसी की क़द्र करते और इसी पर मरते हैं। याद रहे दुन्या की ज़िन्दगी वोह है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात में सर्फ़ हो और जो तोशए आख़ेरत जम्अ़ करने में ख़र्च हो वोह अल्लाह करीम के फ़ज़्ल से दीनी ज़िन्दगी है।

④...इस से येह भी मालूम हुवा कि ग़रीब मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाना या किसी मोमिन को ज़लील या कमीना जानना काफ़िरों का त़रीक़ा है। लेहाज़ा फ़ासिक़ व काफ़िर अगर्चे मालदार हो इ़ज़्ज़त वाला नहीं है जबकि मोमिन अगर्चे ग़रीब हो और किसी भी क़ौम से हो इ़ज़्ज़त वाला है बशर्ते कि मुत्तक़ी हो।

النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ
اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى
اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَ
اللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۳﴾

और जिन लोगों को किताब दी गई उन्हों ने ही अपने बाहमी बुग़्ज़ो ह़सद की वज्ह से किताब में इख़्तेलाफ़ किया (येह इख़्तेलाफ़) इस के बाद (किया) कि उन के पास रौशन अह़काम आ चुके थे तो अल्लाह ने ईमान वालों को अपने हुक्म से उस ह़क़ बात की हिदायत दी जिस में लोग झगड़ रहे थे ① और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है ○

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى
يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ
اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿۲۱۴﴾

2:214 क्या तुम्हारा येह गुमान है ② कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ह़ालांकि अभी तुम पर पेहले लोगों जैसी ह़ालत ना आई। उन्हें सख़्ती और शिद्दत पहुंची और उन्हें ज़ोर से हिला डाला गया यहां तक कि रसूल और उस के साथ ईमान वाले केह उठे : अल्लाह की मदद कब आएगी ? सुन लो ! बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है ○

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ
فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ
وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾

2:215 आप से सवाल करते हैं : क्या ख़र्च करें ? तुम फ़रमाओ : जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और मुसाफ़िर के लिए है ③ और तुम जो भलाई करो बेशक अल्लाह उसे जानता है ○

उ़नवान

- मुसलमानों का इम्तेह़ान और साबेक़ा उम्मतों की तक्लीफ़ व शिद्दत का बयान
- राहे ख़ुदा में नफ़्ली सदक़ा करने की एक आला मिक़्दार और इस का मसरफ़

ह़ाशिया

①...नफ़्से इख़्तेलाफ़ मज़्मूम नहीं लेकिन अल्लाह पाक और उस के रसूल عَلَيْهِ السَّلَام के अह़काम से इख़्तेलाफ़ करना नीज़ ह़क़ वाज़ेह़ हो जाने के बा वुजूद इख़्तेलाफ़ करना ग़लत़ है।

②...येह आयत ग़ज़वए अह़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जहां मुसलमानों को सर्दी और भूक वग़ैरा की सख़्त तक्लीफ़ें पहुंची थीं। इस में उन्हें सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करना हमेशा से ख़ुदा के ख़ास बन्दों का मामूल रहा है।

③... इस आयत में सदक़ए नाफ़िला का बयान है मगर मां बाप को ज़कात और सदक़ाते वाजिबा देना जाइज़ नहीं।

ع ٢٦ ١٠

2:216 तुम पर जेहाद फ़र्ज़ किया गया है ह़ालांकि वोह तुम्हें ना गवार है और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें ना पसन्द हो ह़ालांकि वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए ह़ालांकि वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ① ○

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا
شَیْــٴًـا وَّهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّهُوَ شَرٌّ
لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۠۝٢١٦

2:217 आप से माहे ह़राम में जेहाद करने के बारे में सवाल करते हैं, तुम फ़रमाओ : इस महीने में लड़ना बड़ा गुनाह है और अल्लाह की राह से रोकना और उस पर ईमान ना लाना और मस्जिदे ह़राम से रोकना और उस के रेहने वालों को वहां से निकाल देना अल्लाह के नज़्दीक इस से भी ज़ियादा बड़ा गुनाह है ② और फ़ितना क़त्ल से बड़ा जुर्म है और वोह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर उन से हो सके तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें ③ और तुम में जो कोई अपने दीन से मुर्तद हो जाए फिर काफ़िर ही मर जाए तो उन लोगों के तमाम आमाल दुन्या ओ आख़ेरत में बरबाद हो गए

یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِیْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِیْهِ
كَبِیْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ
اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا یَزَالُوْنَ یُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى یَرُدُّوْكُمْ
عَنْ دِیْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ یَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِیْنِهٖ
فَیَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓىٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِی الدُّنْیَا وَ

उनवान

- जेहाद की फ़र्ज़ियत और मुसलमानों को नसीह़त
- माहे ह़राम में जेहाद की इजाज़त की सूरत
- मुर्तद होने की ह़ालत में मरने वाले की सज़ा का बयान

ह़ाशिया

①...किसी चीज़ के अच्छा या बुरा होने का मदार हर जगह अपनी सोच पर नहीं बल्कि अल्लाह पाक के हुक्म पर रखना चाहिए। अल्लाह पाक ने जिस चीज़ का हुक्म दिया वोह बहर ह़ाल हमारे लिए बेहतर है और जिस से मन्अ़ फ़रमाया वोह बहर ह़ाल हमारे लिए बेहतर नहीं है।

②...इस से मालूम हुवा कि ख़ुद बड़े बड़े ऐ़बों में मुब्तला होने के बा वुजूद ख़ुद को देखने की बजाए दूसरों पर त़ान करना काफ़िरों का त़रीक़ा है। येह बीमारी हमारे यहां भी आ़म है कि लोग सारी दुन्या की बुराइयां और ग़ीबतें बयान करते हैं और ख़ुद इस से बढ़ कर ऐ़बों की गन्दगी से आलूदा होते हैं।

③...इस आयत में ख़बर दी गई है कि कुफ़्फ़ार मुसलमानों से हमेशा अ़दावत रखेंगे और जहां तक मुमकिन होगा वोह मुसलमानों को दीन से मुनह़रिफ़ करने की कोशिश करते रहेंगे, चुनान्चे आज भी कुफ़्फ़ार की हज़ारों तन्ज़ीमें नित नए त़रीक़ों से मुसलमानों को इस्लाम से फेरने और उन की अख़्लाक़ियात तबाह कर के उन का ईमान कमज़ोर करने में लगी हुई हैं।

الْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

और वोह दोज़ख़ वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे [1] ○

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾

2:218 बेशक वोह लोग जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने अल्लाह के लिए अपने घरबार छोड़ दिए और अल्लाह की राह में जेहाद किया वोह रेहमते इलाही के उम्मीद वार हैं [2] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ○

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۭ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۭ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ ۭ قُلِ الْعَفْوَ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾

2:219 आप से शराब और जूए के मुतअ़ल्लिक़ सवाल करते हैं। तुम फ़रमा दो : इन दोनों में कबीरा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ दुन्यवी मनाफ़ेअ़ भी हैं और इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से ज़ियादा बड़ा है। आप से सवाल करते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें ? तुम फ़रमाओ : जो ज़ाइद बचे। इसी त़रह़ अल्लाह तुम से आयतें बयान फ़रमाता है ताकि तुम ग़ौरो फ़िक्र करो ○

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۭ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۭ

2:220 दुन्या और आख़ेरत के कामों में (ग़ौरो फ़िक्र कर लिया करो) और तुम से यतीमों का मस्अला पूछते हैं। तुम फ़रमाओ : उन का भला करना बेहतर है [3] और अगर उन के साथ अपना ख़र्चा मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं

उ़नवान

- ईमान लाने, हिजरत और जेहाद करने जैसे आमाल करने वाले रेहमते इलाही के उम्मीदवार हैं
- शराब और जूए की हुरमत
- सदक़े की मिक़दार का बयान
- यतीमों का माल अपने माल से मिलाने का शरई हुक्म

ह़ाशिया

①...याद रखें कि मुर्तद होना बहुत सख़्त जुर्म है, अफ़्सोस कि आज कल मुसलमानों की अक्सरिय्यत दीन के बुन्यादी अ़क़ाइद से ला इ़ल्म है, ग़मी व ख़ुशी के मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर उन में कुफ़्रिया जुम्लों की भरमार है।

②...इस से मालूम हुवा कि अ़मल करने से अल्लाह पाक पर अज्र देना वाजिब नहीं हो जाता बल्कि सवाब देना महज़ अल्लाह पाक का फ़ज़्ल है।

③...अगर्चे इस आयत का नुज़ूल यतीमों की माली इस्लाह़ के बारे में हुवा मगर इस्लाह़ के लफ़्ज़ में सारी मस्लेह़तें दाख़िल हैं। यतीमों के अख़्लाक़, आमाल, तरबियत, तालीम सब की इस्लाह़ करनी चाहिए। यूं समझें कि यतीम सारी मुस्लिम क़ौम के लिए औलाद की त़रह़ हैं।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾

और अल्लाह बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से जुदा ख़ूब जानता है [1] और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मशक़्क़त में डाल देता। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है ○

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ ع

2:221 और मुशरिका औरतों से निकाह़ ना करो जब तक मुसलमान ना हो जाएं और बेशक मुसलमान लौंडी मुश्रिका औरत से अच्छी है अगर्चे वोह तुम्हें पसन्द हो और (मुसलमान औरतों को) मुशरिकों के निकाह़ में ना दो [2] जब तक वोह ईमान ना ले आएं और बेशक मुसलमान ग़ुलाम मुशरिक से अच्छा है अगर्चे वोह मुशरिक तुम्हें पसन्द हो, वोह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं और अल्लाह अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की त़रफ़ बुलाता है और अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है ताकि वोह नसीह़त ह़ासिल करें ○

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِى الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ

2:222 और तुम से ह़ैज़ के बारे में पूछते हैं तुम फ़रमाओ : वोह नापाकी है तो ह़ैज़ के दिनों में औरतों से अलग रहो और उन के क़रीब ना जाओ जब तक पाक ना हो जाएं [3] फिर जब ख़ूब पाक हो जाएं

उ़नवान

- मुशरिका औरत और मुशरिक मर्द से निकाह़ ह़रामे क़त़ई है
- ह़ैज़ (औरतों की माहवारी) के चन्द अह़काम

ह़ाशिया

①...येह फ़रमान निहायत जामेअ़ है और ज़िन्दगी के हज़ारों शोबों के लाखों मुआ़मलात में राहनुमाई के लिए काफ़ी है कि जहां एक ही चीज़ में अच्छी और बुरी दोनों निय्यतें मुमकिन हैं वहां दूसरे लोग अगर्चे बुरी निय्यत को ना जानते हों लेकिन अल्लाह पाक तो जानता है।

②...इन्तेहाई अफ़्सोस है कि क़ुरआन में इतनी सराह़त व वज़ाह़त से हुक्म आने के बा वुजूद मुसलमान लड़कों में मुशरिका लड़कियों के साथ और यूंही काफ़िर लड़कों और मुसलमान लड़कियों में आपसी शादियों का रुजह़ान बढ़ता जा रहा है। इस तमाम सूरते ह़ाल का वबाल इस में मुलव्वस लड़के और लड़कियों पर भी है और उन वालिदैन पर भी जो राज़ी ख़ुशी औलाद को इस जहन्नम में झोंकते हैं, यूंही इस का वबाल उन नाम निहाद जाहिल दानिशवरों, लिबरलइज़्म के मरीज़ों और दीन दुश्मन क़लमकारों पर भी है जो इस की ताईद व ह़िमायत में वरक़ सियाह करते हैं।

③...ह़ैज़ की ह़ालत में औरतों से हम बिस्तरी करना ह़राम है, बक़िया उन से गुफ़्तगू करना, उन के साथ खाना पीना ह़त्ताकि उन का जूठा खाना भी जाइज़ है, गुनाह नहीं।

فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾

तो उन के पास वहां से जाओ जहां से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह बहुत तौबा करने वालों से महब्बत फ़रमाता है और ख़ूब साफ़ सुथरे रेहने वालों को पसन्द फ़रमाता है ○

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۪ وَ قَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾

2:223 तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिए खेतियां हैं तो अपनी खेतियों में जिस त़रह़ चाहो आओ [1] और अपने फ़ाएदे का काम पेहले करो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम उस से मिलने वाले हो और ऐ ह़बीब ! ईमान वालों को बिशारत दो ○

وَ لَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَ تَتَّقُوْا وَ تُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾

2:224 और अपनी क़समों की वज्ह से अल्लाह के नाम को एह़सान करने और परहेज़ गारी इख़्तियार करने और लोगों में सुल्ह़ कराने में आड़ ना बना लो [2] और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है ○

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۲۵﴾

2:225 और अल्लाह उन क़समों में तुम्हारी गिरफ़्त नहीं फ़रमाएगा जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए [3] हां उस पर गिरफ़्त फ़रमाता है जिन का तुम्हारे दिलों ने क़स्द किया हो और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा ह़िल्म वाला है ○

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ

2:226 और वोह जो अपनी बीवियों के पास ना जाने की क़सम खा बैठें उन के लिए चार महीने की मोहलत है,

उ़नवान

- इज़्दिवाजी तअ़ल्लुक़ात के बारे में रेहनुमाई और आमाले सालेह़ा करने का हुक्म
- नेक काम ना करने की क़सम खाने से मुमानेअ़त
- झूटी क़सम खाना क़ाबिले गिरफ़्त अ़मल है
- ईला यानी बीवियों से सोह़बत ना करने की क़सम खाने वालों के लिए शरई हुक्म

ह़ाशिया

①...औ़रत से हर त़रह़ हम बिस्तरी जाइज़ है, बशर्ते कि सोह़बत अगले मक़ाम में हो।

②...यहां एक अहम मस्अला याद रखें कि अगर कोई शख़्स नेकी से बाज़ रेहने की क़सम खा ले तो उस को चाहिए कि क़सम को पूरा ना करे बल्कि वोह नेक काम करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे।

③...बात बात पर क़सम ना खानी चाहिए, बाज़ लोग क़सम को तकिया कलाम बना लेते हैं कि इरादा व बिला इरादा ज़बान पर जारी होती है और इस का भी ख़याल नहीं रखते कि बात सच्ची है या झूटी, येह सख़्त मायूब अ़मल है।

فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾

पस अगर इस मुद्दत में वोह रुजूअ़ कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है [1] ○

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾

2:227 और अगर वोह त़लाक़ का पुख़्ता इरादा कर लें तो अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है ○

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ ع ٢٨ ١٢

2:228 और त़लाक़ वाली औ़रतें अपनी जानों को तीन हैज़ तक रोके रखें और उन्हें ह़लाल नहीं कि उस को छुपाएं जो अल्लाह ने उन के पेट में पैदा किया है अगर अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखती हैं और उन के शौहर इस मुद्दत के अन्दर उन्हें फेर लेने का ह़क़ रखते हैं अगर वोह इस्लाह़ का इरादा रखते हों [2] और औ़रतों के लिए भी मर्दों पर शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ऐसे ही ह़क़ है जैसा (उन का) औ़रतों पर है और मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है और अल्लाह ग़ालिब, ह़िक्मत वाला है ○

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ

2:229 त़लाक़ दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है या अच्छे त़रीक़े से छोड़ देना है [3] और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम ने जो कुछ औ़रतों को दिया हो उस में से कुछ वापस लो

उ़नवान

- त़लाक़ के बाद इद्दत व रुजूअ़ के चन्द अह़काम
- रजई त़लाक़ों की तादाद

ह़ाशिया

①...येह क़सम खाना कि मैं अपनी बीवी से चार महीने तक या कभी सोह़बत ना करूंगा इसे ईला केहते हैं। इस का हुक्म येह है कि अगर क़सम तोड़ दे और चार माह के अन्दर सोह़बत कर ले तब तो उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा वाजिब है वरना चार माह के बाद औ़रत को त़लाक़े बाइना पड़ जाएगी।

②...आयत में "2r*' के लफ़्ज़ से येह भी मालूम हुवा कि त़लाक़े रजई में रुजूअ़ के लिए औ़रत की मरज़ी ज़रूरी नहीं सिर्फ़ मर्द का रुजूअ़ काफ़ी है। हां, जुल्म करने और औ़रत से अपने इन्तेक़ाम की आग बुझाने के लिए रुजूअ़ करना सख़्त बुरा है। अफ़्सोस कि हमारे यहां इस जेहालत की भी कमी नहीं, बीवियों को जुल्मो सितम और सुसराल से इन्तेक़ाम लेने का ज़रीआ़ बनाया जाता है ह़त्ताकि बाज़ अवक़ात तो शादी ही इस निय्यत से की जाती है और बाज़ अवक़ात त़लाक़ के बाद रुजूअ़ इस बुरी निय्यत से किया जाता है।

③...अच्छे त़रीक़े से रोकने से मुराद रुजूअ़ कर के रोक लेना और अच्छे त़रीक़े से छोड़ देने से मुराद है कि त़लाक़ दे कर इद्दत ख़त्म होने दे कि इस त़रह़ एक त़लाक़ ही बाइना हो जाती है। शरीअ़त ने त़लाक़ देने और ना देने की दोनों सूरतों में भलाई और ख़ैर ख़्वाही का फ़रमाया है, हमारे ज़माने में लोगों की एक बड़ी तादाद दोनों सूरतों में उल्टा चलती है, त़लाक़ देने में भी ग़लत़ त़रीक़ा और बीवी को रखने में भी ग़लत़ त़रीक़ा। अल्लाह पाक हिदायत अ़त़ा फ़रमाए।

يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ
حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

मगर इस सूरत में कि दोनों को अन्देशा हो कि वोह अल्लाह की हदें क़ाइम ना रख सकेंगे तो अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो कि मियां बीवी अल्लाह की हदों को क़ाइम ना कर सकेंगे तो उन पर उस (माली मुआवज़े) में कुछ गुनाह नहीं जो औरत बदले में दे कर छुटकारा हासिल कर ले, येह अल्लाह की हदें हैं, इन से आगे ना बढ़ो और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं ○

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ
فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

2:230 फिर अगर शौहर बीवी को (तीसरी) तलाक़ दे दे तो अब वोह औरत उस के लिए हलाल ना होगी जब तक दूसरे ख़ावन्द से निकाह ना करे, ① फिर वोह दूसरा शौहर अगर उसे तलाक़ दे दे तो उन दोनों पर एक दूसरे की तरफ़ लौट आने में कुछ गुनाह नहीं अगर वोह येह समझें कि (अब) अल्लाह की हदों को क़ाइम रख लेंगे और येह अल्लाह की हदें हैं जिन्हें वोह दानिश मन्दों के लिए बयान करता है ○

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ
ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

2:231 और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और वोह अपनी (इद्दत की इख़्तेतामी) मुद्दत (के क़रीब) तक पहुंच जाएं तो उस वक़्त उन्हें अच्छे तरीक़े से रोक लो या अच्छे तरीक़े से छोड़ दो और उन्हें नुक़्सान पहुंचाने के लिए ना रोक रखो ताकि तुम

उनवान

- खुल्अ का बयान
- तीन तलाक़ों के बाद औरत शरई हलाले के बग़ैर पेहले शौहर के लिए हलाल नहीं
- औरत को रखने या तलाक़ देने दोनों सूरतों में अच्छे सुलूक का हुक्म और औरतों पर जुल्म हराम होने का बयान

हाशिया

①...तीन तलाक़ें तीन महीनों में दी जाएं या एक महीने में या एक दिन में या एक निशस्त में या एक जुम्ले में बहर सूरत तीनों वाक़ेअ हो जाती हैं और औरत मर्द पर हराम हो जाती है। तीन तलाक़ों के बाद बग़ैर शरई तरीक़े के मर्द व औरत का हम बिस्तरी वग़ैरा करना सरीह हराम व नाजाइज़ है और ऐसी सुल्ह की कोशिश करवाने वाले भी गुनाह में बराबर के शरीक हैं।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ
يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ ع

(उन पर) ज़ियादती करो [1] और जो ऐसा करे तो उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और अल्लाह की आयतों को ठठ्ठा मज़ाक़ ना बना लो और अपने ऊपर अल्लाह का एह्सान याद करो और उस ने तुम पर जो किताब और हिक्मत उतारी है (उसे याद करो) इस के ज़रीए वोह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह सब कुछ जानने वाला है ○

ع ٢٩ الثانية ٣ ١٣

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ
يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ
يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾

2:232 और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की (इ़द्दत की) मुद्दत पूरी हो जाए तो ऐ औ़रतों के वालियो ! उन्हें अपने शौहरों से निकाह़ करने से ना रोको जब कि आपस में शरीअ़त के मुवाफ़िक़ रिज़ामन्द हो जाएं। येह नसीह़त उसे दी जाती है जो तुम में से अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता हो। [2] येह तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और पाकीज़ा काम है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते [3] ○

उनवान

- त़लाक़ के बाद मर्द व औ़रत दोबारा निकाह़ के लिए रिज़ामन्द हों तो कई सूरतों में सरपरस्तों को बिला वज्ह मन्अ़ करने का ह़क़ नहीं

ह़ाशिया

①...त़लाक़ वाली औ़रत की इ़द्दत ख़त्म होने से पेहले रुजूअ़ करने या ना करने का इख़्तियार है लेकिन इस इख़्तियार को ज़ुल्मो ज़ियादती का ह़ीला बनाना ममनूअ़ व नाजाइज़ है। जो इस त़रह़ करता है वोह अपनी जान पर ही ज़ुल्म करता है और येह फ़ेल सरासर अल्लाह पाक की आयतों को मज़ाक़ बनाने के मुतरादिफ़ है। ऐसे लोगों को याद रखना चाहिए कि काइनात में बीवियों पर ज़ुल्मो सितम और अह़कामे शरइ़या की मुख़ालेफ़त को और कोई ना भी जानता हो लेकिन अल्लाह पाक तो यक़ीनन जानता है और उस की बारगाह में तो जवाब देना ही पड़ेगा।

②...जब किसी औ़रत की इ़द्दत गुज़र जाए और इ़द्दत के बाद वोह औ़रत किसी से निकाह़ का इरादा करे ख़्वाह वोह कोई नया आदमी हो या वोही हो जिस ने (रजई या तीन से कम बाइना) त़लाक़ दी थी तो अगर वोह मर्द व औ़रत आपस में रिज़ामन्द हैं तो औ़रत के सरपरस्तों को बिला वज्ह मन्अ़ करने का ह़क़ नहीं।

③...यानी इस हुक्म पर अ़मल करना तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकीज़गी व त़हारत का बाइ़स है क्यूंकि बाज़ अवक़ात साबेक़ा तअ़ल्लुक़ात की वज्ह से औ़रतें ग़लत़ क़दम भी उठा लेती हैं जो बाद में सब के लिए परेशानी का बाइ़स बनता है, इस लिए औ़रतों को मज़ीद निकाह़ से बिला वज्ह मन्अ़ ना करो।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ
اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَ
كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى
الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ
مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ
تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ
اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

2:233 और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं ① (येह हुक्म) उस के लिए (है) जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे और बच्चे के बाप पर रवाज के मुताबिक़ औरतों के खाने और पेहनने की ज़िम्मेदारी है। किसी जान पर उतना ही बोझ रखा जाएगा जितनी उस की ताक़त हो। मां को उस की औलाद की वज्ह से तक्लीफ़ ना दी जाए और ना बाप को उस की औलाद की वज्ह से तक्लीफ़ दी जाए ② और जो बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही (हुक्म) है ③ फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रिज़ामन्दी और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि (दूसरी औरतों से) अपने बच्चों को दूध पिलवाओ तो भी तुम पर कोई मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो मुआवज़ा देना तुम ने मुक़र्रर किया हो वोह भलाई के साथ अदा कर दो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है ○

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ
بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ

2:234 और तुम में से जो मर जाएं और बीवियां छोड़ें तो वोह बीवियां चार महीने और दस दिन अपने आप को रोके रहें ④ तो जब वोह अपनी (इख़्तेतामी) मुद्दत को पहुंच जाएं तो ऐ वालियो !

उनवान

- बच्चे को दूध पिलाने से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई अह़काम
- फ़ौतशुदा आदमी की बीवी की इद्दत का बयान

ह़ाशिया

①...बच्चे को दूध पिलाने से मुतअ़ल्लिक़ अह़काम की तफ़्सीली मालूमात ह़ासिल करने के लिए तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़ह़ा 357 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

②...मां को ज़रर देना येह है कि जिस सूरत में उस पर दूध पिलाना ज़रूरी नहीं उस में उसे दूध पिलाने पर मजबूर किया जाए और बाप को ज़रर देना येह है कि उस की त़ाक़त से ज़ियादा उस पर ज़िम्मेदारी डाली जाए। या आयत का येह माना है कि ना मां बच्चे को तक्लीफ़ दे और ना बाप। मां का बच्चे को ज़रर देना येह है कि उस को वक़्त पर दूध ना दे और उस की निगरानी ना रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बाद छोड़ दे और बाप का बच्चे को ज़रर देना येह है कि मानूस बच्चे को मां से छीन ले या मां के ह़क़ में कोताही करे जिस से बच्चे को नुक़्सान पहुंचे।

③...अगर बाप फ़ौत हो गया हो तो जो ज़िम्मेदारियां बाप पर होती हैं वोह अब इस के क़ाइम मक़ाम पर होंगी।

④...इस आयत में फ़ौतशुदा आदमी की बीवी की इद्दत का बयान है कि बीवी की इद्दत 4 माह 10 दिन है। येह इस सूरत में है जब कि शौहर का इन्तेक़ाल चांद की पेहली तारीख़ को हुवा हो वरना औरत 130 दिन पूरे करेगी। मज़ीद तफ़्सील तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़ह़ा 359 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾

तुम पर उस काम में कोई ह़रज नहीं जो औ़रतें अपने मुआ़मले में शरीअ़त के मुत़ाबिक़ कर लें ① और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है ○

وَ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَ لٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ؕ وَ لَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾ ع

2:235 और तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं जो इशारे किनाए से तुम औ़रतों को निकाह़ का पैग़ाम दो या अपने दिल में छुपा रखो। अल्लाह को मालूम है कि अब तुम उन का तज़किरा करोगे लेकिन उन से ख़ुफ़िया वादा ना कर रखो मगर येह कि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ कोई बात केह लो और अ़क़्दे निकाह़ को पुख़्ता ना करना जब तक (इ़द्दत का) लिखा हुवा (हुक्म) अपनी (इख़्तेतामी) मुद्दत को ना पहुंच जाए और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की जानता है तो उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, ह़िल्म वाला है ② ○

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَ عَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ

2:236 अगर तुम औ़रतों को त़लाक़ दे दो तो जब तक तुम ने उन को छुवा ना हो या कोई महेर ना मुक़र्रर कर लिया हो तब तक तुम पर कुछ मुत़ालबा नहीं ③ और उन को (एक जोड़ा) बरतने को दो। मालदार पर उस की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ और तंगदस्त पर उस की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ देना लाज़िम है।

उ़नवान

- इ़द्दते वफ़ात गुज़ारने वाली औ़रत के साथ निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ शरई अह़काम
- औ़रत के ह़क़्क़े महेर से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई अह़काम

ह़ाशिया

①...इस से मालूम हुवा कि औ़रतों को शरीअ़त के दाइरे में रेहते हुवे अपने मुआ़मलात का फ़ैसला करने का इख़्तियार है और वोह ख़ुद भी अपना निकाह़ कर सकती हैं अलबत्ता मश्वरे से चलना बहर ह़ाल बेहतर है।

②...वफ़ात की इ़द्दत गुज़ारने वाली औ़रत से निकाह़ करना या निकाह़ का ख़ुला पैग़ाम देना या निकाह़ का वादा कर लेना तो ह़राम है लेकिन पर्दे के साथ ख़्वाहिशे निकाह़ का इज़्हार गुनाह नहीं मसलन येह कहे कि तुम बहुत नेक औ़रत हो, या अपना इरादा दिल ही में रखे और ज़बान से किसी त़रह़ ना कहे, येह भी गुनाह नहीं।

③...इस आयत से महेर के चन्द मसाइल बयान किए जा रहे हैं, इन की तफ़्सील जानने के लिए तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़ह़ा 361 ता 363 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

مَتَاعًا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

शरई दस्तूर के मुताबिक़ उन्हें फ़ाएदा पहुंचाओ, [1] येह भलाई करने वालों पर वाजिब है ○

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

2:237 और अगर तुम औरतों को उन्हें छूने से पेहले तलाक़ दे दो और तुम उन के लिए कुछ महेर भी मुक़र्रर कर चुके हो तो जितना तुम ने मुक़र्रर किया था उस का आधा वाजिब है मगर येह कि औरतें कुछ महेर मुआफ़ कर दें या वोह (शौहर) ज़ियादा दे दे जिस के हाथ में निकाह की गिरह है और ऐ मर्दो ! तुम्हारा ज़ियादा देना परहेज़गारी के ज़ियादा नज़दीक है [2] और आपस में एक दूसरे पर एहसान करना ना भूलो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है [3] ○

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾

2:238 तमाम नमाज़ों की पाबन्दी करो और खुसूसन दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के हुज़ूर अदब से खड़े हुवा करो ○

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ

2:239 फिर अगर तुम ख़ौफ़ की हालत में हो तो पैदल या सवार (जैसे मुमकिन हो नमाज़

उनवान

- तलाक़ के बाद भी आपस में दुश्मनियां पालने की मुमानेअत
- उमूमी तौर पर तमाम नमाज़ों और बतौरे ख़ास नमाज़े अस्र की पाबन्दी करने की ताकीद
- ख़ौफ़ की हालत में नमाज़ का शरई हुक्म और इस का तरीक़ा

हाशिया

①...इन आयात से मालूम हुवा कि इल्मे फ़िक़्ह बहुत फ़ज़ीलत और अहमियत का हामिल है क्यूंकि इस में इबादात के साथ साथ मुआमलात जैसे निकाह, हक़्क़े महेर और तलाक़ वग़ैरा से मुतअल्लिक़ भी शरई अहकाम बयान किए जाते हैं।

②...औरत की तरफ़ से मुआफ़ी येह है कि वोह आधे महेर से कुछ या पूरा ही छोड़ दे। शौहर की तरफ़ से मुआफ़ी येह है कि वोह पूरा महेर अदा कर चुका हो तो बक़िया आधा वापस ना ले और ज़ियादा देने की सूरत येह है कि आधा देने की बजाए पूरा महेर दे दे।

③...तलाक़ का मुआमला इतना शदीद होता है कि उमूमन दोनों फ़रीक़ जज़्बए इन्तेक़ाम में अन्धे होते हैं और एक दूसरे को जान से मार देने के ख़्वाहिश मन्द होते हैं लेकिन अल्लाह पाक यहां पर भी आपस में हुस्ने सुलूक का हुक्म फ़रमा रहा है और इस में भी खुसूसन मर्द को ज़ियादा ताकीद है क्यूंकि ज़ियादा ईज़ा आम तौर पर मर्द और उस के ख़ानदान की तरफ़ से होती है।

كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

पढ़ लो)[1] फिर जब हालते इत्मीनान में हो जाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम ना जानते थे ○

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖ۬ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

2:240 और जो तुम में मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं वोह अपनी औरतों के लिए (उन्हें घरों से) निकाले बग़ैर साल भर तक ख़र्चा देने की वसिय्यत कर जाएं[2] फिर अगर वोह खुद निकल जाएं तो तुम पर इस मुआमले में कोई गिरफ़्त नहीं जो वोह अपने बारे में शरीअ़त के मुताबिक़ करें और अल्लाह ज़बरदस्त,[3] हिक्मत वाला है ○

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

2:241 और तलाक़ वाली औरतों के लिए भी शरई दस्तूर के मुताबिक़ ख़र्चा है,[4] येह परहेज़गारों पर वाजिब है ○

ع ١٥ ٣١

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾

2:242 अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल कर बयान करता है ताकि तुम समझो ○

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ

2:243 ऐ हबीब ! क्या तुम ने उन लोगों को ना देखा था जो मौत के डर से हज़ारों की तादाद में अपने घरों से निकले

उनवान

- एक मन्सूख़ हुक्म कि मरने वाले के लिए बीवी को साल भर का नफ़्क़ा देने की वसिय्यत ज़रूरी है
- तलाक़ की इद्दत में औरत को नान नफ़्क़ा देना शौहर पर लाज़िम है
- तलाक़ और इद्दत के अहकाम बयान करने का मक़्सद
- मौत से डर कर भागने वाली बनी इसराईल की एक जमाअ़त का वाक़िआ़

हाशिया

①...यहां दुश्मन या दरिन्दे वग़ैरा के ख़ौफ़ की हालत में नमाज़ का हुक्म और तरीक़ा बयान किया गया है, अगर ख़ौफ़ की ऐसी सूरत हो कि एक जगह ठेहरना ना मुमकिन हो जाए तो पैदल चलते हुवे या सवारी पर जैसे भी मुमकिन हो नमाज़ पढ़ लो।

②...इब्तेदा ए इस्लाम में बेवा की इद्दत एक साल थी और इस एक साल में वोह शौहर के घर रेह कर नानो नफ़्क़ा पाने की मुस्तहिक़ होती थी, फिर एक साल की इद्दत तो सूरए बक़रह की आयत 234 से मन्सूख़ हुई और साल भर का नफ़्क़ा सूरए निसा की आयत नम्बर 12 यानी आयते मीरास से मन्सूख़ हुवा।

③...अरबी लफ़्ज़ "عَزِيْزٌ" इ़ज़्ज़त से बना है, येह मुख़्तलिफ़ माना में इस्तेमाल होता है, जैसे इ़ज़्ज़त वाला, ग़ल्बे वाला और ज़बरदस्त वग़ैरा।

④...यहां आयत में येह बयान किया गया है कि तलाक़ की इद्दत में शौहर पर औरत को नान नफ़्क़ा देना लाज़िम है। तफ़्सील के लिए बहारे शरीअ़त, जिल्द 2 हिस्सा 8 से "नफ़्क़े का बयान" मुतालआ़ फ़रमाएं।

حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾

तो अल्लाह ने उन से फ़रमाया : मर जाओ ① फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया, बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते ○

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾

2:244 और अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है ○

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾

2:245 है कोई जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे ② तो अल्लाह उस के लिए उस क़र्ज़ को बहुत गुना बढ़ा दे और अल्लाह तंगी देता है और वुस्अ़त देता है और तुम उसी की त़रफ़ लौटाए जाओगे ○

وقف لازم

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ

2:246 ऐ ह़बीब ! क्या तुम ने बनी इसराईल के एक गिरोह को ना देखा जो मूसा के बाद हुवा, ③ जब उन्हों ने अपने एक नबी से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें, उस नबी ने फ़रमाया : क्या ऐसा तो नहीं होगा कि अगर तुम पर जेहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर तुम जेहाद ना करो ? उन्हों ने कहा : हमें क्या हुवा कि हम अल्लाह की राह में ना लड़ें

उ़नवान

- राहे ख़ुदा में जेहाद करने का हुक्म
- राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करने की तरग़ीब और ख़र्च करने का समरा
- ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बाद बनी इसराईल पर जेहाद की फ़र्ज़िय्यत और क़ौम का त़र्ज़े अ़मल

ह़ाशिया

①...इस वाक़िए़ से मालूम हुवा कि आदमी मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचा सकता तो भागना बेकार है, जो मौत मुक़द्दर है वोह ज़रूर पहुंचेगी। आदमी को चाहिए कि रिज़ा ए इलाही पर राज़ी रहे।

②...राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करने को क़र्ज़ से ताबीर फ़रमाया, येह अल्लाह पाक का कमाल दर्जे का लुत़्फ़ो करम है क्यूंकि बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा है, ह़क़ीक़ी मालिक वोही जबकि बन्दा उस की अ़त़ा से मजाज़ी मिल्क (मालिकी) रखता है लेकिन फिर भी मजाज़ी मिल्क वाले के देने को क़र्ज़ से ताबीर फ़रमाया है।

③...जेहाद का हुक्म देने के बाद अब जेहाद की हिम्मत व हौसला पैदा करने वाला एक वाक़िआ़ बहुत सी दिलचस्प तफ़्सीलात के साथ बयान किया जा रहा है।

دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۴۶﴾

हालांकि हमें हमारे वतन और हमारी औलाद से निकाल दिया गया है ① तो फिर जब उन पर जेहाद फ़र्ज़ किया गया तो उन में से थोड़े से लोगों के इलावा (बक़िय्या) ने मुंह फेर लिया और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है ○

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۴۷﴾

2:247 और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह ने त़ालूत को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया है। ② वोह केहने लगे : उसे हमारे ऊपर कहां से बादशाही ह़ासिल हो गई ह़ालांकि हम उस से ज़ियादा सल्त़नत के मुस्तह़िक़ हैं और उसे माल में भी वुस्अ़त नहीं दी गई। उस नबी ने फ़रमाया : उसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया है और उसे इ़ल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी है और अल्लाह जिस को चाहे अपना मुल्क दे और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है ○

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ

2:248 और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : उस की बादशाही की निशानी येह है कि तुम्हारे पास वोह ताबूत आ जाएगा जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है और मोअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मोअ़ज़्ज़ज़ हारून ③ की छोड़ी हुई

उ़नवान

- त़ालूत को बनी इसराईल का बादशाह बनाए जाने का वाक़िआ़।

ह़ाशिया

①...इस वाक़िए़ से येह भी मालूम हुवा कि जब क़ौम की एतेक़ादी और अ़मली ह़ालत ख़राब हो जाती है तो उन पर ज़ालिमो जाबिर क़ौमों को मुसल्लत़ कर दिया जाता है। इस आयत को सामने रख कर पूरी दुन्या के मुस्लिम ममालिक की एतेक़ादी व अ़मली ह़ालत को देखा जाए तो ऊपर का नक़्शा बड़ा वाज़ेह़ तौ़र पर नज़र आएगा। कुरआन के इस त़रह़ के वाक़िआ़त बयान करने का मक़्सद सिर्फ़ तारीख़ी वाक़िआ़त बताना नहीं बल्कि इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल करने की त़रफ़ लाना है।

②...अ़रबी लफ़्ज़ "بَعَثَ" का लुग़्वी माना है किसी चीज़ को खड़ा करना जबकि मुख़्तलिफ़ क़राइन के एतेबार से इस के माना बदलते रेहते हैं, यहां येह लफ़्ज़ भेजने और मुक़र्रर करने के माना में है।

③...बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि ताबूत में ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام के उम्मती उ़लमा के तबर्रुकात थे, लेहाज़ा आल से मुराद वोही उ़लमा हैं जबकि बाज़ ने फ़रमाया कि ताबूत में ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام के अपने तबर्रुकात थे और आल बत़ौरे ताज़ीम के उन्ही के लिए इस्तेमाल हुवा है।

ع ٣٢ ١٦ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

चीज़ों का बक़िय्या है, [1] फ़रिश्ते उसे उठाए हुवे होंगे। बेशक उस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो ○

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ ۙ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ
فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي ۚ وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ
مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۙ قَالُوا لَا طَاقَةَ
لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم
مُّلَاقُو اللَّهِ ۙ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ
اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾

2:249 फिर जब तालूत लश्करों को ले कर शेहर से जुदा हुवा तो उस ने कहा : बेशक अल्लाह तुम्हें एक नेहर के ज़रीए आज़माने वाला है [2] तो जो उस नेहर से पानी पिएगा वोह मेरा नहीं है और जो ना पिएगा वोह मेरा है सिवाए उस के जो एक चुल्लू अपने हाथ से भर ले तो उन में से थोड़े से लोगों के इलावा सब ने उस नेहर से पानी पी लिया फिर जब तालूत और उस के साथ वाले मुसलमान नेहर से पार हो गए तो उन्हों ने कहा : हम में आज जालूत और उस के लश्करों के साथ मुक़ाबले की ताक़त नहीं है। (लेकिन) जो अल्लाह से मिलने का यक़ीन रखते थे उन्हों ने कहा : बहुत दफ़्आ छोटी जमाअत अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आई है [3] और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है ○

उनवान

- सफ़रे जेहाद के दौरान तालूत के लश्करियों की एक नेहर के पानी से आज़माइश

हाशिया

①...इस से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक के प्यारों से निस्बत रखने वाली हर चीज़ बा बरकत होती है जैसे ताबूत में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के नालैन शरीफ़ैन यानी पाउं में पेहनने के जोड़े भी बरकत का ज़रीआ थे।

②...इस वाक़िए से येह हिक्मत भी मालूम हुई कि जेहाद से पेहले आज़्माइश कर लेना बेहतर है। ऐन वक़्त पर कोई बुज़दिली दिखाए तो इस का नतीजा अच्छा नहीं होता। हालते अम्न में फ़ौज की तरबियत और मेहनत व मशक़्क़त इसी मक़्सद के लिए होती है नीज़ येह भी मालूम हुवा कि किसी बड़े इम्तेहान से पेहले छोटे इम्तेहान से गुज़र लेना चाहिए कि इस से दिल में क़ुव्वत पैदा होती है।

③...इख़्लास, जज़्बा और हिम्मत अल्लाह पाक की मदद हासिल करने का ज़रीआ हैं और इस्लामी तारीख़ में छोटे गिरोह के बड़े गिरोह पर ग़ालिब आने की बहुत सी मिसालें मौजूद हैं, जैसे ग़ज़्वए बद्र में 313 की क़लील तादाद में मुसलमान 1000 के क़रीब कुफ़्फ़ार के बड़े गिरोह पर ग़ालिब आए, जंगे यरमूक में 50000 के क़रीब मुसलमानों का लश्कर कुफ़्फ़ार के दस लाख के बड़े लश्कर पर ग़ालिब आया।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾

2:250 फिर जब वोह जालूत और उस के लश्करों के सामने आए तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ हमारे रब ! हम पर सब्र डाल दे और हमें साबित क़दमी अ़ता फ़रमा और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा [2] ○

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾

2:251 तो उन्हों ने अल्लाह के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया और दावूद ने जालूत को क़त्ल कर दिया और अल्लाह ने उसे सल्तनत और हिक्मत अ़ता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखा दिया और अगर अल्लाह लोगों में एक के ज़रीए दूसरे को दफ़्अ़ ना करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए [2] मगर अल्लाह सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है ○

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

2:252 येह अल्लाह की आयतें हैं जो ऐ ह़बीब ! हम आप के सामने ह़क़ के साथ पढ़ते हैं और बेशक तुम रसूलों में से हो ○

उ़नवान

- जालूत और इस के लश्कर से मुक़ाबले के वक़्त सब्र, साबित क़दमी और मदद की दुआ़
- जालूत और इस के लश्कर की शिकस्त, जालूत का क़त्ल और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को बादशाही, हिक्मत और इ़ल्म अ़ता होना
- जेहाद की एक हिक्मत ज़मीन में फ़साद को रोकना
- नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत की दलील

ह़ाशिया

①...इस से मालूम हुवा कि दुश्मन से जंग के दौरान सिर्फ़ ज़ाहिरी अस्बाब पर ही भरोसा नहीं करना चाहिए बल्कि अल्लाह पाक की बारगाह में सब्र, साबित क़दमी और दुश्मनों के ख़िलाफ़ मदद की दुआ़ भी करनी चाहिए ताकि ज़ाहिरी अस्बाब के साथ अल्लाह पाक की मदद भी शामिले ह़ाल हो।

②...यहां जेहाद की हिक्मत का बयान है कि जेहाद में हज़ारों मस्लेह़तें हैं, अगर घास ना काटी जाए तो खेत बरबाद हो जाए, अगर ऑपरेशन के ज़रीए फ़ासिद मवाद ना निकाला जाए तो बदन बिगड़ जाए, अगर चोर डाकू ना पकड़े जाएं तो अम्न बरबाद हो जाए। ऐसे ही जेहाद के ज़रीए मग़रूरों, बाग़ियों और सरकशों को दबाया ना जाए तो अच्छे लोग जी ना सकें।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ
اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ
الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا اقْتَتَلُوْا ۫ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۲۵۳﴾ ع

2:253 येह रसूल हैं [1] हम ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई, इन में किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया और कोई वोह है जिसे सब पर दरजों बुलन्दी अ़ता फ़रमाई [2] और हम ने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दीं और पाकीज़ा रूह़ से उस की मदद की और अगर अल्लाह चाहता तो उन के बाद वाले आपस में ना लड़ते जब कि उन के पास खुली निशानियां आ चुकी थीं लेकिन उन्हों ने आपस में इख़्तेलाफ़ किया तो उन में कोई मोमिन रहा और कोई काफ़िर हो गया अगर अल्लाह चाहता तो वोह ना लड़ते मगर अल्लाह जो चाहता है करता है [3] ○

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَ
الْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۵۴﴾

2:254 ऐ ईमान वालो ! हमारे दिए हुवे रिज़्क़ में से अल्लाह की राह में उस दिन के आने से पेहले ख़र्च कर लो जिस में ना कोई ख़रीदो फ़रोख़्त होगी और ना काफ़िरों के लिए दोस्ती और ना शफ़ाअ़त होगी [4] और काफ़िर ही ज़ालिम हैं [5] ○

उनवान

- अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की अ़ज़मतो शान और तीन अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के ख़ुसूसी फ़ज़ाइल
- अल्लाह पाक जो चाहता है करता है
- राहे ख़ुदा में माल ख़र्च कर के आख़ेरत की तैयारी का हुक्म

हाशिया

①...अ़रबी लफ़्ज़ "اَلرُّسُل" रसूल की जम्अ़ है।

②...अस्ले नबुव्वत यानी नबी होने में तो तमाम अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام बराबर हैं अलबत्ता उन के दरजात में फ़र्क़ है, बाज़ बाज़ से आला हैं और हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से आला हैं।

③...अल्लाह पाक जो चाहता है करता है, उस के मुल्क में उस के इरादे के ख़िलाफ़ कोई कुछ नहीं कर सकता और येही ख़ुदा की शान है। हमें येह हुक्म है कि अल्लाह पाक के हुक्म पर सरे तस्लीम ख़म करें और जो उस ने फ़रमाया है उस के मुताबिक़ अ़मल करें।

④...क़ियामत के दिन वोही माल काम आएगा जिसे दुन्या में नेक कामों में ख़र्च किया होगा और यूंही सिर्फ़ नेक दोस्त काम आएंगे, और शफ़ाअ़त भी अल्लाह पाक की इजाज़त से होगी और वोह भी सिर्फ़ मुसलमानों के लिए।

⑤...ज़ुल्म के माना हैं किसी चीज़ को ग़लत़ जगह इस्तेमाल करना। काफ़िरों का ईमान की जगह कुफ़्र और त़ाअ़त की जगह मासियत और शुक्र की जगह ना शुक्री को इख़्तियार करना उन का ज़ुल्म है और चूंकि यहां ज़ुल्म का सब से बदतर दरजा मुराद है इसी लिए फ़रमाया कि काफ़िर ही ज़ालिम हैं।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ
لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا
الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ
وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ
وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ
وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾

2:255 अल्लाह वोह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, ① वोह ख़ुद ज़िन्दा है, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है, उसे ना ऊंघ आती है और ना नींद, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में सब उसी का है। कौन है जो उस के हां उस की इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे? वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है और लोग उस के इल्म में से उतना ही हासिल कर सकते हैं जितना वोह चाहे, उस की कुरसी आस्मान और ज़मीन को अपनी वुस्अत में लिए हुवे है और इन की हिफ़ाज़त उसे थका नहीं सकती और वोही बुलन्द शान वाला, अ़ज़मत वाला है ○

لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۟ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ
فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ یُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَ اللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۵۶﴾

2:256 दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं, ② बेशक हिदायत की राह गुमराही से ख़ूब जुदा हो गई है तो जो शैत़ान को ना माने और अल्लाह पर ईमान लाए उस ने बड़ा मज़बूत़ सहारा थाम लिया जिस सहारे को कभी खुलना नहीं ③ और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है ○

उ़नवान

- आयतुल कुरसी में इलाहिय्यात के आला मसाइल का बयान
- दीन मनवाने में कोई ज़बरदस्ती नहीं
- क़ुरआने मजीद से हिदायत और गुमराही पूरी त़रह़ ज़ाहिर हो चुकी
- इस्लाम पर मज़बूत़ी से क़ाइम रेहने के लिए हर सरकश व गुमराह से बचना ज़रूरी है

हाशिया

①...येह आयत "आयतुल कुरसी" के नाम से मश्हूर है, इस में रब्बे करीम की ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ इन्तेहाई आला मसाइल का बयान है और इस में जितना ग़ौर करते जाएं अल्लाह पाक की अ़ज़मत और उस के बारे में अ़क़ाइद उतना ही वाज़ेह़ होते जाएंगे।

②...याद रहे कि किसी काफ़िर को जब्रन मुसलमान बनाना जाइज़ नहीं मगर इस्लाम से निकलने से मुसलमान को जब्री रोका जाएगा क्यूंकि इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र इख़्तियार करना दीने इस्लाम की तौहीन और दूसरों के लिए बग़ावत का रास्ता है जिसे बन्द करना ज़रूरी है।

③...हर सरकश और गुमराह को त़ाग़ूत कहा जाता है। शैत़ान, काहिन, जादूगर और बुत वग़ैरा सब पर ही येह लफ़्ज़ बोला जाता है। यहां आयत में त़ाग़ूत से बचने का फ़रमाया गया क्यूंकि इस्लाम पर मज़बूत़ी से वोही क़ाइम रेह सकता है जो बे दीनों की सोह़बत, उन की उल्फ़त, उन की किताबें देखने, उन के वाज़ सुनने से दूर रहे और जो अपने ईमान की रस्सी पर ख़ुद ही छुरियां चलाएगा उस की रस्सी का कटने से बचना मुश्किल है।

اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۙ یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ؕ۬ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ
یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓىٕكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۠(۲۵۷) ع ۳۴ ۲

2:257 अल्लाह मुसलमानों का वाली है इन्हें अंधेरों से नूर की तरफ़ निकालता है ① और जो काफ़िर हैं उन के हिमायती शैतान हैं वोह उन्हें नूर से अंधेरों की तरफ़ निकालते हैं। येही लोग दोज़ख़ वाले हैं, येह हमेशा उस में रहेंगे ○

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ
الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۙ
قَالَ اَنَا اُحْیٖ وَ اُمِیْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ
یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ
فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ۚ(۲۵۸)

وقف لازم

2:258 ऐ हबीब ! क्या तुम ने उस को ना देखा था जिस ने इब्राहीम से उस के रब के बारे में इस बिना पर झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी है, जब इब्राहीम ने फ़रमाया : मेरा रब वोह है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है। उस ने कहा : मैं भी ज़िन्दगी देता हूं और मौत देता हूं। इब्राहीम ने फ़रमाया : तो अल्लाह सूरज को मशरिक़ से लाता है पस तू उसे मग़रिब से ले आ। तो उस काफ़िर के होश उड़ गए② और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता ○

اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰى قَرْیَةٍ وَّ هِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ
اَنّٰى یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ
ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ یَوْمًا اَوْ بَعْضَ
یَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَ

2:259 या (क्या तुम ने) उस शख़्स को (ना देखा) जिस का एक बस्ती पर गुज़र हुवा और वोह बस्ती अपनी छतों के बल गिरी पड़ी थी ③ तो उस शख़्स ने कहा : अल्लाह इन्हें इन की मौत के बाद कैसे ज़िन्दा करेगा ? तो अल्लाह ने उसे सौ साल मौत की हालत में रखा फिर उसे ज़िन्दा किया, (फिर उस शख़्स से) फ़रमाया : तुम यहां कितना अर्सा ठेहरे हो ? उस ने अर्ज़ की : मैं एक दिन या एक दिन से भी कुछ कम

उनवान

- मुसलमानों का वाली अल्लाह पाक है और काफ़िरों के हिमायती शयातीन हैं
- हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का नमरूद बादशाह से मुनाज़रा
- हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात और आप को दोबारा ज़िन्दा किए जाने का वाक़िआ

हाशिया

①...अ़रबी लफ़्ज़ "ظُلُمَات" से कुफ़्र और "نُوْر" से ईमान मुराद है और कुफ़्र की चूंकि सेंकड़ों क़िस्में हैं जबकि इस्लाम एक ही दीन है, इस लिए यहां "نُوْر" को वाहिद और "ظُلُمَات" को जम्अ़ ज़िक्र किया गया है।

②...इस आयत से अ़क़ाइद में मुनाज़रा करने का सुबूत होता है और येह सुन्नते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام है, लेहाज़ा मुनाज़रा करना बुरा नहीं है अलबत्ता इस में जो तकब्बुर व सरकशी और ह़क़ को क़बूल ना करने का पेहलू दाख़िल हो गया है वोह बुरा है और इसी सूरत की उ़लमा ए किराम मज़म्मत बयान करते हैं।

③...अक्सर मुफ़स्सिरीन के बक़ौल इस आयत में बयान किया गया वाक़िआ़ हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का है और बस्ती से बैतुल मुक़द्दस मुराद है।

شَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ ۗ وَلِنَجْعَلَكَ
اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا
لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿۲۵۹﴾

वक़्त ठेहरा होऊंगा। अल्लाह ने फ़रमाया : (नहीं) बल्कि तू यहां सौ साल ठेहरा है और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बदबूदार नहीं हुवा और अपने गधे को देख (जिस की हड्डियां तक सलामत ना रहीं) और येह (सब) इस लिए (किया गया है) ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें और इन हड्डियों को देख कि हम कैसे इन्हें उठाते (ज़िन्दा करते) हैं फिर इन्हें गोश्त पेहनाते हैं तो जब येह मुआ़मला उस पर ज़ाहिर हो गया तो वोह बोल उठा : मैं ख़ूब जानता हूं कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ○

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ
اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ؕ قَالَ
فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ
جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ
اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶۰﴾
ع ٣٥ ٣

2:260 और जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तू मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस त़रह़ ज़िन्दा फ़रमाएगा ? अल्लाह ने फ़रमाया : क्या तुझे यक़ीन नहीं ? इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : यक़ीन क्यूं नहीं मगर येह (चाहता हूं) कि मेरे दिल को क़रार आ जाए।① अल्लाह ने फ़रमाया : तो परिन्दों में से कोई चार परिन्दे पकड़ लो फिर उन्हें अपने साथ मानूस कर लो फिर उन सब का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दो फिर उन्हें पुकारो तो वोह तुम्हारे पास दौड़ते हुवे चले आएंगे और जान रखो कि अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है② ○

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ

2:261 उन लोगों की मिसाल जो अपने माल अल्लाह की राह में

उ़न्वान

- हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और चार परिन्दों को ज़िन्दा किए जाने का वाक़िआ़
- राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने वालों की एक मिसाल

ह़ाशिया

①...इस आयत में मुर्दों को ज़िन्दा करने के बारे में अल्लाह पाक की अ़ज़ीम क़ुदरत पर दलालत करने वाला एक और वाक़िआ़ बयान किया जा रहा है। इस की तफ़्सील जानने के लिए तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़्ह़ा 393 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

②...इस से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक की बारगाह में अम्बिया ओ मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام का मर्तबा बहुत बुलन्द है कि अल्लाह पाक उन की ख़्वाहिशात पूरी फ़रमाता, उन की दुआ़एं क़बूल करता, यहां तक कि उन की दुआ़ओं से मुर्दे भी ज़िन्दा फ़रमा देता है।

اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾

खर्च करते हैं [1] उस दाने की तरह है जिस ने सात बालियां उगाईं, हर बाली में सौ दाने हैं और अल्लाह इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिए चाहे और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है [2] ○

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾

2:262 वोह लोग जो अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फिर अपने खर्च करने के बाद ना एहसान जताते हैं और ना तक्लीफ़ देते हैं [3] उन का इन्आ़म उन के रब के पास है और उन पर ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वोह ग़मगीन होंगे ○

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾

2:263 अच्छी बात केहना और मुआ़फ़ कर देना उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बाद सताना हो और अल्लाह बे परवाह, हिल्म वाला है ○

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ

2:264 ऐ ईमान वालो ! एहसान जता कर और तक्लीफ़ पहुंचा कर अपने सदक़े बरबाद ना कर दो [4] उस शख़्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे के लिए खर्च करता है

उ़नवान

- सदक़ा क़बूल होने की दो शराइ़त : एहसान ना जताना और तक्लीफ़ ना देना
- सदक़ा दे कर तक्लीफ़ पहुंचाने से बेहतर अच्छी बात केह देना है
- एहसान जता कर और तक्लीफ़ दे कर सदक़ात का सवाब बातिल करने की मुमानेअ़त
- रियाकारी के तौ़र पर सदक़ा करने वालों की मिसाल

हाशिया

①...इस आयत में वाजिब या नफ़्ल की क़ैद के बग़ैर खर्च करने का फ़रमाया गया है नीज़ नेकी की तमाम सूरतों में खर्च करना राहे खुदा में खर्च करना है जैसे किसी आ़लिम या तालिबे इल्म की मदद करना, ग़रीब को खाना, कपड़े, दवाई या राशन वग़ैरा दिला देना।

②...याद रहे कि नेक आमाल तो यक्सां होते हैं मगर इख़्लास, हुस्ने निय्यत और निस्बत वग़ैरा में फ़र्क़ की वज्ह से बाज़ अवक़ात सवाब में बहुत फ़र्क़ होता है।

③...सदक़ा देने के बाद एहसान जतलाना और जिसे सदक़ा दिया उसे तक्लीफ़ देना ना जाइज़ व ममनूअ़ है। एहसान जतलाना तो येह है कि देने के बाद दूसरों के सामने इज़हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किए और यूं उस का दिल मैला करें और तक्लीफ़ देना येह है कि उस को आ़र दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था हम ने तेरी ख़बरगीरी की या और तरह उस पर दबाव डालें।

④...अगर साइल को कुछ ना दिया जाए तो उस से खुश खुल्क़ी से अच्छी बात कही जाए जो उसे ना गवार ना गुज़रे और अगर वोह सवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दरगुज़र किया जाए। साइल को कुछ ना देने की सूरत में उस से अच्छी बात केहना और उस की ज़ियादती को मुआ़फ़ कर देना उस सदक़े से बेहतर है जिस के बाद उसे आ़र दिलाई जाए या एहसान जताया जाए या किसी दूसरे तरीक़े से उसे कोई तक्लीफ़ पहुंचाई जाए।

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶۴﴾

और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान नहीं लाता तो उस की मिसाल ऐसी है जैसे एक चिकना पथ्थर हो जिस पर मिट्टी है तो उस पर ज़ोरदार बारिश पड़ी जिस ने उसे साफ़ पथ्थर कर छोड़ा, ऐसे लोग अपने कमाए हुवे आमाल से किसी चीज़ पर क़ुदरत ना पाएंगे [1] और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता ○

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾

2:265 और जो लोग अपने माल अल्लाह की ख़ुशनूदी चाहने के लिए और अपने दिलों को साबित क़दम रखने के लिए ख़र्च करते हैं उन की मिसाल उस बाग़ की सी है जो किसी ऊंची ज़मीन पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश पड़ी तो वोह बाग़ दुगना फल लाया फिर अगर ज़ोरदार बारिश ना पड़े तो हलकी सी फुवार ही काफ़ी है और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है [2] ○

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ

2:266 क्या तुम में कोई येह पसन्द करेगा कि उस के पास खजूर और अंगूरों का एक बाग़ हो जिस के नीचे नदियां बेहती हों, उस के लिए उस में हर क़िस्म के फल हों और उसे बुढ़ापा आ जाए और ह़ाल येह हो कि उस के कमज़ोर व नातुवां बच्चे हों फिर उस पर एक बगोला आए

उ़नवान

- रिज़ा ए इलाही के लिए सदक़ा करने वालों की मिसाल
- रियाकारी के तौ़र पर सदक़ा करने वालों के लिए दिल हिला देने वाली मिसाल

ह़ाशिया

①...अ़लानिया और पोशीदा दोनों त़रह़ सदक़े की इजाज़त है लेकिन अपनी क़ल्बी ह़ालत पर नज़र रखना ज़रूरी है। अफ़्सोस कि हमारे यहां रियाकारी, एह़सान जतलाना और ईज़ा देना तीनों बद आमाल की भरमार है। पैसा ख़र्च कर के अपने नाम के बेनर्ज़ लगवाना या अपनी तसवीर या ख़बर छपवाना आ़म मामूल है, यूंही अगर ख़ानदान में कोई किसी की मदद कर दे तो ज़िन्दगी भर उसे दबाता रेहता है और जब दिल करे सब लोगों के सामने उसे रुस्वा कर देता है, येह निहायत बुरा है।

②...इस आयत में उन लोगों की मिसाल बयान की गई है जो ख़ालिसतन रिज़ा ए इलाही के ह़ुसूल और अपने दिलों को ईमान पर इस्तेक़ामत देने के लिए इख़्लास के साथ अ़मल करते हैं कि जिस त़रह़ बुलन्द ख़ित्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा, ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा कम हो या ज़ियादा अल्लाह पाक उस को बढ़ाता है। अल्लाह पाक की बारगाह में दिल की कैफ़िय्यत देखी जाती है ना कि फ़क़त़ माल की मिक़्दार।

فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۠ ﴿۲۶۶﴾ ع ٣٦

जिस में आग हो तो सारा बाग़ जल जाए। अल्लाह तुम से इसी त़रह़ अपनी आयतें खोल कर बयान करता है ताकि तुम ग़ौरो फ़िक्र करो[1] ○

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَ مِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَ لَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ
مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَ لَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ
وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾

2:267 ऐ ईमान वालो ! अपनी पाक कमाइयों में से और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला है (अल्लाह की राह में) कुछ ख़र्च करो और ख़र्च करते हुवे ख़ास नाक़िस माल (देने) का इरादा ना करो ह़ालांकि (अगर वोही तुम्हें दिया जाए तो) तुम उसे चश्मपोशी किए बग़ैर क़बूल नहीं करोगे[2] और जान रखो कि अल्लाह बे परवाह, ह़म्द के लाइक़ है ○

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ يَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَ اللّٰهُ
يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًا ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۖۙ ﴿۲۶۸﴾

2:268 शैत़ान तुम्हें मोह़ताजी का अन्देशा दिलाता है और बे ह़याई का हुक्म देता है[3] और अल्लाह तुम से अपनी त़रफ़ से बख़्शिश और फ़ज़्ल का वादा फ़रमाता है और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है ○

يُّؤْتِی الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ مَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِیَ

2:269 अल्लाह जिसे चाहता है ह़िक्मत देता है और जिसे ह़िक्मत दी जाए तो बेशक उसे बहुत

उनवान

- राहे ख़ुदा में पाकीज़ा और ह़लाल माल ख़र्च करने का हुक्म
- राहे ख़ुदा में नाक़िस और घटिया माल देने की मुमानेअ़त
- राहे ख़ुदा में ख़र्च करने पर मोह़ताजी से डराना शैत़ान का काम है
- इ़ल्मो ह़िक्मत की फ़ज़ीलत

ह़ाशिया

①...अल्लाहु अक्बर ! किस क़दर दिल देहला देने वाली मिसाल है। ऐ काश कि हम समझ जाएं और अपने तमाम आमाल, नमाज़, ज़िक्रो दुरूद, तिलावत व नात ख़्वानी, ह़ज्जो उ़मरह, ज़कात व सदक़ात वग़ैरा को रियाकारी की तबाहकारी से बचा लें और अपने आमाल का मुह़ासबा करना शुरूअ़ कर दें।

②...बहुत से लोग ख़ुद तो अच्छा इस्तेमाल करते हैं लेकिन जब राहे ख़ुदा में देना होता है तो ना क़ाबिले इस्तेमाल और घटिया क़िस्म का माल देते हैं। उन के लिए इस आयत में इ़ब्रत है। अगर कोई चीज़ फ़ी नफ़्सिही अच्छी है लेकिन आदमी को ख़ुद पसन्द नहीं तो उसे देने में ह़रज नहीं, ह़रज तब है जब चीज़ अच्छी ना होने की वज्ह से ना पसन्द हो।

③...शैत़ान त़रह़ त़रह़ से वस्वसे दिलाता है कि अगर तुम ख़र्च करोगे, सदक़ा दोगे तो ख़ुद फ़क़ीर व नादार हो जाओगे लेहाज़ा ख़र्च ना करो। येह शैत़ान की बहुत बड़ी चाल है कि अल्लाह पाक की राह में ख़र्च करते वक़्त इस त़रह़ के अन्देशे दिलाता है ह़ालांकि जिन लोगों के दिलों में येह वस्वसा डाला जा रहा होता है वोही लोग शादी बियाह में जाइज़ व ना जाइज़ रुसूमात पर और आ़म ज़िन्दगी में बे दरेग़ ख़र्च कर रहे होते हैं।

خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾

ज़ियादा भलाई मिल गई और अक़्ल वाले ही नसीहत मानते हैं ○

وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾

2:270 और तुम जो ख़र्च करो या कोई नज़्र मानो अल्लाह उसे जानता है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं ○

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾

2:271 अगर तुम अ़लानिया ख़ैरात दोगे तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर तुम छुपा कर फ़क़ीरों को दो तो येह तुम्हारे लिए सब से बेहतर है [1] और अल्लाह तुम से तुम्हारी कुछ बुराइयां मिटा देगा और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है ○

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۲﴾

2:272 लोगों को हिदायत दे देना तुम पर लाज़िम नहीं, [2] हां अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत दे देता है, और तुम जो अच्छी चीज़ ख़र्च करो तो वोह तुम्हारे लिए ही फ़ाएदे मन्द है और तुम अल्लाह की ख़ुशनूदी चाहने के लिए ही ख़र्च करो और जो माल तुम ख़र्च करोगे वोह तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम पर कोई ज़ियादती नहीं की जाएगी ○

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

2:273 उन फ़क़ीरों के लिए जो अल्लाह के रास्ते में रोक दिए गए,

उ़नवान

- कोई सदक़ा और नज़्र अल्लाह पाक से पोशीदा नहीं
- सदक़ा ख़ुफ़िया और अ़लानिया दोनों त़रह़ जाइज़ है
- किसी को हिदायत दे देना अल्लाह पाक के इख़्तियार में है
- रिज़ा ए इलाही के लिए सदक़ा करने का फ़ाएदा बन्दे को ही होगा
- सदक़ात के उ़म्दा मसरफ़ मोह़ताजी के बा वुजूद ना मांगने वाले ख़ुद्दार लोग हैं

ह़ाशिया

[1]...अक्सरो बेशतर आमाल में येही क़ाइदा है कि वोह ख़ुफ़िया और अ़लानिया दोनों त़रह़ जाइज़ हैं लेकिन रियाकारी के लिए अ़लानिया करना ह़राम है और दूसरों की तरग़ीब के लिए करना सवाब है। मशाइख़ व उ़लमा बहुत से आमाल अ़लानिया इसी लिए करते हैं कि उन के मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को तरग़ीब हो।

[2]...हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बशीर व नज़ीर और दाई यानी दावत देने वाले बना कर भेजे गए हैं, आप का फ़र्ज़ दावत देने से पूरा हो जाता है और इस से ज़ियादा जिद्दो जेहद आप पर लाज़िम नहीं।

ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ۫ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۷۳﴾ ع

वोह ज़मीन में चल फिर नहीं सकते। ना वाक़िफ़ उन्हें सवाल करने से बचने की वज्ह से मालदार समझते हैं।① तुम उन्हें उन की अ़लामत से पेहचान लोगे।② वोह लोगों से लिपट कर सवाल नहीं करते और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है ○

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾ وقف منزل

2:274 वोह लोग जो रात में और दिन में, पोशीदा और अ़लानिया अपने माल ख़ैरात करते हैं उन के लिए उन का अज्र उन के रब के पास है। उन पर ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वोह ग़मगीन होंगे ○

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وقف لازم

2:275 जो लोग सूद खाते हैं वोह क़ियामत के दिन ना खड़े होंगे मगर उस शख़्स के खड़े होने की त़रह़ जिसे आसेब ने छू कर पागल बना दिया हो। येह सज़ा इस वज्ह से है कि उन्हों ने कहा : ख़रीदो फ़रोख़्त भी तो सूद ही की त़रह़ है ह़ालांकि अल्लाह ने ख़रीदो फ़रोख़्त को ह़लाल किया और सूद को ह़राम किया तो जिस के पास उस के रब की त़रफ़ से नसीह़त आई फिर वोह बाज़ आ गया तो उस के लिए ह़लाल है वोह जो पेहले गुज़र चुका और उस का मुआ़मला अल्लाह के

उनवान

- पोशीदा और अ़लानिया माल ख़र्च करने वालों का अज्रो सवाब
- सूद ख़ोरों का बयान और उन का अन्जाम

ह़ाशिया

①...येह आयत एहले सुफ़्फ़ा के ह़क़ में नाज़िल हुई। इन ह़ज़रात की तादाद चार सौ के क़रीब थी, येह हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हुवे थे। यहां ना इन का मकान था और ना कुम्बा क़बीला और ना इन ह़ज़रात ने शादी की थी, इन के तमाम अवक़ात इ़बादत में सर्फ़ होते थे, रात में क़ुरआने करीम सीखना दिन में जेहाद के काम में रेहना इन का शबो रोज़ का मामूल था।

②...इन्ही ह़ज़रात की सफ़ में वोह उ़लमा व त़लबा व मुबल्लिग़ीन व ख़ादिमीने दीन दाख़िल हैं जो दीनी कामों में मशग़ूलियत की वज्ह से कमाने की फ़ुरसत नहीं पाते। येह लोग अपनी इ़ज़्ज़तो वक़ार और मुरव्वत की वज्ह से लोगों से सवाल भी नहीं करते और अपने फ़क़्र को भी छुपाते हैं जिस की वज्ह से लोग समझते हैं कि इन का गुज़ारा बहुत अच्छा हो रहा है लेकिन ह़क़ीक़त इस के बर अ़क्स होती है कि तेह़क़ीक़ करने से इन की ज़िन्दगियों का मशक़्क़त से भरपूर होना बहुत सी अ़लामात व क़राइन से मालूम हो जाएगा।

وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

सिपुर्द है और जो दोबारा ऐसी हरकत करेंगे तो वोह दोज़ख़ी हैं, वोह उस में मुद्दतों रहेंगे [1] ○

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

2:276 अल्लाह सूद को मिटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है और अल्लाह किसी नाशुक्रे, बड़े गुनहगार को पसन्द नहीं करता ○

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾

2:277 बेशक वोह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे काम किए और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का अज्र उन के रब के पास है और उन पर ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वोह ग़मगीन होंगे ○

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰٓوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

2:278 ऐ ईमान वालो ! अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह से डरो और जो सूद बाक़ी रेह गया है उसे छोड़ दो ○

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ

2:279 फिर अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो अल्लाह और अल्लाह के रसूल की तरफ़ से लड़ाई का यक़ीन कर लो और अगर तुम तौबा करो तो तुम्हारे लिए अपना अस्ल माल लेना जाइज़ है। [2]

उनवान

- अल्लाह पाक सूद को मिटाता और सदक़ा ओ ख़ैरात को ज़ियादा करता है
- बा अमल मुसलमानों का अज्रो सवाब
- मुसलमानों को अल्लाह पाक से डरने और बक़ाया सूद ना लेने का हुक्म
- सूदख़ोरों को अल्लाह पाक और उस के रसूल से जंग की शदीद वईद

हाशिया

①...सूद को हलाल समझ कर खाने वाला काफ़िर है क्यूंकि येह हरामे क़तई है और किसी भी हरामे क़तई को हलाल जानने वाला काफ़िर है और ऐसा शख़्स हमेशा जहन्नम में रहेगा और जो शख़्स सूद को हराम समझते हुवे खाए तो वोह सख़्त गुनाहगार है और अर्सए दराज़ तक जहन्नम में रहेगा।

②...येह शदीद तरीन वईद है, किस की मजाल कि अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ाई का तसव्वुर भी करे, चुनान्चे जब येह आयत नाज़िल हुई तो जिन अस्हाब का सूदी मुआमला था उन्हों ने अपने सूदी मुतालबात छोड़ दिए और सूद लेने देने से तौबा कर ली। लेकिन आज कल के नाम निहाद मुसलमान दानिशवरों का हाल येह है कि वोह तौबा की बजाए आगे से खुद अल्लाह पाक को एलाने जंग कर रहे हैं और सूद की अहमिय्यत व ज़रूरत पर किताबें, आर्टीकल, मज़ामीन और कॉलम लिख रहे हैं।

لَا تَظْلِمُوْنَ وَ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾

ना तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ और ना तुम्हें नुक़्सान हो ① ○

وَ اِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ
وَ اَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾

2:280 और अगर मक़्रूज़ तंगदस्त हो तो उसे आसानी तक मोहलत दो और तुम्हारा क़र्ज़ को सदक़ा कर देना तुम्हारे लिए सब से बेहतर है अगर तुम जान लो ② ○

وَ اتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ
نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ ع ٣٨

2:281 और उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे फिर हर जान को उस की कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा ○

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ
مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَ لْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَ لَا
يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَ لْيُمْلِلِ
الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَ لْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَ لَا يَبْخَسْ

2:282 ऐ ईमान वालो ! जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी क़र्ज़ का लेन देन करो तो उसे लिख लिया करो और तुम्हारे दरमियान किसी लिखने वाले को इन्साफ़ के साथ (मुआहदा) लिखना चाहिए और लिखने वाला लिखने से इन्कार ना करे जैसा कि उसे अल्लाह ने सिखाया है तो उसे लिख देना चाहिए और जिस शख़्स पर हक़ लाज़िम आता है वोह लिखाता जाए और अल्लाह से डरे

उनवान

- तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत देने और क़र्ज़ मुआफ़ कर देने की तरग़ीब
- क़ियामत के हौलनाक दिन से डरने का हुक्म
- उधार का मुआमला लिख लेने का हुक्म
- कातिब इन्साफ़ के साथ लिखे और लिखने से इन्कार ना करे
- मुआहदा इन्साफ़ के साथ लिखना चाहिए

हाशिया

①...येह आयत अगर्चे सूद के हवाले से है लेकिन उमूमी ज़िन्दगी में भी शरीअत और अक़्ल का तक़ाज़ा येह है कि ना ज़ुल्म किया जाए और ना ज़ुल्म बरदाश्त किया जाए यानी ज़ुल्म को ख़त्म करने की कोशिश करनी चाहिए क्यूंकि बाज़ अवक़ात ज़ुल्म को बरदाश्त करना ज़ालिम को मज़ीद जरी (बेबाक) करता है। हां, जहां अफ़्वो दरगुज़र की सूरत बनती हो वहां इसे इख़्तियार किया जाए।

②...मालूम हुवा कि क़र्ज़दार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उस को मोहलत देना या क़र्ज़ का कुछ हिस्सा या पूरा क़र्ज़ा मुआफ़ कर देना अज्रे अज़ीम का सबब है।

مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِیْ عَلَیْهِ الْحَقُّ سَفِیْهًا اَوْ ضَعِیْفًا
اَوْ لَا یَسْتَطِیْعُ اَنْ یُّمِلَّ هُوَ فَلْیُمْلِلْ وَلِیُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ
وَ اسْتَشْهِدُوْا شَهِیْدَیْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ یَكُوْنَا
رَجُلَیْنِ فَرَجُلٌ وَّ امْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ
اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَ لَا
یَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَ لَا تَسْـَٔمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ
صَغِیْرًا اَوْ كَبِیْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ
وَ اَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِیْرُوْنَهَا بَیْنَكُمْ فَلَیْسَ عَلَیْكُمْ

जो उस का रब है और उस हक़ में से कुछ कमी ना करे [1] फिर जिस पर हक़ आता है अगर वोह बे अक़्ल या कमज़ोर हो या लिखवा ना सकता हो तो उस का वली इन्साफ़ के साथ लिखवा दे [2] और अपने मर्दों में से दो गवाह बना लो फिर अगर दो मर्द ना हों तो एक मर्द और दो औरतें उन गवाहों में से (मुन्तख़ब कर लो) जिन्हें तुम पसन्द करो ताकि (अगर) उन में से एक औरत भूले तो दूसरी उसे याद दिला दे, [3] और जब गवाहों को बुलाया जाए तो वोह आने से इन्कार ना करें और क़र्ज़ छोटा हो या बड़ा उसे उस की मुद्दत तक लिखने में उक्ताओ नहीं। येह अल्लाह के नज़दीक ज़ियादा इन्साफ़ की बात है और इस में गवाही ख़ूब ठीक रहेगी और येह इस से क़रीब है कि तुम (बाद में) शक में ना पड़ो (हर मुआ़हदा लिखा करो) [4] मगर येह कि कोई हाथों हाथ सौदा हो जिस का तुम आपस में लेन देन करो तो उस के ना

उ़नवान

- जो लिखने पर क़ादिर ना हो वोह दूसरे से लिखवा ले
- मुआ़हदा लिखने के बाद उस पर गवाह बना लिए जाएं
- छोटे बड़े हर क़र्ज़ को लिख लेना मुफ़ीद है
- हाथों हाथ तिजारत हो तो ना लिखने में ह़रज नहीं

हाशिया

①...जब उधार का कोई मुआ़मला हो, ख़्वाह क़र्ज़ का लेन देन हो या ख़रीदो फ़रोख़्त, रक़म पेहले दी हो और माल बाद में लेना है या माल उधार पर दे दिया और रक़म बाद में वुसूल करनी है, यूंही दुकान या मकान किराए पर लेते हुवे एडवान्स या किराए का मुआ़मला हो, इस त़रह़ की तमाम सूरतों में मुआ़हदा लिख लेना चाहिए। येह हुक्म वाजिब नहीं लेकिन इस पर अ़मल करना बहुत सी तकालीफ़ से बचाता है जबकि हमारे ज़माने में तो इस हुक्म पर अ़मल करना इन्तेहाई अहम हो चुका है।

②...अगर किसी को ख़ुद लिखना नहीं आता जैसे कोई बच्चा है या इन्तेहाई बूढ़ा या नाबीना वग़ैरा है तो वोह दूसरे से लिखवा ले और जिसे लिखने का कहा जाए उसे लिखने से इन्कार नहीं करना चाहिए क्यूंकि येह लिखना लोगों की मदद करना है और लिखने वाले का इस में कोई नुक़्सान भी नहीं तो मुफ़्त का सवाब क्यूं छोड़े।

③...लेन देन का मुआ़हदा लिखने के बाद उस पर गवाह भी बना लेने चाहिएं ताकि ब वक़्ते ज़रूरत काम आएं। गवाह दो मर्द या एक मर्द और दो औरतें होनी चाहिएं।

④...क़र्ज़ के मुआ़मलात लिखने में सुस्ती नहीं करनी चाहिए बल्कि क़र्ज़ छोटा हो या बड़ा, इस की मिक़्दार, नोइ़य्यत और मुद्दत तक लिख लेनी चाहिए इस का एक फ़ाएदा येह है कि अल्लाह पाक के नज़दीक येह बहुत इन्साफ़ की बात है जिस से बन्दों के हुक़ूक़ मेह़फ़ूज़ होते हैं, दूसरा फ़ाएदा येह है कि इस से गवाही ठीक और आसान रहेगी, तीसरा फ़ाएदा येह है कि मुआ़मला साफ़ रहेगा और एक दूसरे के दिल में कदूरत पैदा ना होगी।

جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ
كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ۬ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝۲۸۲

लिखने में तुम पर कोई ह़रज नहीं और जब ख़रीदो फ़रोख़्त करो तो गवाह बना लिया करो और ना किसी लिखने वाले को कोई नुक़्सान पहुंचाया जाए और ना गवाह को (या ना लिखने वाला कोई नुक़्सान पहुंचाए और ना गवाह) और अगर तुम ऐसा करोगे तो येह तुम्हारी ना फ़रमानी होगी और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है① और अल्लाह सब कुछ जानता है ○

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ
فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا
فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝۲۸۳ ع ۳۹ ۷

2:283 और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला ना पाओ तो (क़र्ज़ ख़्वाह के) क़ब्ज़े में गिरवी चीज़ हो और अगर तुम्हें एक दूसरे पर इत़्मीनान हो तो वोह (मक़रूज़) जिसे अमानत दार समझा गया था वोह अपनी अमानत अदा कर दे और अल्लाह से डरे जो उस का रब है और गवाही ना छुपाओ और जो गवाही छुपाएगा तो उस का दिल गुनहगार है और अल्लाह तुम्हारे कामों को ख़ूब जानने वाला है② ○

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْۤ
اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

2:284 जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और जो कुछ तुम्हारे दिल में है अगर तुम उसे ज़ाहिर करो या छुपाओ,

उनवान

- सौदा करते वक़्त गवाह बनाने और कातिब व गवाह को नुक़्सान ना पहुंचाने का हुक्म
- ह़ालते सफ़र में कातिब ना मिले तो कोई चीज़ गिरवी रख दी जाए
- गवाही छुपाने की मुमानेअ़त
- अल्लाह पाक बन्दों के आमाल और पुख़्ता निय्यतों का मुह़ासबा फ़रमाएगा

ह़ाशिया

①...अ़रबी के एतेबार से लफ़्ज़ "يُضَآرَّ" को मारूफ़ और मजहूल दोनों मानों में लिया जा सकता है। मजहूल के एतेबार से माना होगा कि कातिबों और गवाहों को नुक़्सान ना पहुंचाया जाए। मारूफ़ पढ़ने की सूरत में माना येह होगा कि कातिब और गवाह लेन देन करने वालों को नुक़्सान ना पहुंचाएं।

②...आयत नम्बर 282 और 283 पर ग़ौर करें और समझें कि अल्लाह पाक ने हमारे ख़ालिसतन दुन्यवी माली मुआ़मलात में भी हमें कितने वाज़ेह़ हुक्म इरशाद फ़रमाए हैं। इस से मालूम हुवा कि हमारा दीन कामिल है कि इस में अ़क़ाइद व इ़बादात के साथ मुआ़मलात तक का भी बयान है और ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद निहायत अहम हैं कि अल्लाह पाक ने निहायत वज़ाह़त से इन का बयान फ़रमाया है। नीज़ शरीअ़त के अह़काम में बे पनाह ह़िक्मतें हैं और इन में हमारी बहुत ज़ियादा भलाई है।

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾

अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा ① तो जिसे चाहेगा बख़्श देगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ○

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ
كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾

2:285 रसूल उस पर ईमान लाया जो उस के रब की त़रफ़ से उस की त़रफ़ नाज़िल किया गया और मुसलमान भी। सब अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों पर येह केहते हुवे ईमान लाए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ हमारे रब ! हम ने सुना और माना, (हम पर) तेरी मुआ़फ़ी हो और तेरी ही त़रफ़ फिरना है ○

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ
رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ
عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع ۴ ۸

2:286 अल्लाह किसी जान पर उस की त़ाक़त के बराबर ही बोझ डालता है। किसी जान ने जो अच्छा कमाया वोह उसी के लिए और किसी जान ने जो बुरा कमाया उस का वबाल उसी पर है।② ऐ हमारे रब ! अगर हम भूलें या ख़त़ा करें तो हमारी गिरफ़्त ना फ़रमा, ऐ हमारे रब ! और हम पर भारी बोझ ना रख जैसा तू ने हम से पेहले लोगों पर रखा था, ऐ हमारे रब ! और हम पर वोह बोझ ना डाल जिस की हमें त़ाक़त नहीं और हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे और हमें बख़्श दे और हम पर मेहरबानी फ़रमा, तू हमारा मालिक है पस काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा ○

उनवान

- उसूल और ज़रूरियाते ईमान के चार मरातिब
- लोगों को उन की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ ही हुक्म दिया जाता है
- आदमी के अच्छे अ़मल की जज़ा और बुरे अ़मल की सज़ा उसे ही मिलेगी
- मुसलमानों को एक अहम दुआ़ की तल्क़ीन

हाशिया

①...इन्सान के दिल में कई त़रह़ के ख़यालात आते हैं जैसे वस्वसा और अ़ज़्म व इरादा। वस्वसों से दिल को ख़ाली करना इन्सान की क़ुदरत में नहीं, इन पर मुवाख़ज़ा (पूछगछ) नहीं है। दूसरे वोह ख़यालात जिन को इन्सान अपने दिल में जगह देता है और उन को अ़मल में लाने का क़स्द व इरादा करता है उन पर मुवाख़ज़ा होगा और उन्ही का बयान इस आयत में है कि अपने दिलों में मौजूद चीज़ को तुम ज़ाहिर करो या छुपाओ अल्लाह पाक तुम्हारा उन पर मुह़ासबा फ़रमाएगा।

②...येह आयते मुबारका आख़ेरत के सवाब व अ़ज़ाब के बारे में है लेकिन इस त़रह़ का मुआ़मला दुन्या में भी पेश आता रेहता है कि हर आदमी अपनी मेह़नत का फल पाता है, मेह़नत वाले को उस की मेह़नत का सिला मिलता है जबकि सुस्त व काहिल और काम चोर को उस की सुस्ती का अन्जाम देखना पड़ता है।